''राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन''

"A Study of Growing Stress for Career and Adjustment in Students through RPSC Coaching"

A Thesis

Submitted for the Award of

Ph.D. Degree in **Education**

(Faculty of Education)

To the

University of Kota

By

Priyanka Sharma

Under the Supervision of

Dr. Sapna Joshi

Department of Education
J.L.N.T.T. College, Sakatpura, Kota (Raj.)

UNIVERSITY OF KOTA, KOTA (RAJASTHAN)

2019

प्रमाण–पत्र

मुझे यह प्रमाणित करते हुए प्रसन्नता है, कि शोध–प्रबन्ध **''राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन''** शोधार्थी **प्रियंका शर्मा** ने कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, शिक्षा संकाय में पीएच.डी. (शिक्षा) के नियमानुसार निम्नलिखित आवश्यकताओं के साथ मेरे निर्देशन में पूर्ण किया है :–

1. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार कोर्स वर्क पूर्ण किया है।
2. शोधार्थी ने 200 दिन के आवासीय आवश्यकता नियम को पूरा किया है।
3. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार समय–समय पर अपने कार्य का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है।
4. शोधार्थी ने विभाग व संस्था प्रधान के समक्ष अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया है।
5. शोधार्थी का बताई गई शोध पत्रिका में शोध पत्र का प्रकाशन हुआ है।

मैं इस शोध–प्रबन्ध को कोटा विश्वविद्यालय, कोटा की पीएच.डी (शिक्षा) उपाधि प्रदत किये जाने हेतु मूल्यांकनार्थ प्रस्तुत करने की अनुशंसा करती हूँ।

दिनांक : .....

शोध–पर्यवेक्षक
डॉ. सपना जोशी
(शिक्षा विभाग)
जे.एल.एन.टी.टी. कॉलेज,
सकतपुरा, कोटा

ANTI -PLAG I A RI S M C E RTI F ICATE

It is certified that PhD Thesis Title **"A Study of Growing Stress for career and Adjustment in Students through RPSC Coaching"** by **Priyanka Sharma** has been examined by us with following anti-plagiarism tools. We undertake the follows.

A. Thesis has significant new work / knowledge as compared already published or are under consideration to be published else-where. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

B. The work presented is original and own work of the author (i.e'there is no plagiarism). No ideas, processes, results or words of others have been presented as author'sown work.

C. There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.

D. There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.

E, The thesis has been checked using https:www.URKUND.com and found within limits as per HE,C plagiarism Policy and instructions issued lrom time to time.

Name & Signature and seal (Rcscarch Scholar)	Name & Signature and Seal (Research Supervisor)
Place: Kota Date:	Place: Kota Date:

शोध सार

शोधकर्त्री ने ''राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन'' समस्या का चयन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी के विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोधकर्त्री द्वारा आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी के विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के सार्थकता स्तर को ज्ञात करने के लिए परिकल्पना का निर्माण किया गया। शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श के तोर पर कोटा जिले या शैक्षिणिक नगरी के शिक्षक भर्ती की कोचिंग कराने वाले शिक्षण संस्थानों के 600 पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चयन किया गया। शोध कार्य को कोटा जिले तक ही सीमित रखा गया है। शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया हैं। शोध में दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया गया – मानकीकृत उपकरण के रूप में समायोजन स्तर – Dr. A.K.P Sinha & Dr. R.P. Singh द्वारा निर्मित ''एडजेस्ट्मेन्ट इनवेन्ट्री फॉर कॉलेज'' का उपयोग किया गया हैं तथा स्वनिर्मित उपकरण के रूप में ''दबाव प्रमापनी'' एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया हैं। सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण, सहसम्बन्ध गुणांक, प्रतिशत मध्यमान का प्रयोग किया गया है। निष्कर्षतः पाया गया कि आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी के विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है। पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन करने की क्षमता ज्यादा पायी गयी। आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन में नकारात्मक सहसंबंध पाया गया हैं, तथा तृतीय श्रेणी व द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों में धनात्मक सहसंबंध पाया गया हैं। शोधकर्त्री द्वारा कोचिंग संस्था निर्देशकों तथा शिक्षकों के साक्षात्कार से पाया गया कि आरपीएससी कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का मुख्य कारण प्रतिस्पर्द्धा व कम पदों पर भर्ती होना तथा चयन की चिंता को माना हैं।

घोषणा–शोधार्थी

मैं **प्रियंका शर्मा** (शोधार्थी, शिक्षा विभाग) यह घोषणा करती हूँ कि मेरा यह शोध–प्रबन्ध **''राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन''** जो मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है, यह मेरा अपना शोधकार्य है। मैंने यह शोधकार्य डॉ सपना जोशी सह–आचार्य के निर्देशन में पूर्ण किया है। यह मेरा अपना मौलिक कार्य है। मैंने अपने विचारो को अपने शब्दों में प्रस्तुत किया है, और जहाँ दूसरे के विचारों और शब्दों का प्रयोग किया गया है, वे मेरे द्वारा मान्य स्त्रोतों से लिए गये है। अपरिहार्य स्थिति में ली गई ऐसी हर सामग्री का यथा स्थान सन्दर्भ एवं आभार व्यक्त कर दिया गया है, जो कार्य इस शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मैंने विश्वविद्यालय के सभी अकादमिक नियमों का निष्ठा एवं ईमानदारी से पालन किया है, तथा किसी तथ्य को गलत प्रस्तुत नही किया है। मैं समझती हूँ कि मेरे द्वारा किसी भी नियम उल्लंघन पर मेरे खिलाफ प्रशासनिक कार्यवाही की जा सकती है। मेरे खिलाफ जुर्माना भी लगाया जा सकता है, यदि मैंने किसी स्त्रोत से बिना उसका नाम दर्शाये या जिस स्त्रोत से अनुमति की आवश्यकता हो, बिना अनुमति के लिया हो।

दिनांक : .....

शोधार्थी.....
प्रियंका शर्मा

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी प्रियंका शर्मा Rg. No. – RS/1212/16 द्वारा दी गयी उपर्युक्त सभी सूचनाएं मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

दिनांक : .....

शोध–पर्यवेक्षक
डॉ. सपना जोशी
(शिक्षा विभाग)
जे.एल.एन.टी.टी. कॉलेज,
सकतपुरा, कोटा

आभार

वैश्वीकरण व प्रतिस्पर्धा के युग में शिक्षा का स्वरूप बदलता जा रहा है समाज का हर वर्ग अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए चिंतित नजर आता हैं। तेजी से बढ़ती आर्थिक स्थिति एवं वैज्ञानिक तकनीकी ने शिक्षा के महत्व को बढ़ा दिया हैं। वैश्वीकरण के युग में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा ने हर मनुष्य को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है और कम से कम समय में बहुत अधिक पाने की कोशिश करते है और इसकों पूरा करने के लिए दिन–रात मशीन की तरह कार्य करते हैं। इस प्रकार की कार्य शैली ही मनुष्य जीवन की सफलता व प्रगति में बाधक बन जाती हैं। वह दिन–रात तनाव में रहता है और निरन्तर दबाव महसूस करने लगता हैं। कोचिंग विद्यार्थियों में अभिभावकों की अपेक्षाऐं, कमजोर आर्थिक स्थिति, घर जैसा वातावरण न मिलना, आधुनिक चकाचौंध, चयन की चिंता, रेंक का गिरना इत्यादि कारणों से सबसे ज्यादा दबाव बढ़ रहा हैं। वर्तमान समय में छात्रो के सामने अच्छे व्यवसाय को पाने की आकांक्षा, समाज में अच्छी स्थिति तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करना सबसे बडी चुनौती हैं जो उनकों अपने लक्ष्य से वंचित कर देती हैं। इसी विषय के संदर्भ में शोधकर्त्री ने ***''आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन''*** विषय पर शोधकार्य करने का प्रयास किया हैं जिससे छात्रों को दबावग्रस्त होने से बचाया जा सकता है।

मेरे शोध प्रबन्ध के प्रारम्भ में सर्वप्रथम मैं अपनी मार्गदर्शिका **डॉ. सपना जोशी,** जवाहरलाल नेहरू शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सकतपुरा, कोटा का अन्तःकरण से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन, स्नेह सिंचित व्यवहार, अथक प्रयास एवं गहन मौलिक चिंतन के फलस्वरूप ही मेरा प्रस्तुत शोध कार्य पूर्ण हो सका है। जब–जब मैं इस शोध के सुदीर्घ काल में हताश एवं निराश हुई, तब–तब उन्होंने मुझे अपने मातृतुल्य स्नेह सिंचित व्यवहार से दबावग्रस्त होने से बचाया और अपने लक्ष्य की ओर बढने के लिए समय–समय पर अमूल्य समय देकर प्रेरित किया। इसके लिए पुनः मैं उन्हे हृदय के गहनतम भावों से श्रद्धा प्रसून समर्पित करती हूँ।

मैं **प्रो. सुषमा सिंह,** प्राचार्या, जवाहरलाल नेहरू शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके स्नेहपूर्ण एवं व्यवस्थित मार्गदर्शन से इस शोधकार्य को पूर्ण करने में समर्थ हुई हूँ। मैं परम् आदरणीय **प्रो. आर.पी. सनाढ्य,** प्राचार्य, अरिहन्त महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर का अन्तः करण की असीम गहराईयों से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके आधार स्तम्भ भांति असीम मार्गदर्शन एवं स्नेहिल प्रोत्साहन से शोधकार्य पूर्ण हो सका है।

मै परम् सम्मानीय **डॉ. एम.पी. गुप्ता** पूर्व प्राचार्य, प्रशान्ति महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा, **डॉ. श्रीकान्त भारतीय,** एसोसिएट प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा, **डॉ. बी.एस. गौतम** सहायक आचार्य, जवाहरलाल नेहरू शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा एवं महाविद्यालय के समस्त गुरूजनों तथा पुस्तकालयाध्यक्ष का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके उचित मार्गदर्शन एवं सुझावों से शोधकार्य को पूर्ण कर सकी हूँ। मैं **डॉ मूलचन्द मीना** सहायक आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय डबोक, उदयपुर का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होने मुझे समय पर मार्गदर्शित किया। मैं **प्रो. मोहनलाल गौतम** पूर्व प्राचार्य जे.एल.एन.टी.टी. कॉलेज, कोटा, **डॉ. गिरीश शर्मा** प्राचार्य, सर्वोदय टी.टी. कॉलेज, कोटा तथा **डॉ. मधु भारद्वाज** प्राचार्य एस.के. टी.टी. कॉलेज का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होने मुझे समय पर मार्गदर्शित किया।

मैं पूज्यनीय पिताजी **डॉ. मदन मोहन शर्मा,** प्राचार्य, हितकारी महिला शिक्षा महाविद्यालय, कोटा एवं समस्त परिवारजनों का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके असीम वात्सल्य, उत्साहवर्धन एवं आशीर्वाद से इस मंजिल तक पहुँचने में समर्थ हुई हूँ। मैं अपने जीवनसाथी **मनीष गौड़** व पुत्री **वैदांशी शर्मा** को विस्मृत नहीं कर सकती क्योंकि इनके सहयोग एवं शुभाकांक्षा के बिना मैं इस कार्य को सम्पादित करने में समर्थ नहीं होती। मैं अपने पूजनीय ससुर **श्री भुवनेश गौड़** व सासु माँ **श्रीमती पुष्पा गौड़,** देवर **पीयूश गौड़** का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके आशीर्वाद एवं प्रोत्साहन से मैं इस शोध कार्य को सम्पन्न कर पायी हूँ।

इस शोध कार्य को कम्प्यूटर टंकण में लिपिबद्ध व व्यवस्थित करने के लिए **श्री प्रदीप धींग** एवं सहयोगी **संजय खान** व **युवराज सिंह** का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होनें अपना अमूल्य समय देकर टंकण कार्य को सम्पादित किया।

अन्त में मैं अपने महाविद्यालय के समस्त मित्रगणों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनकी प्रेरणा से इस शोधकार्य को निर्विघ्न रूप से समाप्त कर पायी हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य को सम्पूर्ण एकाग्रचितता, लगन, उत्कृष्टता से सम्पन्न करने का प्रयास किया गया है फिर भी शोध कार्य में हुई न्यूनताओं एवं त्रुटियों के लिए मैं विनीत रूप से क्षमाप्रार्थी हूँ।

अंत में मैं पुनः सभी का सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ।

शोधकर्त्री
प्रियंका शर्मा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
	पर्यवेक्षक प्रमाण-पत्र	**I**
	शोधकर्त्री प्रमाण-पत्र	**II**
	साहित्यिक जाँच रिपोर्ट	**III**
	आभार	**IV**
	शब्द संक्षिप्तिकरण	**V**
1.	**प्रथम परिच्छेद - शोध आकल्प**	**1—24**
1.1	प्रस्तावना	1
1.2	शोध समस्या का औचित्य	15
1.3	शोध समस्या कथन	18
1.4	शोध उद्देश्य	18
1.5	शोध परिकल्पना	20
1.6	शोध अध्ययन परिसीमन	21
1.7	पारिभाषिक शब्दावली	21
1.8	शोध परिच्छेदों का गठन	23
1.9	उपसंहार	24
2.	**द्वितीय परिच्छेद - सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन**	**25—55**
2.1	प्रस्तावना	25
2.2	सम्बन्धित साहित्य का महत्व	26
2.3	सम्बन्धित साहित्य के स्त्रोत	27
2.4	शोध से सम्बन्धित अनुसंधान कार्य	28
2.4.1	दबाव से संबन्धित शोधकार्य	28
2.4.2	समायोजन से संबन्धित शोधकार्य	42
2.5	शोध निष्कर्ष	53
2.6	उपसंहार	54

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
3.	**तृतीय परिच्छेद – शोध विधि, उपकरण, न्यादर्श एवं प्रविधि**	**56–84**
3.1	प्रस्तावना	56
3.2	शोध विधि	57
3.3	न्यादर्श	62
3.4	शोध उपकरण	65
3.5	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि	81
3.6	उपसंहार	84
4.	**चतुर्थ परिच्छेद – प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या**	**85–127**
4.1	प्रस्तावना	85
4.2	प्रदत्तों का वर्गीकरण एवं सारणीयन	85
4.3	प्रदत्तों का विश्लेषण	86
4.4	प्रदत्तों के विश्लेषण की आवश्यकता	87
4.5	प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या	87
4.5.1	दबाव प्रमापनी से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण	89
4.5.2	परिकल्पनाओं के आधार पर दबाव स्तर का विश्लेषण	99
4.5.3	समायोजन प्रमापनी से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण	107
4.5.4	परिकल्पनाओं के आधार पर समायोजन का विश्लेषण	115
4.5.5	सहसम्बन्ध गुणांक से प्राप्त विश्लेषण	122
4.5.6	परिकल्पनाओं के आधार पर दबाव व समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक	126
4.6	उपसंहार	127
5.	**पंचम परिच्छेद – शोध निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध हेतु सुझाव**	**128–154**
5.1	प्रस्तावना	128
5.2	शोध समस्या का औचित्य	129
5.3	शोध समस्या कथन	131

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
5.4	शोध उद्देश्य	132
5.5	शोध परिकल्पना	133
5.6	न्यादर्श	134
5.7	शोध अध्ययन परिसीमन	135
5.8	शोध विधि	136
5.9	शोध उपकरण	136
5.10	सांख्यिकीय प्रविधि	137
5.11	पारिभाषिक शब्दावली	139
5.12	निष्कर्ष	141
5.12.1	दबाव से संबंधित निष्कर्ष	141
5.12.2	समायोजन से संबंधित निष्कर्ष	145
5.12.3	सहसंबंध से प्राप्त निष्कर्ष	148
5.12.4	साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष	149
5.13	शैक्षिक निहितार्थ	151
5.14	भावी शोध हेतु सुझाव	152
5.15	उपसंहार	153
	शोध सारांश	**155**
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	**172**
	यू.जी.सी. प्रमाणित जर्नल्स में प्रकाशित शोध–पत्र	
	परिशिष्ट–1	
	परिशिष्ट–2	
	परिशिष्ट–3	
	विशेषज्ञों की सूची	

सारणी सूची

सारणी संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
4.1	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन	90
4.2	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन	92
4.3	आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर के मध्यमान एवं प्रमाव विचलन	94
4.4	आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन	96
4.5	आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन	98
4.6	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति	100
4.7	आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति	102
4.8	आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति	104
4.9	आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति	106
4.10	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के समायोजन का क्षेत्रानुसार मध्यमान एवं प्रमाप विचलन	108
4.11	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन	109

सारणी संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
4.12	आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन	111
4.13	आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन	112
4.14	आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन	114
4.15	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन	115
4.16	आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति	117
4.17	आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति	119
4.18	आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति	121
4.19	आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक	124
4.20	आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक	125

आरेख सूची

आरेख संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
4.1	विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार कुल मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	90
4.2	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	92
4.3	आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	94
4.4	आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	96
4.5	आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	98
4.6	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण	100
4.7	आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण	102
4.8	आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण	104
4.9	आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण	106

आरेख संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
4.10	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के समायोजन का क्षेत्रानुसार मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	108
4.11	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	110
4.12	आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	111
4.13	आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	113
4.14	आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति	114
4.15	आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण	116
4.16	आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण	117
4.17	आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण	119
4.18	आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण	121

शब्द संक्षिप्तिकरण

क्र.सं.	शब्द	अर्थ
1.	RPSC	राजस्थान लोक सेवा आयोग
2.	NET	राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा
3.	SET	राज्य पात्रता परीक्षा
4.	SIERT	राज्य शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान
5.	B.Ed.	शिक्षा स्नातक
6.	RAS	राजस्थान प्रशासनिक सेवा
7.	UG	स्नातक
8.	PG	परास्नातक
9.	AICS	कॉलेज विद्यार्थियों का समायोजन स्तर प्रमापनी
10.	UGC	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
11.	NCTE	राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
12.	QOL	जीवन की गुणवत्ता प्रमापनी

प्रथम परिच्छेद

शोध आकल्प

प्रथम परिच्छेद

शोध आकल्प

1.1 प्रस्तावना :–

आज की प्रतिस्पर्धा के युग में शिक्षा का स्वरूप दिनों–दिन बदलता जा रहा हैं। समाज का हर वर्ग अपने बच्चों की शिक्षा के लिए चिंतित नज़र आता है। तेजी से बढ़ते आर्थिक एवं वैज्ञानिक युग ने शिक्षा के महत्त्व को ओर बढ़ा दिया है। प्रश्न यह भी उठता है कि आज की शिक्षा कितनी सार्थक है? क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति छात्र का समग्र विकास कर उसे राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए समर्पित एवं सुसंस्कारित बना सकती हैं? नहीं, क्योंकि पाठ्यपुस्तकों में हमारे महापुरूषों व पथ प्रणेताओं की जीवनी तथा सांस्कृतिक मूल्यों का अभाव है। वर्तमान समय में शिक्षा एवं शिक्षण संस्थाऐं दोनों ही अपने बुनियादी लक्ष्य से भटककर महज समय बिताने एवं धन कमाने के चक्रव्यूह में इस कदर जकड़कर रह गये है कि चाहकर भी बाहर नहीं निकल पा रहे हैं।

निरर्थक एवं उद्देश्यहीन शिक्षा का बोझा ढ़ोते–ढ़ोते यकीनन छात्र का बोझा बढ़ता जा रहा है किन्तु समय में तेजी से आ रहे बदलाव के कारण, बढ़ती प्रतिस्पर्धा तथा माँ–बाप की अति महत्त्वाकांक्षाओं के रहते बच्चे अपना बचपन और लड़कपन भूलकर सिर्फ किताबी कीड़े बनकर रह गए हैं। आज हर वर्ग के अभिभावकों की सोच शिक्षा के प्रति बलवती होती जा रही है उसी का परिणाम है कि शैक्षणिक नगरी में संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप से शिक्षण संस्थाओं की बाढ़ सी आ गई है। किन्तु फिर भी हर तरफ छात्रों की बढ़ती भीड़ के दबाव के कारण कुछ ही श्रेष्ठ शिक्षण संस्थाऐं विद्यार्थियों का भविष्य निर्माण कर रही हैं। आर्थिक, स्वावलंबन हेतु माता–पिता दोनों को अर्थोपार्जन के लिए घर से बाहर रहना पडता हैं। ऐसे में छात्र विद्यालय से घर आने के बजाय कहीं और भटकते रहते हैं। आज की युवा पीढ़ी को सबसे बड़ा खतरा अत्याधुनिक उपकरण टीवी आदि से जो 24 घंटे चलने वाले कार्यक्रमों, संगीत, रंगीन फोटोग्राफी एवं तकनीकी दृष्टि से नवीन बालपन को बरबस ही अपनी और आकर्षित कर लेता है और नतीजा मानसिक विकृति का होता हैं।

आज का प्रत्येक अभिभावक चाहता है कि उनका बच्चा प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे RPSC/NET/SET आदि में शामिल हो। चाहे वह इन परीक्षाओं के लिए योग्यता नहीं रखता हो। आज का विद्यार्थी लक्ष्य से भटक कर भविष्य निर्माण में चुनौती का सामना करना भूलकर के अल्प अवधि में ही धन कमाने की अति महत्त्वकांक्षा रखता हैं।

वर्तमान में आप, हम और हमारे बालक शिक्षा के संक्रमण काल से गुजर रहे हैं। ऐसे समय में बालक को इस दिशा में आगे बढ़ाने के लिए सभी अभिभावकों के सुझाव व सहयोग भी अपेक्षित हैं। केवल पाठ्यक्रम पूरा करवा देना ही इष्ट नहीं होना चाहिए। विद्या का अंतिम लक्ष्य बालकों का सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण होना चाहिए। शिक्षकों के पास ज्ञान एवं अनुभव की अनमोल निधि होती हैं। जिसका लाभ छात्र को स्कूल में नियमित उपस्थित रहने पर ही प्राप्त हो सकता हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थियों का प्रदर्शन कोचिंग के माध्यम से प्राप्त मार्गदर्शन पर भी बहुत सीमा तक निर्भर रहता हैं। कई बार यह भी देखा गया है कि पढ़ाने की कार्यशैली, पाठ्यक्रम, संचालन आदि सभी पक्ष तो सुदृढ़ होते है, लेकिन अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों के मानसिक तनाव, परेशानी या कठिनाई को नज़र अन्दाज कर दिया जाता हैं। इसका सीधा असर विद्यार्थी की तैयारी एवं अध्ययन पर पड़ता हैं। अतः यह भी देखना चाहिए कि संस्थान विशेष में फेकल्टी एवं प्रबन्धन के अलावा विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक एवं व्यक्तिगत सम्पर्क किस प्रकार का हैं। अध्ययन के अलावा विद्यार्थियों को पारिवारिक माहौल भी जरूरी है क्योंकि इस सम्बल से विद्यार्थी मानसिक सफलता की ओर उन्मुख होते हैं।

कोटा शहर को कोचिंग नगरी कहलाना न्यायोचित होगा। प्रतिवर्ष यहाँ लगभग 1 लाख बच्चे RPSC/NET/SET परीक्षाओं की कोचिंग के लिए आते हैं। जिनका उद्देश्य हर हाल में विद्यार्थी को ज्ञानार्जन कराकर परीक्षा में पास कराना हैं। कोटा की इन कोचिंग संस्थानों में वर्षों के अनुभवी व्याख्याता अपने अनुभव

के आधार पर पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनके भविष्य निर्माण में सहायता कर रहे हैं। अनेक कोचिंग संस्थानों में ऑडियो–विजुअल माध्यम से कोचिंग प्रदान की जाने लगी हैं। अब यहाँ बच्चों को कक्षा 8 से ही उत्कृष्ठ कोचिंग संस्थानो में अच्छे, उच्च शिक्षित व्याख्याताओं द्वारा कोचिंग मिलने लगी है, जो कि अच्छे भविष्य का संकेत हैं। कोचिंग संस्थानों में विद्यार्थियों को तराशकर हीरे का रूप दिया जाता हैं।

लक्ष्य की और सफलतापूर्वक बढ़ने वाले व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य और क्षमताओं का आभास होता है तथा वे अपने व्यक्तित्व से जुड़ी शक्तियों एवं कमजोरियों का आँकलन रखते हैं। अगर आप भी सफल होना चाहते है तो आपको अपने व्यक्तित्व का लेखा–जोखा रखना होगा। आपको अपनी विशिष्ट शक्तियाँ, अवसर एवं रूकावट को ध्यान में रखते हुए सफलता प्राप्त की आकांक्षा रखनी है, सफलता–असफलता की सम्भावनाओं के द्वन्द्व में आपकी निर्णयशक्ति जोखिम का सही आंकलन नहीं कर पाने पर आपको लक्ष्य से अलग कर देती हैं। निश्चित ही सफलता की चाह रखते है तो जोखिम से मानसिक एवं भावात्मक रूप से लगाव रखना होगा अपनी क्षमता, साधन और मनोबल से उसका सामना, जूझने की प्रवृति एवं मानसिकता ही व्यक्ति में जोखिम उठाने की क्षमता पैदा करती हैं। ''गरीब वे नहीं जिनके पास धन नही, गरीब वे है जिनके पास कल्पना या स्वप्न नहीं होते।'' (एक सफल उद्यमी) (मनोवैज्ञानिक आधार विभाग–3, SIERT, उदयपुर)

शिक्षा का उद्देश्य बालक को सभ्य, सुसंस्कृत व नैतिक मूल्यों से युक्त बनाना हैं। शिक्षा उसे अच्छे बुरे का अन्तर बताती है व उसके श्रेष्ठतम अंश को बाहर लाती है अतः बालक अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार उच्च आकांक्षा रखकर उसे पूरा कर सके, शिक्षा इसमें सहयोग करती हैं। किसी भी विद्यार्थी की कोई न कोई अभिलाषा होती है चाहे वह व्यावसायिक हो, चाहे शैक्षणिक जो बालक वास्तविकताओं व आकांक्षाओं में शीघ्र समन्वय स्थापित कर लेते है, वे सफल होते हैं। द्वन्द्व का शिकार होकर असफल एवं अवसादग्रस्त हो जाते है और वे आत्महत्या कर लेते हैं।

सामान्यतः माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर ही छात्र व्यवसाय के चुनाव के प्रति जागरूक हो जाते है वे अपने भविष्य के बारे में सोचने लगते है यदि छात्र अपनी योग्यता क्षमता एवं रूचि के अनुकूल व्यवसाय प्राप्त कर लेता है तो उसे व्यक्तिगत संतुष्टि प्राप्त होती है और असंतुष्टि छात्र के जीवन को कुण्ठाग्रस्त एवं नीरसमय बना देती हैं।

कोटा की इन कोचिंग संस्थानों में वर्षों के अनुभवी व्याख्याता अपने अनुभव के आधार पर पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनके भविष्य निर्माण में सहायता कर रहे है। अनेक कोचिंग संस्थानों में ऑडियो–विजुअल माध्यम से कोंचिग प्रदान की जाने लगी हैं। क्षेत्र कोई भी हो सकता है जो मेरे स्वप्न और आकांक्षाओं से मेल खाता है तो निश्चित ही बेहतर अवसर की तलाश में मदद करेगा तथा दृढ़ संकल्प एवं प्रयास के तालमेल से खोजे गये अवसरों का भरपूर उपयोग सम्भव हो सकेगा। आपको अपनी मनोवृति एवं अभिलाषा को टटोलना होगा तथा यह देखना होगा कि कहीं जाने –अनजानें में आप में सफलता से विमुख होने की प्रवृति तो विकसित नहीं हो गयी हैं। आपकों इनसे स्वयं को दूर रखना होगा और सफलता के प्रति अपनी आकांक्षा को तीव्रतम बनाना होगा। आपको अपनी कल्पनाओं, विचारों, व्यवहार एवं प्रयासों को एक नई दिशा देने के लिए एक योजनाबद्ध तरीके से क्रियाशील होना।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली निश्चित रूप से प्रभावी और श्रेष्ठ हैं। किन्तु ऐसे विद्यार्थी जो इस शिक्षा प्रणाली में किन्हीं कारणों से असफल हो रहें हैं। और मिलने वाली असफलता से विद्यार्थी दबाव महसूस करने लगते हैं। जो ना कि उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता हैं। बल्कि सामाजिक जीवन में उन्हें आत्मग्लानि की अनुभूति होती हैं। जिससे विद्यार्थी पुनः अपने आप को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में अक्षमता का अनुभव करता हैं। और पढ़ाई से जी चुराने लगता हैं। शिक्षा उसके लिए बोझ बनने लगती हैं। और किसी न किसी रूप में वह शिक्षा से कटता जाता हैं।

आज वर्तमान शैक्षिक परिवेश में बदलाव तीव्र गति से होता जा रहा हैं। क्योंकि वैश्वीकरण के युग में शैक्षिक परिवेश का बदलना स्वभाविक ही हैं। शैक्षिक परिवेश में बदलाव की दृष्टि से एवं राष्ट्र की उन्नति की दृष्टि से उच्च शिक्षा स्तर पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राष्टीय अध्यापक शिक्षा परिषद् तथा राज्य सरकार एवं कॉलेज शिक्षा निदेशालय की और से बच्चों के भविष्य निर्माण एवं विद्यालय शिक्षा के स्तर में गुणात्मक सुधार हेतु प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के विचार किया गया हैं। इस दृष्टि से प्रशिक्षण हेतु नवीन महाविद्यालयों को मान्यताऐं दी गई ताकि वे अच्छे प्रशिक्षण तैयार कर सके जिसके माध्यम से विद्यालय शिक्षा में मूलभूतः सुधार कर सके महाविद्यालयों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होनें से अच्छे प्रशिक्षण के बजाय शिक्षण संस्थाओं ने अपने कमायी का जरिया बनाकर महाविद्यालयों को शिक्षण की दुकान तक सीमित कर दिया। आज के विद्यार्थी भी सीधे घर बैठे ही डिग्री प्राप्त करना चाहता हैं। इसीलिये वह पैसे देकर प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र प्राप्त कर लेता है और कोचिंग व गाईड को पढ़कर आर.पी.एस.सी. शिक्षक भर्ती परीक्षा को पास कर सरकारी शिक्षक बन जाता हैं। अब बात यह है कि ऐसे प्रशिक्षणार्थी कैसे शिक्षण कार्य को सफल बना सकेगें? जिनको खुद को नही मालूम है कि शिक्षण और प्रशिक्षण क्या होता हैं? इस प्रकार के प्रशिक्षणार्थियों की वज़ह से जिज्ञासु और ईमानदार प्रशिक्षणार्थियों को नुकसान उठाना पड़ता हैं। वह हमेशा परिणाम में पीछे रह जाते हैं। क्योंकि पैसे देने वाले तो पैसे देकर ज्यादा अंक प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रतिस्पर्धा बढ़ने से विद्यार्थी अपने आपमें दबाव में आत्मग्लानि महसूस करने लगता हैं। और अपने केरियर को समाप्त कर लेता हैं। माता–पिता भी बच्चों में केरियर के बढ़ते दबाव की प्रतिस्पर्धा के कारण स्वयं भी दबाव महसूस करते हैं। इसका सीधा असर बालक और बालिकाओं के केरियर पर ही पड़ रहा हैं। माता–पिता की आकांक्षाऐं आभिलषाएँ और उनकी उम्मीदें बढ़ती ही जा रहीं हैं कि मेरा बालक पढ़–लिखकर अच्छी जॉब लगेगा दूसरी और वह बालक या बालिका अपने केरियर के बढ़ते दबाव व माता–पिता की उम्मीदों का दबाव नहीं झेल पाते हैं। इस प्रकार की शिक्षा व हताशा से उन्हें असफलताऐं प्राप्त हो रहीं हैं।

दबाव का सम्प्रत्यय :–

दबाव का सम्प्रत्यय मनोविज्ञान में भौतिक विज्ञान से लिया गया है। 19वीं सदी में दबाव उस बल को कहते हैं जो भौतिक वस्तु या व्यक्ति पर बाह्य शक्ति द्वारा डाला जाता है। प्रतिबल का व्यक्ति तथा वस्तु इसलिए विरोध करते हैं ताकि वे अपनी मूल अवस्था में बने रहे है। बाद में मनोविज्ञान के क्षेत्र में दबाव शब्द का प्रयोग व्यक्ति की शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं में आने वाले परिवर्तनों के कारण उसके ऊपर पड़ने वाले दबाव के लिए प्रयोग किया जाने लगा। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में नित्य प्रतिदिन किसी न किसी प्रकार के प्रतिबलों का सामना करना पड़ता है। लम्बे समय तक चलने वाला दबाव व्यक्ति के स्वास्थ्य को हानि पहुंचा सकता है अतः हमें सतर्क रहकर दबाव का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिये।

दबाव क्या है?

दबाव के कारण व्यक्ति अपनी अभियोग्यता तथा क्षमताओं के अनुरूप निष्पादन नहीं कर पाता है। फ्रायड भी कहते हैं कि Source of abnormality is stress लेकिन दबाव सभी स्थितियों में हानिकारक नहीं होता है कई परिस्थितियों में इसका सकारात्मक येागदान भी रहता है जैसे परीक्षा में भाग लेने के लिए विद्यार्थी तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए खिलाड़ी दबाव के कारण कुछ दिनों पूर्व ही कठिन परिश्रम करके अच्छा प्रदर्शन करने में सफलता प्राप्त करते हैं। जब किसी खतरे अथवा भय की आशंका होती है तो हमारी नाड़ी की गति तथा श्वास लेने की गति अचानक बढ़ जाती है। मांसपेशियों में तनाव उत्पन्न हो जाता है तथा ज्ञानेन्द्रियाँ तेजी से कार्य करने लगती है। इसीलिए कहा गया है कि "Stress is good servant but a bad master."

दबाव की परिभाषा :–

"There is no escape fram stress in modern life. We need to find ways of using stress in productive way leducing dysfunctional stress and dealing effectively with it."

- Vdai Pareek (1988)

प्रोफेसर पेन्टोंजी (1999) लिखते हैं कि *''वर्तमान सदी 'चिंता एवं तनाव' की सदी कही जाती है, क्योंकि वर्तमान विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह कृषि उद्योग, वाणिज्य, व्यापार, प्रशासन हो या शिक्षा संगठन हो, दबावों–तनावों का दबदबा विद्यमान है। ज्यों–ज्यों प्रगति करते हैं त्यों–त्यों हमारे जीवन में स्ट्रैस बढ़ता जाता है।''*

प्रोफेसर बेरोन (1983) लिखते हैं कि *''हमारे जीवन में शायद ही ऐसी घड़ी आती हो, जहाँ शांति एवं राहत की अनुभूति हो। प्रत्येक जीवन क्षेत्र में ऐसी ही घटनाएं, घटित होती है, जो हमारे स्वास्थ्य, निष्पादन, संतुलन एवं कार्य शैली को प्रभावित करती है – तनाव युक्त परिस्थितियों से हमारी योग्यता एवं उपलब्ध साधन कुंठित हो जाते हैं तथा व्यक्ति को भय चिंता, खिन्नता, दबाव, आक्रोश की अनुभूति होती है।''*

प्रसिद्ध विद्वान **हेन्स सेले (1956)** कहते हैं कि *''प्रतिकूल दशाओं में व्यक्ति शारीरिक–मानसिक दृष्टियों से विशाद–संकुचन को प्राप्त होता है''* अर्थात् तीन अवस्थाएँ आती है –

1. पहली अवस्था में व्यक्ति आश्चर्य एवं सावधान की स्थिति में होता है।
2. दूसरी अवस्था में व्यक्ति प्रतिरोध प्रकट करने लगता है।
3. तीसरी अवस्था में थककर निपटने की कोशिश करता है।

दबाव शब्द का उपयोग पहली बार **हेन्स सेले (1956)** के जीवन विज्ञानों में किया। उनके अनुसार *''इस शब्द की उत्पत्ति **लेटिन शब्द स्टिनजर** से हुई है (17वीं सदी में) जिसका शाब्दिक अर्थ है – कठिनाइयाँ तनाव, दबाव, विपदा या*

संघर्ष। 18 वीं शताब्दी व 19वीं शताब्दी में इसका अर्थ बल, दबाव या खिंचाव लिया गया। भौतिकी तथा यांत्रिकी में इसका अर्थ है फोर्स या प्रेशर जो किसी व्यक्ति या वस्तु पर दबाने से लगाया जाता है।''

मनोवैज्ञानिक, शास्त्र में इसका अभिप्राय **''स्ट्रेस''** से है जिसे कि आसानी से अनुकूलित नहीं कर पाता है। मनोविज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान में इसका उपयोग उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। कतिपय अवधारणाएँ कल्पित की जा रही है –

मेसोन (1975) के अनुसार – इसकी कोई स्पष्ट अवधारणा नहीं है, फिर भी इसका अभिप्राय चार भिन्न दृष्टि से है :–

(1) उद्दीपन या बाह्य प्रभाव एवं दबाव जो व्यक्ति पर पड़ता है।

(2) दबाववश व्यक्ति में प्रत्युत्तर के रूप में शारीरिक परिवर्तन एवं कार्य होते हैं।

(3) अन्तःक्रिया के रूप में बाह्य दबाव एवं व्यक्ति विरोध।

(4) एक व्यापक खींचाव, जिसमें ये तीनों तत्व विद्यमान होते हैं।

अग्रवाल (1979) का मत हैं कि इसका स्पष्ट सम्प्रत्यय इसलिए नहीं हैं कि अलग–अलग विधाओं में इसका अलग–अलग अर्थ है। इस भ्रम को दूर करने हेतु ये तीन बातें अवलोकनीय है :–

(1) किस सन्दर्भ में इसका उपयोग किया जा रहा है।

(2) शोध विषय तथा दबाव कारकों की उद्दीपन स्थितियों की प्रकृति।

(3) दबाव कारकों के प्रति विरोधक प्रत्युत्तर ध्यान दें कि शोधकर्ता कार्य सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक – व्यवहारिक लक्षणों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है।

अस्थाना (1983) के अनुसार, मनोवैज्ञानिक जो विविध विचारों के है, तीन तरह की परिभाषाएँ दी है :–

(1) उद्दीपन उन्मुखी

(2) अनुक्रिया उन्मुखी

(3) मनोदैहिक – गतिकी उन्मुखी

(1) उद्दीपन उन्मुखी उपागम :– इसे **स्टिम्युलस ओरिएन्टेड एप्रोच** कहा है जिसमें दबाव को बाह्य माना जाता है। यह बल व्यक्ति पर पड़ता है। व्यक्ति इसे बल या खतरे के रूप में देखता है। यही परिप्रेक्ष्य स्ट्रैस है। इसमें व्यक्ति की साम्यावस्था अव्यवस्थित हो जाती है।

(2) अनुक्रिया उन्मुखी उपागम :– इस दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्ति अपने वातावरणीय प्रतिकूलताओं को किस दृष्टि से देखता है तथा उसका कौन सा अर्थ लगाकर प्रत्युत्तर देने की चेष्टा करता है। तदनुसार व्यक्ति प्रतिक्रिया करता है – आशंका, अनुभव, असर, अनुक्रियाएँ।

(3) मनोगतिकी उपागम :– यह उपागम दबाव को बाह्य एवं आन्तरिक दोनों को मिलाकर देखता है – बाह्य स्थितियाँ तथा व्यक्तित्व प्रभाव/आशंकाओं से प्रभावित व्यक्ति प्रतिक्रियाएं करते हैं – निपटते हैं – समाधान करते हैं या हतप्रभ हो जाते हैं अर्थात् व्यक्ति कैसे अनुभव करता है उस प्रसंग में इसे **हेन्स सेले का सामान्य अनुकूलन सिन्ड्रोम** कहते हैं।

पेन्टोजी (1999) लिखते हैं कि जीवन के तीन ऐसे सेक्टर है जहाँ दबाव ज्यादा होता है।

1. व्यवसाय, कार्य या संगठन
2. सामाजिक क्षेत्र
3. मनोकारक क्षेत्र

मूलतः व्यक्ति जहाँ जिस जगह पर कार्य या सेवा करता है वहाँ के संगठन एवं व्यवस्थापन से अर्थात् कार्यदशाऐं, कार्य मात्रा, कार्य क्षमता, कार्य सहयोग, कार्य नीतियां, कार्य व्यवहार में अनेक प्रतिकूल स्थितियाँ आती है।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशियल स्ट्रैस (1994) *''व्यक्ति के सामने किसी परिस्थिति की मांग बढ़ जाती है और उसकी क्षमता उस मांग का मुकाबला करती है तब दबाव उत्पन्न होता है। यही कभी नकारात्मक रूप भी ले सकता है। इसलिए दबाव भयावह स्थिति उत्पन्न कर सकता है।''*

न्यू कॉम्पेक्ट ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में दबाव को इस प्रकार कहा गया है *''A feelings of stress caused by the need to do something pressure of work.''*

इसी प्रकार **केम्ब्रिज इंटरनेशनल डिक्शनरी** ने दबाव को स्पष्ट करते हुए लिखा है – *''Pressure is the things that happen to a person which can make them feel anxious and unhappy.''*

C.G. Marris (1979) के अनुसार, *''दबाव एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक प्रतिबल अवस्था है, जिसमें व्यक्ति यह अनुभव करता है कि उसे एक विशिष्ट भावना के अनुसार रहना, पहुंचना या व्यवहार करना है अथवा उसे तीव्र गति से हो रहे परिवर्तनों के साथ अनुकूलन करता है।''*

Coleman J.C. (1981) ने दबाव की सार्थकता को स्पष्ट करते हुए लिखा है – *''In general, pressure force a person to speed up intensity or change the direction of goal oriented behavirours.''*

सिंगमंड फ्रॉयड के अनुसार, *''मनुष्य दुःखद, अप्रसन्नकारी और पीड़ादायक विचारों को दबा देता है क्योंकि उसको स्मृति में रखना दुख, तनाव और कुण्ठा को जन्म देता है, जिससे विस्मृति संभव है। अतः स्पष्ट है कि विस्मृति के अनेकानेक कारणों में दबाव भी एक कारण है। दबाव बाह्य और अन्तस्थ दोनों प्रकार का हो सकता है।''*

International Encyclopedia Educational Research by Tortsom Houson (1994), *''व्यक्ति के सामने किसी परिस्थिति की मांग बढ़ जाती है और उसकी दक्षता इस माँग का मुकाबला करती है तब दबाव उत्पन्न होता है, यह एक बहुआयामी पक्ष है।''*

मेक ग्रेक (1976) के अनुसार, *''वे वातावरणीय स्थितियां जो व्यक्ति की कार्य योग्यताओं तथा कार्य संसाधनों से अधिक एवं अनावश्यक मांग करके भय या आशंकाएं प्रस्तुत करती है, दबाव या स्ट्रैस कहलाता है।''*

प्रोफेसर बेरोन (1989) लिखते हैं कि, *''दबाव आधुनिक जीवन का सत्य तथ्य है क्योंकि आधुनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तनाव खिचांव विद्यमान रहते हैं। उनके अनुसार निम्न दबाव कारकीय स्थितियाँ/प्रभाव है।''*

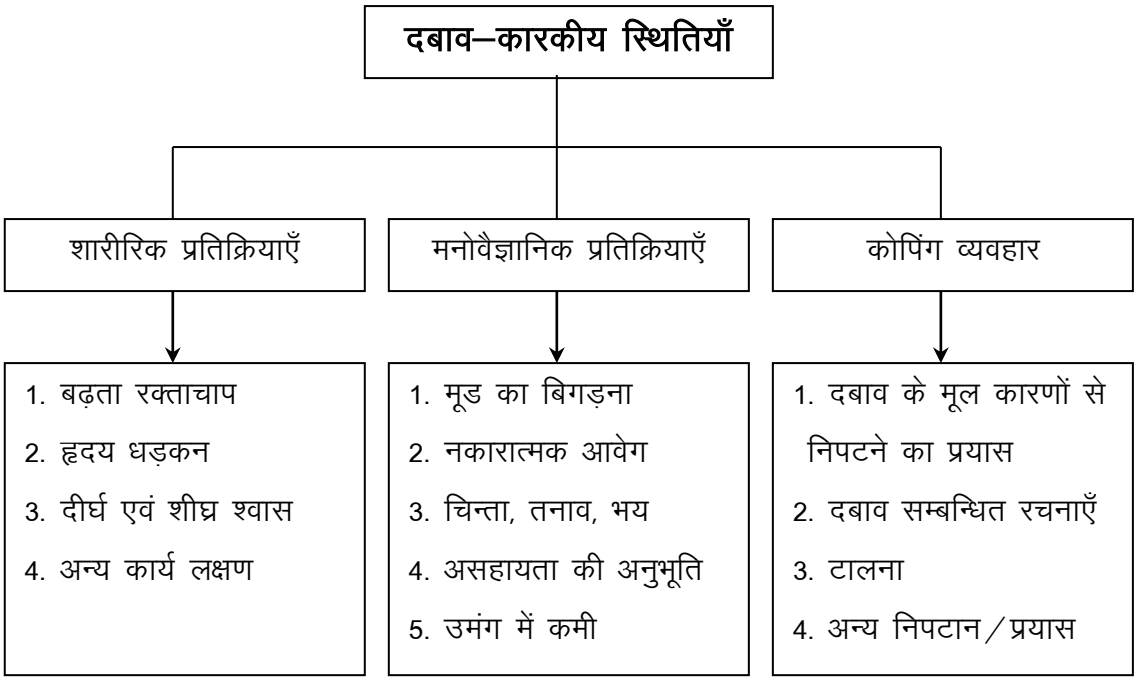

निष्कर्ष रूप में हम दबावों के प्रभावों को इस प्रकार कह सकते हैं कि दबावभरी स्थितियों में व्यक्ति :–

1. दबा–दबा सा रहता है।
2. कार्यक्षमता में ह्रास आ जाता है।
3. दूसरों के प्रति संवेदनशीलता में कमी सी आ जाती है।

4. व्यवहार एवं सोच में बदलाव सा आ जाता है।

5. निष्पादन में कमी सी आ जाती है।

6. विनिवृत्त प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी।

7. सहभागिता में कमी।

8. तनाव, निराशा, चिन्ता, अकर्मण्यता, आक्रोश असहिष्णुता, चिड़–चिड़ाहट में बढ़ोत्तरी।

9. लगाव–लगन–उमंग पर चोट।

10. वैचारिक भिन्नता में टकराहट।

दबाव के कारण :–

आज के वैज्ञानिक औद्योगिक युग में शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, सेवा आदि क्षेत्रों में नित्य प्रति प्रतिकूल स्थितियों का प्रादुर्भाव हो रहा है जिनसे सम्बन्धित व्यक्ति/कर्मी प्रभावित हो जाते हैं। यह बात शिक्षा क्षेत्र में भी प्रशासकों, अध्यापकों, शिक्षार्थियों में भी पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलती है।

अतः प्रश्न उठता है कि दबावों–तनावों के मुख्य कारण क्या है? दबावों के कारणों को मुख्यतः दो प्रमुख भागों में बांटा सकते हैः–

1. संगठनात्मक कारण

2. व्यक्तिगत कारण

संगठन से उत्पन्न स्थितियों से जो तनाव–खिंचाव आ जाता है उसे संगठनात्मक कारक कहते हैं, जबकि, व्यक्ति की अकर्मण्यता–असहिष्णुता, अभद्रता से जो दबाव उभरकर आते हैं, उन्हें व्यक्तिगत कारक कहते हैं।

प्रस्तुत शोध में व्यक्तिगत कारकों पर ही ध्यान रखा गया है। दबावों के प्रमुख व्यक्तिगत कारण निम्न हो सकते हैं :–

वर्तमान में सबसें ज्यादा बेरोजगारी बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की बढ़ रही है। एक और जहाँ हर वर्ष 1 से 1.50 लाख बच्चे बी.एड. का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहें हैं। वहीं दूसरी और सरकार की तरफ से शिक्षक भर्ती परीक्षा के नाम पर मात्र दस हजार वेकेंसी ही निकाली जाती हैं। वह भी साल–दो साल में तब तक प्रशिक्षणार्थी कोचिंग में लाखों रूपऐं खर्च कर देते हैं। ऐसी स्थिति में दस हजार वेकेंसी मात्र उनके लिए ऊँट के मुँह में जीरा के बराबर होती हैं। जिससे

प्रशिक्षणार्थियों में केरियर को लेकर हमेशा असमंजस की स्थिति बनीं रहती हैं। जिससे उनका मानसिक व शारीरिक सन्तुलन भी सही नहीं रहता हैं। वे घोर निराशावादी व हताश होकर अपने गाँव की और वापिस चले जाते हैं। केरियर को लेकर बढ़ते दबाव से प्रशिक्षणार्थी समाज में भी अपने को असहाय निसंकोच एवं हीन समझने लगता हैं। वह कही उत्सव, शादी समारोह पिकनिक या वार्षिक उत्सव में भी जाने से कतराने लगता हैं। वह समाज के लोगों के साथ कोचिंग में छात्रों के साथ अपने–आप को समायोजित नहीं कर पाता हैं। कोटा शैक्षणिक नगरी के नाम से विख़्यात होनें से ग्रामीण क्षेत्रों के लोग लाखों की संख्या में कोटा शहर में कोचिंग करने आते हैं और यहाँ के विद्यालयी, कोचिंग शिक्षण कार्य सम्बन्धी व आवासीय समस्या से अपने आपको असमायोजित महसूस करते हैं।

समायोजन का सम्प्रत्यय :–

बालक का विकास एवं अभिवृद्वि उसकी परिस्थितियों एवं वातावरण पर निर्भर करती हैं। उसका व्यवहार व अनुक्रिया भी इसी से प्रभावित होती हैं। बालक अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वातावरण व परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करने का प्रयास करता हैं। जब वह परिस्थितियों से अनुकूलन कर लेता हैं तो वह समायोजित हो जाता हैं कभी–कभी नहीं कर पाता हैं तो वह तनावग्रस्त हो जाता हैं। यदि बालक वातावरण व परिस्थितियों के प्रति अनुकूलन सही तरीके से कर लेता हैं तो आवश्यकताओं की पूर्ति शीघ्र ही कर लेता हैं अन्यथा वह नहीं कर पाता। बालक फिर भी अपनी बुद्वि एवं सामर्थ्य की सहायता से नई समस्याओं, आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित कर लेता हैं और सामंजस्य की प्रक्रिया को ही समायोजन कहते हैं।

समायोजन क्या हैं? बालक समायोजन किस प्रकार करता हैं? समायोजन की बालक के विकास में क्या आवश्यकता हैं? इत्यादि अवधारणाओं को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित किया हैं –

आइजनेक के अनुसार (अरूण कुमार 2001) – ''समायोजन वह अवस्था हैं जिसमें एक तरफ व्यक्ति की आवश्यकताऐं बढती हैं तो दूसरी तरफ वातावरण के अधिकारों में पूर्ण संतुष्टि होती हैं अथवा समायोजन वह प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा इन दोनों अवस्थाओं में सन्तोषजनक तालमेल होता हैं।''

बोरिंग व अन्य के अनुसार (1992) – समायोजन वह प्रक्रिया हैं जिसके माध्यम से एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं एवं इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के साथ सन्तुलन बनाए रखता हैं अतः कहा जा सकता हैं कि समायोजन व्यक्ति की आंतरिक और बाह्य आवश्यकताओं की पूर्ति एवं उनमें सामंजस्य स्थापित करने का संतोषजनक माध्यम हैं यह चाहे व्यक्ति के सामान्य क्षेत्र में हो या उसके विशिष्ट क्षेत्र में। समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया हैं जिसमें कोई व्यक्ति अपनी इच्छाओं आवश्यकताओं तथा वातावरण के बीच सन्तुलन स्थापित करने का प्रयास करता हैं। समायोजन मानव जीवन में निरन्तर चलने वाली क्रियाशील प्रक्रिया हैं जो बालक को सामाजिक, मानसिक, संवेगात्मक, शारीरिक, बौद्विक व विकास की अन्य क्रियाओं के साथ सामंजस्य करना सीखाती हैं। जब बालक इन परिस्थितियों व वातावरण के बीच समायोजन नहीं कर पाता हैं तो वह दबावग्रस्त, तनाव व कुण्ठाग्रस्त हो जाता हैं।

इस दृष्टि से शोधकर्त्री ने शोध हेतु कोटा शहर का चुनाव किया है क्योंकि कोटा में आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले हजारों विद्यार्थी रहते हैं। और उनमें आगे बढ़ने की आपसी प्रतिस्पर्धा रहती हैं। वे अपने केरियर को लेकर चिंतित रहते हैं। इस समस्या से अभिभूत होकर शोधकर्त्री द्वारा इस समस्या का चयन किया गया हैं।

1.2 शोध समस्या का औचित्य :–

इस समस्या को लेने के पीछे यह मन्तव्य रहा है कि शिक्षा के प्रतिस्पर्धात्मक युग में बी.एड़ करने के उपरान्त भी कोचिंग में आर.पी.एस.सी. की तैयारी करते है और आर.पी.एस.सी. कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में निरन्तर

दबाव व असन्तोष बढ़ता जाता हैं। निरन्तर आ रहे बदलाव के कारण बढ़ती प्रतिस्पर्धा तथा अभिभावकों की बच्चों के प्रति अति महत्त्वकांक्षाओं के कारण विद्यार्थी अध्ययनरत् रहते हुए लगातार दबाव व असमायोजन अनुभव करते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी बी.एड. की ट्रेनिंग पूरी करने के बाद पूरे जोश उत्साह लगन एवं उमंग के साथ शिक्षक भर्ती प्रतिस्पर्धात्मक युग में प्रवेश करता हैं। लेकिन आर.पी.एस.सी के बढ़ते भ्रष्टाचार एवं शिक्षक भर्ती घोटालों के कारण वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने से वर्जित रह जाते हैं। वह अपनी समस्याओं का सामना करने की बजाय निराश होकर अपने जीवन या केरियर को समाप्त कर लेता हैं।

1. **नवीनता की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** राजस्थान में अभी तक इस ज्वलन्त समस्या पर अधिस्नातक स्तर पर कोई विशेष कार्य नहीं हुआ हैं। यह समस्या प्रत्येक क्षण में छात्रों को अपने आगोश में लेकर अपनी इहलीला को समाप्त करती जा रही हैं। इस आधार पर यदि इस सन्दर्भः में गहन विचार विमर्श नहीं किया गया तो सैंकड़ो माता–पिता के आँखो के तारे अन्धकारमय गगन में विलुप्त हो जाऐंगें।
2. **सामाजिक दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** युवावस्था में प्रशिक्षणार्थियों पर सबसे ज्यादा प्रभाव समाज का पड़ता हैं। प्रशिक्षणार्थीं को समाज के वातावरण के साथ समायोजन करने पर ही अपने जीवन में सफलता मिलती हैं। प्रशिक्षणार्थीं असफल होनें पर तथा समाज द्वारा उपेक्षित होनें के डर से दबाव से ग्रसित होकर वे स्वयं को समाप्त कर लेते हैं। उनमें आत्मविश्वास की कमी हो जाती हैं। वे स्वयं को हीन दृष्टि से देखने लग जाते हैं। इस कारण से यह सामाजिक स्तर पर उभर कर आयीं महत्त्वपूर्ण समस्या हैं। यदि इसकी उत्पति के कारणों का सही पता नहीं लगा पाये तो हम भारत की युवा पीढ़ी को काल–कलवित कर देगें।
3. **अभिभावकों की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** वर्तमान समय में व्यक्तियों की आवश्यकताऐं आकांक्षाऐं और इच्छाऐं तीव्र गति से बढ़ती जा रहीं हैं। लेकिन जब वह इनको पूरा नहीं कर पाती है या असफल

हो जाते हैं तो वह दबावग्रस्त महसूस करता हैं जिसका सीधा असर उसकी जीवनशैली पर पड़ता हैं। इस दृष्टि से यह समस्या आज की ज्वलन्त समस्या बन गयीं हैं। इसीलिये शोघकर्त्री शोध हेतु उत्साहित हुई हैं।

4. **निदेशकों की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** आवश्यकताओं और अभिलाषाओं के इस प्रतियोगिता व भौतिकता पूर्ण जीवन में वही विद्यार्थी पद प्रतिष्ठा, और पैसा प्राप्त करता है जो दृढ़ संकल्प होकर, आशान्वित होकर परिश्रम करता हैं वरन् सब कुछ दिवास्वप्न बन कर रह जाता हैं। वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षा जगत् प्रतियोगिता पूर्ण है और किसी भी विद्यार्थीं के लिए किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में सफल होना सरल नहीं किन्तु असम्भव भी नहीं। प्रतियोगिता के इस दौर में सिर्फ पुस्तकें पढ़ कर ही सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती उसके लिए आवश्यक है सघन तैयारी, अच्छे अध्यापक, नियमित अभ्यास और अच्छे नोट्स की और यह सब कुछ प्रदान करते हैं, कोचिंग संस्थान – काव्य क्लासेज, साकार क्लासेज, कोटा क्लासेज, सोनी क्लासेज, संकल्प क्लासेज, आस क्लासेज, साइंस क्लासेज तथा रेजोनेन्स केरियर इंस्टीट्यूट। इस दृष्टि से भी यह समस्या महत्त्वपूर्ण हैं।

5. **अध्यापकों की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** आज का युवा ऐसी शक्ति है जिस पर किसी भी देश का भविष्य निर्धारित होता हैं। यह बेहद सकारात्मक पहलु है कि हमारा अधिकांश युवावर्ग दिशाहीन नहीं हैं लेकिन कुछ मुट्ठीभर काली भेड़े पूरे युवावर्ग को बदनाम कर रही है। जरूरत है ऐसे युवावर्ग को सही रास्ते पर लाने की। इस कार्य को सफलतापूर्वक अध्यापक ही कर सकता है। जो अपने अमृतरूपी ज्ञान संयम व मधुर वाणी, कोमल व्यवहार, अनुभव, अच्छा मार्गदर्शन एवं आशीष वचनों से युवाओं या विद्यार्थियों में इतना जोश उत्साह भरता है जिससे प्रेरित होकर विद्यार्थीं सफलता के मार्ग की और अग्रसर होते है। अध्यापकों की दृष्टि से भी इस समस्या का अध्ययन उचित समझा गया हैं।

6. **प्रशिक्षणार्थियों की दृष्टि से भी समस्या का औचित्य :–** आज के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थी संसार की बढ़ती हुई आधुनिकता, भौतिकता व व्यावसायिक चकाचौंध से प्रभावित होकर कम से कम समय में अधिक से अधिक पाने की चाह, गलाकाट प्रतियोगिता, सहनशीलता की कमी, निरन्तर बढ़ते दबाव, स्टेट्स सिंबल के चलते भग्नाशा शिकार बन रहे हैं। इसी कारण शोधकर्त्री द्वारा इस समस्या के कारणों का पता लगाने हेतु समस्या का चयन किया गया। इस दृष्टि से समस्या औचित्य सार्थक सिद्ध होता हैं। ''जीवन को देखने का ढंग ही जीवन का आधार बन सकता हैं।''

1.3 शोध समस्या कथन :–

''राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन।''

"A Study of Growing Stress for Career and Adjustment in Students through RPSC Coaching."

शोधकर्त्री द्वारा आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन देखा जाता हैं। अतः शोधकर्त्री की इस समस्या के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई इसलिये, शोधकर्त्री द्वारा इस समस्या का चयन किया गया।

1.4 शोध उद्देश्य :–

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उद्देश्यों का निर्धारण करना पड़ता है। बिना उद्देश्यों के व्यक्ति अपनी मंजिल तक नही पहुँच पाता हैं।

बी.डी. भाटिया के अनुसार :– ''उद्देश्यहीन व्यक्ति उसी प्रकार भटकता रहता है जैसें लहरों के थपेड़ो के बीच पतवार विहीन नौका।''

इसलिये शोधकर्त्री द्वारा अपने शोध कार्य को पूरा करने के लिये शोध उद्देश्यों का निर्माण किया गया हैं–

1. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।
2. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।
3. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।
4. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।
5. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।
6. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
7. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
8. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
9. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
10. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
11. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
12. आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

1.5 शोध परिकल्पना :–

शोधकर्त्री द्वारा शोधकार्य को समुचित ढ़ग से पूर्ण करने के लिए परिकल्पना का निर्माण किया गया है जो इस प्रकार है –

1. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।
2. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।
3. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।
4. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।
6. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
8. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
9. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
10. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
11. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं।
12. आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं।

1.6 शोध अध्ययन परिसीमन :–

शोध कार्य की समय, शक्ति एवं साधनों की सीमाओं को देखते हुए शोध कार्य कोटा जिले तक ही सीमित रहेगा। जिससे समस्या का परिसीमन अवश्य हो जाता हैं। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा अपने अध्ययन की सीमाओं का निर्धारण निम्न प्रकार से किया गया है :–

क्र.स.	समस्या का परिसीमान	
1.	क्षेत्रीय स्तर	कोटा जिला
2.	कार्यक्षेत्र	आर.पी.एस.सी. कोचिंग करने वाले विद्यार्थी
3.	कोचिंग संस्थान	प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करवाने वाले
4.	लिंग स्तर	पुरूष/महिलाएँ

इस अध्ययन में शैक्षणिक नगरी कोटा जिले के शिक्षक भर्ती की तैयारी कराने वाले कोचिंग संस्थानों को सम्मिलित किया गया, जिनमें अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के केरियर को लेकर बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन ज्ञात किया गया है।

1.7 पारिभाषिक शब्दावली :–

1. **केरियर :–** केरियर से तात्त्पर्य जॉब या नौकरी से हैं। वर्तमान में किसी नौकरी या काम के लिए केरियर शब्द का ही ज्यादा प्रचलन हैं।

   प्रो. अशोक शर्मा के अनुसार – ''केरियर से तात्पर्य ऐसी शैक्षिक व व्यावसायिक पृष्ठभूमि से है जो व्यक्ति को जीविकोपार्जन के योग्य बनाती है।''

2. **विद्यार्थी :–** एक निश्चित समायावधि में पाठ्यक्रम का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक अध्ययन प्राप्त करने वाला विद्यार्थी कहलाता हैं।

   विनोद शास्त्री के अनुसार – ''विद्यार्थी वह दर्पण है जिसमें शिक्षक अपना प्रतिबिम्ब देखता है, विद्यार्थी समाजमितिय दृष्टिकोण में शिक्षक द्वारा स्थापित नवीन पादप है।''

3. **आर.पी.एस.सी.** – आर.पी.एस.सी. से तात्पर्य राजस्थान लोक सेवा आयोग संवैधानिक निकाय से है जो शिक्षक भर्ती, चिकित्सक अधिकारी भर्ती, आर.ए.एस. आदि की भर्ती परीक्षा करवाता हैं।

4. **दबाव :–** जब व्यक्ति एक निश्चित स्तर के अनुसार जीवन जीने के सम्बन्ध में सोचता है अथवा जब व्यक्ति को तीव्र गति से होने वाले परिवर्तनों के साथ अनुकूल करना होता है। जब वह परिवर्तनों के साथ अनुकूलन नहीं कर पाता है तो वब दबाव महसूस करने लगता हैं। दबाव का सामान्य शब्दों में अर्थ है ''व्यक्तियों के द्वारा जीवन भर अनुभव किये जाने वाला मानसिक व शारारिक दबाव हैं।'' दबाव शंग्रेजी शब्द Stress का हिन्दी रूप है। व्यक्ति को दबाव प्रतियोगिता के कारण होता हैं। कभी–कभी अपने आत्म सम्मान की रक्षा के लिए भी व्यक्ति दबाव महसूस करता हैं।

कोलमैन के अनुसार – ''कोई भी परिस्थिति जो व्यक्ति पर दबाव डालती है जिसके कारण व्यक्ति को समायोजन करना पड़ता है वही दबाव है।''

5. **समायोजन : –** यह अंग्रेजी शब्द Adjustment का हिन्दी रूपान्तरण है। समायोजन से तात्त्पर्य व्यक्ति की आवश्यकताओं, शाकांक्षाओं तथा वातावरण की मांग व बाधाओं के मध्य सन्तुलन या समन्वय है। जीवन को सुखी बनाए रखने के लिए परिवर्तन को सहज रूप में स्वीकार करते रहना ही समायोजन है।

बोरिंग लैंगफैल्ड तथा बोल्ड के अनुसार, ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं तथा उसकी पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखना है।''

6. **कोचिंग :–** Coaching अंग्रेजी शब्द है जो मूल रूप से Coach से बना है। Coach का तात्त्पर्य होता है विशेष रूप से मार्गदर्शन करने वाला। कोचिंग वह विश्वसनीय संस्थान है जो छात्रों को ज्ञान के साथ कामयाबी की राह भी आसान बनाता है।''

अन्य के अनुसार, ''कोचिंग से तात्पर्य ऐसे संस्थान है जो बच्चों की पढ़ाई के साथ–साथ उनके नैतिक चरित्र, व्यक्तित्व, सामाजिक व पारिवारिक समायोजन तथा व्यावहारिक रूप से सफल होने के लिए प्रेरित करता है।''

1.8 शोध परिच्छेदों का गठन :–

किसी भी समस्या का अध्ययन करने के लिए एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित योजना की आवश्यकता होती हैं। प्रस्तुत समस्या का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अध्ययन करने के लिए निम्नांकित शोध योजना का गठन किया गया हैं। जिसको 5 परिच्छेंदों में वर्गीकृत किया गया है।

1. **प्रथम परिच्छेद : शोध आकल्प –** यह एक परिचयात्मक परिच्छेद हैं। इसके अन्तर्गत समस्या का परिचय, समस्या का औचित्य, समस्या कथन, समस्या का परिसीमन, शोध के उद्देश्य, परिककल्पना, न्यादर्श की चयन विधि, अनुसंधान में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषाओं तथा शोध प्रतिवेदन की रूपरेखा का विवरण प्रस्तुत किया गया हैं।

2. **द्वितीय परिच्छेद : सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन –** प्रस्तुत द्वितीय शोध परिच्छेद के अन्तर्गत प्रस्तावना, सम्बन्धित साहित्य के स्त्रौत, दबाव का सम्प्रत्यय अर्थ तथा भारत व विदेशों में विदेशों में किये गये अनुसंधानों का विवेचन किया गया। सामंजस्य की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत सामंजस्य समस्याऐं एवं प्रक्रिया तथा सामंजस्य पर भारत व विदेशों में किये गये अनुसंधानों का विवेचन किया गया हैं।

3. **तृतीय परिच्छेद : शोध विधि, उपकरण एवं न्यादर्श –** इस परिच्छेद में प्रस्तावना, अनुसंधान विधि, कोचिंग विद्यार्थियों की केरियर के प्रति बढ़ता दबाव एवं समायोजन के अध्ययन के लिए प्रयुक्त विधि, न्यादर्श, उपकरण परीक्षण निर्माण की प्रक्रिया तथा प्रयुक्त सांख्यिकी का वर्णन किया गया हैं।

4. **चतुर्थ परिच्छेद : दत्त संकलन, व्याख्या एवं विश्लेषण –** इस परिच्छेद में दत्तों का संकलन, विश्लेषण तथा व्याख्या का विवरण दिया गया हैं। विद्यार्थियों के परीक्षण के अंको के आधार पर केरियर के बढ़तें दबाव एवं समायोजन का अध्ययन करने हेतु सांख्यिकी का प्रयोग किया गया हैं। इसके लिए शोधकर्त्री द्वारा मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी परीक्षण, सहसम्बन्ध आदि सांख्यिकी का प्रयोग कर अध्ययन को प्रभावशाली बनाया गया है।

5. **पंचम परिच्छेद : सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव –** इस परिच्छेद में शोधकर्त्री द्वारा किये गये अनुसंधान के निष्कर्षो का विवरण, अनुसंधान का सारांश एवं भावी अनुसंधान हेतु सुझाव दिये गये है।

1.9 उपसंहार :–

अधिकतर माता–पिता अपने बच्चों को एक आदर्श शिक्षक बनते देखना चाहतें हैं। जिसके चलते बच्चों को अच्छी तैयारी के लिए एक अच्छे कोचिंग संस्थान की और रूख करना पड़ता हैं। कोचिंग में बच्चों के सामने बहुत सारी समस्या आती है जिसकी वज़ह से छात्र अपने लक्ष्य से भटक जातें हैं। इसी कारण विद्यार्थीं में आर.पी.एस.सी. की शिक्षक भर्ती की तैयारी को लेकर दबाव बढ़ता जाता हैं। उनमें नकारात्मक सोच विकसित होती हैं, विद्यार्थी कुंठित होने लगता है जिसके चलते वह अपने लक्ष्य को भूल जाता हैं और कभी–कभी आत्महत्या करने तक की नौबत आ जाती हैं। इस प्रकार की समस्याओं का समाधान केवल समायोजन के द्वारा ही सम्भव होता हैं। इसलिए शोधकर्त्री द्वारा इस विषयों को शोधकार्य हेतु चयनित किया गया हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थीं के केरियर को लेकर बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन ज्ञात करना हैं। इसी आधार पर शोध का सारांश व निष्कर्ष ज्ञात किया गया हैं।

द्वितीय परिच्छेद

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

द्वितीय परिच्छेद

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना :–

मानव ही एक ऐसा प्राणी हैं जो अपने अनुभवों को सुरक्षित रख अगली पीढी तक पहुँचाने की क्षमता रखता हैं, जहां अन्य प्राणी नए सिरे से ज्ञानार्जन प्रारम्भ करते हैं। मनुष्य अपने ज्ञान को विस्तार देने के लिए अपने पूर्वजों के ज्ञान का सहारा लेकर निरंतर प्रगति की ओर बढता हैं। उसकी इस प्रगति का मूल कारण हैं उसकी जिज्ञासा। वह अपने वातावरण को जिज्ञासा की दृष्टि से देखता हैं। पूर्व ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान की ओर अग्रसर होना उसकी प्रकृति हैं। मनुष्य की यह प्रकृति जितनी अनुसंधान के क्षेत्र में परिलक्षित होती हैं, उतनी अन्य क्षेत्रों में नही।

अनुसंधान से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किसी शोधकर्त्री के लिए विषय के मूल तक पहुँचने के लिए मूल रूप से प्राथमिक आधार होता हैं तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक होता हैं। अर्थात् सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता हैं कि उस समस्या के किस भाग की ओर बढना हैं, अध्ययन का स्वरूप क्या होना चाहिए, समस्या के किन–किन भागों पर अध्ययन हो चुका हैं एवं इन भागों का हमारे अध्ययन से क्या सम्बन्ध हैं। अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से हैं, जिनके अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती हैं।

किसी भी विषय के विकास में किसी विषय शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्त्री को पूर्व सिद्धान्तों तथा शोधों से भली–भांति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य का पुनरावलोकन करना आवश्यक होता हैं।

जॉन डब्ल्यू वेस्ट (1959) के शब्दों में – ''वास्तव में समस्त मानवीय ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में उपलब्ध हो सकता हैं, परन्तु मनुष्य अतीत से संचित एवं लिखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का निर्माण करता हैं।''

सम्बन्धित साहित्य की आवश्यकता पर जोर देते हुए **डॉ.ढोढियाल और फाटक (1959)** ने विचार व्यक्त किये कि ''प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में समस्या से सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का एक अनिवार्य और प्रारम्भिक आधार हैं।

बोर्ग, डब्ल्यू.आर (1963) के अनुसार :– ''शैक्षिक अनुसंधान में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किसी अनुसंधानकर्त्री के लिए किसी समस्या विशेष के निकट पहुँचने का एक महत्वपूर्ण साधन हैं।''

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट हैं कि सम्बन्धित साहित्य के बिना अनुसंधानकर्त्री का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में वह एक कदम भी आगे नही बढ सकती हैं। क्योंकि जब तक उसे यह ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका हैं? किस विधि से कार्य किया गया हैं तथा उसके क्या निष्कर्ष आये हैं? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकती हैं और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकती हैं। अतः सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अपरिहार्य हैं।

2.2 सम्बन्धित साहित्य का महत्व :–

सम्बन्धित साहित्य के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए **ढ़ोंढियाल एवं पाठक** ने कहा है कि ''समस्या से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्रारम्भिक आधार है तथा अनुसन्धान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण मे एक महत्त्वपूर्ण कारक है।''

इसी प्रकार **जे. डब्ल्यू. बेस्ट** का अभिमत है कि ''सम्बन्धित साहित्य व विषय सामग्री ढूँढ़ना व अध्ययन करना एक लम्बा व थका देने वाला कार्य अवश्य है, और इसमें काफी समय लग जाता है, लेकिन इसके अध्ययन से कई बातें जानने को मिलती है।''

उक्त विचारों के आधार पर सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के महत्त्व के बारे में निम्नांकित तथ्य उभर कर सामने आते हैं–

1. शोध की जाने वाली समस्या के लिए महत्वपूर्ण सुझावों की प्राप्यता।
2. शोध की पुनरावृत्ति से बचाव।
3. शोधार्थी द्वारा अपनी समस्या के समाधान हेतु विधियाँ एवं उपकरणों के चयन एवं निर्माण में सहयोग।
4. शोध–प्रबन्ध लिखने की विधि का ज्ञान।
5. शोधार्थी को समय की दृष्टि से उपयोगी विचार एवं सिद्धान्तों का ज्ञान।
6. शोध में अभिलक्षित कमियों की समझ एवं उन्हें दूर करने की विधियों का ज्ञान।

2.3 सम्बन्धित साहित्य के स्त्रोत :–

अनुसंधानकर्त्री अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचना निम्नलिखित स्त्रोतों से प्राप्त कर सकता हैं –

(1) प्राथमिक स्त्रोत (2) द्वितीयक स्त्रोत

1. प्राथमिक स्त्रोत :–

(अ) पत्र–पत्रिकाऐ, सामाजिक साहित्य।

(ब) ग्रन्थ, विषय पर निबन्ध पुस्तिकाऐं, वार्षिक पुस्तके तथा बुलेटिन पत्रिकाऐं।

(स) स्नातकोत्तर, विद्या–वाचस्पति स्तर के शोध प्रकाशन।

(द) शिक्षा प्रशासन में प्रकाशन आदि।

(य) शिक्षा सम्बन्धी रिसर्च जर्नल्स।

2. द्वितीयक स्त्रोत :–

(अ) शिक्षा के विश्वज्ञान कोश

(ब) शिक्षा सूची पत्र

(स) शिक्षा के शोध सार संक्षेप

(द) संदर्भ ग्रन्थ सूची एवं निर्देशिकाऐं

(य) जीवनगाथा संबंधी स्त्रोत

(र) उद्धरण स्त्रोत

(ल) अन्य स्त्रोत कम्प्यूटर, इन्टरनेट इत्यादि

2.4 शोध से सम्बन्धित अनुसंधान कार्य :–

शोधकर्त्री ने उपरोक्त प्रकार के विविध स्त्रोतों से संदर्भ साहित्य संग्रहित किया हैं। शोधकार्य हेतु शोधकर्त्री ने विदेशों में तथा भारत में किये गये अनुसंधानों का अध्ययन किया गया। सुव्यवस्थित लेखन एवं सुविधा की दृष्टि से अनुसंधानकर्त्री द्वारा संबन्धित साहित्य के अध्ययन को दो भागों में विभक्त किया गया हैं–

2.4.1 दबाव से संबन्धित शोधकार्य।

2.4.2 समायोजन से संबन्धित शोधकार्य।

2.4.1 दबाव से संबन्धित शोधकार्य :–

2.4.1.1 भारत में दबाव से सम्बन्धित किए गए शोध कार्य :–

1. **प्रसाद एम. (1990)** ने चैन्नई के बाहर निवास करने वाले प्रबंध प्रशिक्षण के महाविद्यालय विद्यार्थियों पर तनाव का अध्ययन किया जिसका निष्कर्ष यह रहा हैं – चैन्नई में सम्मिलित कुछ क्षेत्र ग्रामीण व कस्बे आन्ध्रप्रदेश के हैं। वहाँ के विद्यार्थियों को सोने की आदत अधिक होने के कारण उनमें परीक्षा भय व तनाव अधिक पाया गया। तनाव कम करने के प्रशिक्षण से बहुत हद तक विद्यार्थी का तनाव कम हुआ। U.G. व P.G. के छात्रो में तनाव स्तर व तनाव नियंत्रण में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

2. **योहन, विनिता (1990)** ने *''उच्च व निम्न दबाव वाले छात्राध्यापकों के व्यावसायिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन''* पर शोध कार्य किया।

उद्देश्य :– कम औसत व अधिक दबाव वाले छात्राध्यापकों के दबाव व व्यावसायिक मूल्यों के बीच सम्बन्ध का पता लगाना।

निष्कर्ष :– अधिक दबाव वाले छात्राध्यापकों की अपेक्षा कम दबाव वाले छात्राध्यापकों द्वारा अपने व्यावसायिक मूल्य बहुत कम पसंद करते हैं।।

3. **संधु, राजवंत (1996)** ने *''किशोर पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक दबाव व उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन''* किया।

उद्देश्य :–

1. किशोर छात्र व छात्राओं के मनोवैज्ञानिक दबाव का पता लगना।
2. किशोर छात्र व छात्राओं के शैक्षिक निष्पत्ति का पता लगना।
3. मनोवैज्ञानिक दबावों व शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करना।

निष्कर्ष :–

निजी विद्यालय के किशोर छात्रों के मनोवैज्ञानिक दबाव व शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सामान्य श्रेणी का धनात्मक सम्बन्ध होता है तथा निजी विद्यालय की किशोर छात्राओं में निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।

4. **मिश्रा रंजीता (2000)** ने *''महाविद्यालयी विद्यार्थियों मे शैक्षिक दबाव तथा उनकी दुश्चिंता, समय प्रबंधन व समय उपयोग संतुष्टि में संबंध का अध्ययन''* किया जिसका निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ है कि वह व्यक्ति जो समय प्रबन्ध व्यवहार में उपयोग करते हैं उनमें दबाव के शारीरिक व मनोवैज्ञानिक लक्षण कम पाये गये हैं। जो विद्यार्थी समय उपयोग संतोषी हैं उनमें भी कम शैक्षिक दबाव पाया गया हैं। महाविद्यालयी पुरूष व

पुराने विद्यार्थियों में समय प्रबन्धन कौशल अधिक पाया गया महाविद्यालय पुरूष व नवीन विद्यार्थियों की अपेक्षा अर्थात महिला विद्यार्थियों व पुराने छात्रों में कम शैक्षिक दबाव व दुश्चिंता तथा प्रभावी समय प्रबन्धन व्यवहार पाया गया।

5. **गिरिराज खन्ना एवं मरियम्मा वर्घीज (2002) India Woman Today पृ.188,** ने अपने अध्ययन में पाया कि कामकाजी महिलाएँ अपने वैवाहिक जीवन में तनावों की ठीक प्रकार से प्रबन्धन कर सकती है।

निष्कर्ष :–

कामकाजी होने से आर्थिक बोझ नहीं पड़ता है। महिलाओं में स्वावलम्बन की भावना का विकास होता है तथा अपने वैवाहिक जीवन को सुखीपूर्वक जीती हैं व तनाव रहित बनाती हैं।

6. **जोइंग टी (2003)** ने *''पंजीकृत नर्सो की संवेगात्मक बुद्धिमता, मेहनतीपन तथा कार्य दबाव के बीच सम्बन्ध पर अध्ययन'' किया।*

निष्कर्ष :– संवेगात्मक बुद्धिमता तथा मेहनतीपन में सार्थक सम्बन्ध पाया गया है। संवेगात्मक बुद्धि तथा कार्य दबाव में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया। साथ ही मेहनतीपन तथा कार्यदबाव में सम्बन्ध नहीं पाया गया।

7. **प्रोमिला कपूर (2003)** *"Marriage and working women india"* में कामकाजी महिलाओं की समस्याओं एवं दबावों का अध्ययन किया जो कि शिक्षक, डॉक्टर व ऑफिस में कार्यरत थी।

निष्कर्ष :– कार्यशील महिलाओं को घर व ऑफिस की दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है जिससे उनमें असामंजस्य, तनाव एवं संघर्ष उत्पन्न होता है।

8. **पद्मा रामचन्द्रन (2003)** ने *''महिला विद्यार्थियों की आधुनिक शिक्षा एवं भूमिका में दबावों का अध्ययन''* पर शोध कार्य किया है।

उद्देश्य :– महिलाओं की सह शिक्षा, उच्च शिक्षा, केरियर आदि के चुनने के कारणा, समस्याएँ व भूमिका में दबाव का पता लगाना।

निष्कर्ष :– निष्कर्ष के रूप मे उन्होने पाया कि भारतीय महिलाओं की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिले है। पुरूषों के साथ वे भी केरियर के प्रति उन्मुख हो रही है। आज वे केवल परम्परागत पत्नी या माँ नहीं है। शिक्षा के साथ उनकी भूमिका सम्बन्धी दबाव बढ़े है।

9. **भारती, टी. अरूणा (2003)** ने अपने शोध में *"Sources of Job Stress among primary school Teachers"*, पर अध्ययन किया।

उद्देश्य :– मिशनरी व सरकारी स्कूल अध्यापकों में कार्य तनाव का अध्ययन करना व उनकी तुलना करना।

निष्कर्ष :– अधिकांश मिशनरी व सरकारी स्कूल अतिरिक्त कार्यभार एवं स्कूल के वातावरण से तनावग्रस्त पाए गऐ। समय एवं कार्य सुरक्षा में कमी भी दबावों का प्रमुख कारण पाया गया।

10. **नलवाया, रेखा (2004)** ने *''निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का शैक्षिक तनाव और व्यक्तित्व गुण''* का अध्ययन किया।

उद्देश्य :– निजी व सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का पता लगाना था।

निष्कर्ष :– निजी अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का शैक्षिक तनाव निजी हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव से बहुत अधिक पाया गया है। निजी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों का शैक्षिक तनाव सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों से कम पाया गया है।

11. **हडसन, बेही (2005)** ने *"A comparative Investigation of stress and opinion among a sample of K-8 Educators."* विषय पर अध्ययन किया।

उद्देश्य :– प्राथमिक एवं मिडिल विद्यालयों के शिक्षकों के तनाव एवं तनाव का सामना करने के तरीकों का पता लगाना।

निष्कर्ष :– मिडिल विद्यालय के शिक्षकों का तनाव साधारण स्तर का है तथा ये शिक्षक तनाव से पीछा छुड़ाकर तनाव का सामना करते हैं। जो तनाव का सामना करने की अच्छी विधि नहीं है। जबकि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक का तनाव स्तर साधारण स्तर से कम होता है तथा ये तनाव का सामना करने के लिये उन्नत प्रविधियों जैसे – सक्रिय नियोजन का प्रयोग करते हैं।

12. **नागदा चन्द्रावती (2006)** ने *''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं में तनाव का अध्ययन''* किया।

उद्देश्य :– शिक्षक महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं में तनाव के स्तर का पता लगाना तथा इनके बीच तनाव के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– पुरूष व महिला छात्राध्यापकों के मध्य घर सम्बन्धी परिस्थितियों में तनाव के स्तर एक दूसरे से सार्थक रूप से भिन्न है। पुरूष व महिला छात्राध्यापकों के मध्य समाज सम्बन्धी परिस्थिति में तनाव के स्तर एक, दूसरे से सार्थक रूप से भिन्न नहीं है तथा पुरूष व महिला छात्राध्यापकों के मध्य विद्यालय सम्बन्धी परिस्थितियों में तनाव के स्तर एक दूसरे से सार्थक रूप से भिन्न है।

13. **सिंह स्मिता (2006)** ने *''प्रोजेक्ट प्रबन्धकों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि तथा दबाव के स्त्रोतों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन''* किया जिसके निष्कर्ष यह प्राप्त हुये है कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति दबाव को कम

करने के लिए कार्यकारी स्त्रोतो को ज्यादा उपयोग में लाते हैं। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति दबाव को कम करने के कार्यकारी स्त्रोतों के संज्ञानात्मक तथा शारीरिक प्रकारों का ज्यादा उपयोग करते हैं। प्रोजेक्ट प्रबन्धकों की आयु में वृद्धि के साथ उनके दबाव कार्यकारी स्त्रोतों की प्रभावशीलता में भी वृद्धि होती हैं।

14. **राठौर रचना (2006)** ने *"A Study of Stress and Feeling of Insecurity among Adolescnet Students."* का अध्ययन किया जिसका मुख्य उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों के दबाव एवं भावनात्मक सुरक्षा का पता लगाना था। शोध निष्कर्ष से पता लगता है कि किशोर विद्यार्थियों में शैक्षिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा दबाव पाया गया और भावनात्मक रूप से असुरक्षित व असहज महसूस करने लगे। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण विधि, सीखने के तरीके, प्रश्नोत्तर, कठिन पाठ्य सामग्री, जॉब अनिश्चितता, कार्यभार, अध्यापकों का व्यवहार आदि कारणों से विद्यार्थियों में दबाव अधिक पाया गया जिसके कारण किशोर भावनात्मक रूप से भयभीत व सहमें हुए रहते हैं।

15. **Mathur Madhu (2009)** ने *''भारतीय महिलाओं की जीवन शैली और उनमें दबाव के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन''* किया जिसके निष्कर्ष यह है कि Non-working वृद्ध महिलाएं कार्यशील महिलाओं की अपेक्षा शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, पोषण स्तर, आर्थिक स्तर, शैक्षिक स्तर, सामाजिक स्तर आदि क्षेत्रों में ज्यादा दबावग्रस्त पायी जाती हैं। शोधकर्त्री ने 400 महिलाओं का चयन किया था।

16. **Singh Vikram & Khokhar C.P. (2009)** ने *''दबाव के कारकों व निदानात्मक उपचार का अध्ययन''* किया जिसके निष्कर्ष यह है कि उपरोक्त अनुसंधान लेख में अनुसंधान के आधार पर दबाव को कम करने के लिए कुछ प्रचलित निदानात्मक बतायी गयी हैं जो निम्न प्रकार हैं–

1. मनोगतिशील थैरेपी
2. अन्तः व्यक्तित्व थैरेपी
3. व्यवहार थैरेपी
4. संज्ञानात्मक थैरेपी
5. परिवार/समूह थैरेपी

17. **सुनीता राजपूत (2010)** ने ''विवाहित अध्ययनरत छात्राओं द्वारा अनुभूत दबाव और उनकी दबाव प्रबन्धन शैली का अध्ययन'' किया।

उद्देश्य :– विवाहित अध्ययनरत छात्राओं में अनुभूत दबाव एवं उनकी दबाव प्रबन्धन शैली का पता लगाना।

निष्कर्ष :– विवाहित अध्ययनरत छात्राओं को व्यकितगत कारणों से विवाह के बाद पढ़ाई करने में दबाव व बोझ महसूस होता है क्योंकि किसी भी कठिन विषय को पढ़ने पर अत्यधिक घबराहट होने लगती है जिससे उन्हें अत्यधिक दबाव की अनुभूति होती है। मनोवैज्ञानिक कारणों, पारिवारिक कारणों, व्यावसायिक कारणों तथा सामाजिक कारणों से भी विवाहित छात्राओं का कॉलेज से अवकाश लेना होता है जिससे अपने आप में दबाव महसूस करती है।

18. **ऋचा यादव, शशांक पी. बीहेर एवं प्रकाश पी. बीहेर (2011)** ''मेडिकल, इंजीनियरिंग और नर्सिंग विद्यार्थियों क मध्य तनाव का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोधकार्य किया जिसका मुख्य उद्देश्य मेडिकल, इंजीनियरिंग व नर्सिंग के विद्यार्थियों के बीच में तनाव का पता लगाना था। सर्वेक्षण आधारित प्रश्नावली का प्रयोग किया। निष्कर्ष के रूप में ज्ञात होता है एक इकाई के रूप में तनाव सार्वभौमिक रूप से तीन धाराओं के छात्राओं के मध्य मौजूद है। भले ही वह लिंग, उम्र और अन्य चर के रूप में मौजूद हो। सभी तीन धाराओं के छात्रों ने नर्सिंग छात्रों के बीच अधिकतम तनाव की समस्या के अस्तित्व से इन्कार किया हो। मेडिकल व इंजीनियरिंग छात्रों के देने की आवश्यकता होती हैं, जबकि कोई भी नर्सिंग छात्र इस श्रेणी का नहीं था। अर्थात् इससे स्पष्ट होता है नर्सिंग छात्रों की अपेक्षा मेडिकल व इंजीनियरिंग छात्रों में उच्च स्तर का पाया जाता है, जिसे नैदानिक उपचार की आवश्यकता है।

19. **शबीर चेंगानाकटिल, जीबीन बाबू एवं शफीन हेडर (2017)** ने ''मेडिकल एवं इंजिनियरिंग विद्यार्थियों के मध्य वैज्ञानिक दबाव, अवसाद और चिंता का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोधकार्य किया, जिसका मुख्य उद्देश्य मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थिरूों के मध्य मनोवैज्ञानिक दबाव, अवसाद व चिंता का पता लगाना है। न्यादर्श के रूप में 150 मेडिकल विद्यार्थी तथा 150 इंजीनियरिंग विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि के माध्यम से मानकीकृत अवसाद, दबाव व चिंता प्रमानी का प्रयोग किया, जिससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि 72 प्रतिशत मेडिकल विद्यार्थियों में 5.67 प्रतिशत इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर का दबाव प्राप्त हुआ है। मेडिकल विद्यार्थियों के अवसाद (20.6%) इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की तुलना में (15.3%) ज्यादा पाया गया है तथा चिंता भी इंजीनियरिंग विद्यार्थियों (11.3%) की अपेक्षा मेडिकल विद्यार्थियों में (19.4%) ज्यादा पायी गयी है। इससे स्पष्ट होता है कि मेडिकल विद्यार्थियों में अवसाद दबाव चिंता ज्यादा पायी जाती है। इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की तुलना में।

20. **के.जी. शर्मा (2017)** ''भारत में 90 प्रतिशत इंजीनिरिंग विद्यार्थी अवसाद में क्यों है? का अध्ययन किया जिसका मुख्य उद्देश्य इंजीनियरिंग विद्यार्थियों में अवसाद के कारणों का पता लगाना है। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। न्यादर्श के रूप में 15 से 29 वर्ष तक के विद्यार्थियों का चयन किया गया। निष्कर्षतः यह प्राप्त हुआ कि इंजीनियरिंग विद्यार्थियों में अवसाद के निम्नलिखित कारण प्राप्त हुये हैं :– 1. कुछ रिलेशनशिप स्टेटस, 2. परीक्षा का दबाव, 3. परिवार का दबाव, 4. परीक्षा में असफलता का भय, 5. उच्च महत्वकांक्षा, 6. आर्थिक समस्या, 7. उच्च अकाद्मिक को बनाये रखना, 8. साप्ताहिक कक्षा परीक्षण के रेंक का गिरना, 9. ड्रग, स्मोकिश, ड्रिंकिंग, स्नेक्स आदि का सेवन कना। 10 उचित परामर्श व निर्देशन का अभाव, 11. प्रेम व मित्रता, 12. आत्मविश्वास कमजोर होना 13. हॉस्टल, मेस व पीजी में रहना भोजन करना। 14. रूम पार्टनर के साथ समायोजन व कर पाना इत्यादि।

2.4.1.2 विदेशों में दबाव से सम्बन्धित किए गए शोध कार्य

1. **माइकल मेकिन (2000)** ने *Self-related levels of anxiety and Depression among low-students* पर अध्ययन किया जिसका निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ है कि इस अध्ययन का उद्देश्य प्रथम वर्ष कानून के छात्रों में दुश्चिंता व निराशा के स्वरिपोर्ट के स्तरों की जाँच करना था। अध्ययन के प्रथम भाग में, यह परिकल्पना की गई कि कानून के विद्यार्थी चिकित्सा के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्चतर स्तर की दुश्चिंता व निराशा रखते हैं। अध्ययन के द्वितीय भाग में यह परिकल्पना की गई कि Quality of Life (QOL) कार्यक्रम में सम्मिलित हो रहे। कानून के विद्यार्थी निम्न QOL के विद्यालय के छात्रों में कम स्तर की दुश्चिंता व निराशा प्रदर्शित करेंगे। अध्ययन के प्रथम भाग में कानून के विद्यार्थियों व चिकित्सा विद्यार्थियों के मध्य दुश्चिंता और हताशा प्रत्येक प्रश्नावली पर अन्तर आया। इसमें कानून के विद्यार्थियों ने अधिक हताशा प्रदर्शित की। कानून के विद्यार्थियों ने चिकित्सा के विद्यार्थियों की अपेक्षा नकारात्मक संवेगात्मक शब्दों का अधिक प्रतिशत उपयोग किया। सकारात्मक संवेगात्मक शब्दों में कोई परिवर्तन नही आया। द्वितीय भाग में केवल सांख्यिकीय महत्वपूर्ण अन्तर यह था कि उच्च QOL विद्यालय के कानून के विद्यार्थियों ने निम्न QOL विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक संवेगात्मक शब्दों का प्रयोग किया। अध्ययन के परिणाम इस विश्वास के अनुरूप है कि कानून के विद्यार्थी चिकित्सा के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्चतर स्तर की मनोवैज्ञानिक हताशा रखते हैं। इस परिकल्पना को कोई समर्थन प्राप्त नही हुआ कि कानून के विद्यार्थियों की हताशा कानून विद्यालय की QOL से संबंधित हैं।

2. **Londis, Dana, Alexis (2002)** ने *"The role of coping in the relationship between uncontrollable stress and hopelesseness in low incomes when adolescents"* विषय पर पीएच.डी. स्तरीय शोध

कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में निम्न आयु के किशोरों में अनियमित तनाव व निराशा के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने व इसमे कोंपिंग की भूमिका का पता लगाना है।

निष्कर्ष :– अनियंत्रित दबाव व आशाहीनता के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया।

3. **Villente, Carles (2003) :** *"The consistency and stability of children's coping with daily stress"* विषय पर शोध कार्य किया।

उद्देश्य :– बच्चों की दृढ़ता अनुकूलता स्वीकार्यता व स्थायीत्वता का दैनिक दबाव के सम्बन्धों का पता लगाना।

निष्कर्ष :– बच्चे जैसे–जैसे बड़े होते हैं। तो उनका मन विचलित होता जाता है। लड़कियों में सत्कार व संवेगात्मक क्षमता लड़कों से अधिक पाई गई।

4. **Gill R. & Sandhu (2004)** ने *"Sociological and Environmental factors causing stress among women and fighting techniques used"* का अध्ययन किया।

उद्देश्य :– उन सामाजिक व पर्यावरणीय कारकों का पता लगाना है जो महिलाओं में दबाव–तनाव पैदा करते हैं।

निष्कर्ष – कामकाजी महिलाओं में तनाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि उन्हें घर व बाहर की जिम्मेदारी कुशलतापूर्वक निभानी पड़ती है। इसमें पाया कि पति व अप्रत्याशित मेहमानों द्वारा तनाव सबसे अधिक उत्पन्न होता है।

5. **Clark Nekederia (2004)** ने *"The moderating effect of sprituality of the relationship between stressull life, depression and anxiety among adolescents"* का अध्ययन किया।

उद्देश्य :– किशोर विद्यार्थियों में दबावपूर्ण जीवन, तनाव, और चिन्ता या व्याकुलता के मध्य सम्बन्ध पर आध्यात्मिकता या सांसारिकता के प्रभाव को ज्ञात करना।

निष्कर्ष :– जीवन दबाव तथा चिन्ता के स्तर के मध्य सकारात्मक सह–सम्बन्ध है तथा जीवन दबाव व तनाव के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध है।

6. **काडापट्टी एम. एण्ड खादी पी. बी. (2004)** ने *''पूर्व विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों में दबाव व प्रबन्धन का अध्ययन''* किया जिसका निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ है कि द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी व छात्रों में शैक्षिक दबाव अधिक हैं तथा प्रथम वर्ष व छात्राओं में (सभी संकायों के) शैक्षिक दबाव कम पाया गया हैं। संकाय स्तर पर प्रथम व द्वितीय वर्ष के परिणाम या निष्कर्ष उपरोक्त के समान हैं।

7. **Kristina Gyllensten & Stephen Palmer (2005)** "Can Coaching Reduce Workplace Stress? A Quasi Experimental Study" विषय पर शोधकार्य किया जिसका मुख्य उद्देश्य कोचिंग कार्यस्थल छात्रों के तनाव को कम कर सकता है? इसका पता लगाना है। कोचिंग छात्रों एक नियन्त्रित समूह पर डिप्रेशन, चिंता विकार और तनाव का मापन पूर्व व पश्च परीक्षण के आधार पर किया गया। नियन्त्रण समूह की तुलना में कोचिंग समूह के छात्रों के चिंता विकार व तनाव स्तर में बहुत अधिक कमी आई है। अध्ययन के अन्त में नियन्त्रण समूह की तुलना में कोचिंग समूह में चिंता व दबाव कम प्राप्त हुआ है। नियन्त्रण समूह की तुलना में कोचिंग समूह में तनाव स्तर में भी कमी आई है। कोचिंग को छात्रों की शैक्षिक स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

8. **मरसीर के लुईस (2005)** द्वारा *''किशोर एवं अयोग्य विद्यार्थियों की स्व प्रभावकता का मायूसी/दबाव एवं अकादमिक दुश्चिंता पर प्रभाव का अध्ययन''* किया गया जिसके निष्कर्ष यह प्राप्त हुए है कि किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक कुशलताओं का मापन किया गया तथा इनकी अकादमिक दुश्चिंताओं एवं दबाव को देखा गया। निष्कर्ष के रूप में यह तथ्य प्राप्त हुआ कि दबाव व अकादमिक दुश्चिंताओं पर सामाजिक स्व–प्रभावकता पठन, स्वभावकता का दुश्चिंता पर कोई सार्थक प्रभाव नही हैं। निम्न अकादमिक दुश्चिंता वाले छात्रों पर सामाजिक स्वभावकता का कोई सार्थक प्रभाव नही दिखाई दिया।

9. **मिलनर कारोलीन (2006)** ने *''माता–पिता तथा शिक्षकों का छात्रों के भय एवं अकादमिक दुश्चिंताओं के प्रत्यक्षीकरण का तुलनात्मक अध्ययन''* किया जिसके निष्कर्ष से यह प्राप्त हुआ कि माता–पिता तथा शिक्षक छात्रों की तुलना में विद्यालय वातावरण एवं सुरक्षा का अधिक सकारात्मक रूप में प्रत्यक्षीकरण करते हैं। अधिगम के लिए सहायता और गुणात्मक सामाजिक सम्बन्धों के प्रति भी माता–पिता और अध्यापकों का प्रत्यक्षीकरण छात्रों से अधिक सकारात्मक था।

10. **वेकर मेरी व विलियम्स (2006)** ने *''Women's work stress and their impact on health, well being and career.''*

उद्देश्य :– महिलाओं पर रोजगार क्षेत्र व घर एवं बच्चों के कार्यभार की अधिकता या दबाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– महिलाओं पर पुरूषों की अपेक्षा घर के कामकाज व बच्चों की जिम्मेदारी का अतिरिक्त कार्यभार होता है जिसके कारण महिलाओं के शारीरिक, मानसिक, स्वास्थ्य एवं उनके पारिवारिक जीवन में दबाव महसूस होने लगता है जिससे उनकी कार्यप्रणाली, केरियर व व्यवसाय बहुत अधिक प्रभावित होता है।

11. **जेनी पेरीमीघम (2007)** ने *''किशोर विद्यार्थियों में दबाव के कारणों का अध्ययन''* किया जिसके निष्कर्ष यह प्राप्त हुये है कि किशोरों में दबाव एक गम्भीर समस्या हैं किन्तु उचित मार्गदर्शन एवं मित्रवत् व्यवहार से शुरूआत में जैसे ही इसके लक्षण नजर आये इसे दूर किया जा सकता हैं। दबाव सामान्य मानवीय भावनात्मक स्थिति हैं। दबाव की बीमारी किशोरों में होती हैं। किशोरों में आत्मविश्वास की कमी होना या आत्मविश्वास की कमी के कारण नकारात्मक प्रवृत्तियों की तरफ आकर्षित होना, स्वयं को दोषी, असहाय, कमजोर व पिछड़ा हुआ समझना एवं स्वयं के प्रति घृणात्मक दृष्टिकोण रखना ही दबाव हैं। यह महत्वपूर्ण तथ्य हैं कि दबाव के शिकार किशोर बालक का व्यवहार वयस्क व्यक्ति से अलग होता हैं।

12. **डी संता मंता (2007)** ने *''किशोरों में दबाव एक उबरती समस्या के कारणों का अध्ययन''* किया जिसका निष्कर्ष है कि मुख्यतः दबाव की गम्भीर समस्या 14–19 वर्ष की आयु के किशोरों में प्रमुखता पायी जाती हैं। ऐसे किशोरों मे 23 वर्ष की आयु तक मानसिक समस्यायें चरम सीमा पर होती हैं। अधिकांश किशोर एक परिवार में उचित परामर्श एवं निदान नही मिलने के कारण प्रारम्भिक अवस्था में ही शिक्षा से दूर हो जाते हैं। किशोर एक लम्बे अन्तराल तक बेराजगारी व असफलता से संघर्ष करने के बाद दबाव व नकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर प्रवृत हो जाते हैं। किशोरों में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में ज्यादा दबाव की समस्या पायी जाती हैं।

13. **Vivek B. Waghachavare (2013)** "A Study of Stress among Students of Professional Colleges from Urbun area in India" भारत में शहरी क्षेत्र के व्यावसायिक कॉलेज के विद्यार्थियों के मध्य दबाव का अध्ययन'' विषय पर शोधकार्य किया। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत में

शहरी क्षेत्र के व्यावाायिक कॉलेज के विद्यार्थियों में दबाव को ज्ञात करना है। न्यादर्श के रूप में विभिन्न पाठ्यक्रम को करने वाले विद्यार्थियों (1200) का यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। दबाव का विश्लेषण प्रतिशत, काई–टेस्ट, बाइनरी लोजिस्टिकी रिग्रेशन टेस्ट तथा मल्टीनेशनल लोजिस्अिक रिग्रेशन टेस्ट का उपयोग किया है। निष्कर्षतः प्राप्त होता है कि 24.4 प्रतिशत अनुभाविक दबाव पाया गया है। 38.5 प्रतिशत डेन्टल, 34.1 प्रतिशत मेडिकल तथा 27.4 प्रतिशत छात्राओं में 20.4 प्रतिशत छात्रों के आधार पर छात्र एवं छात्राओं के दबाव में सार्थक अन्तर पाया गया है। तीनों पाठ्यक्रम के छात्रों में दबाव का मुख्य कारण अकाद्मिक दबाव व मानसिक समस्याओं को माना गया है।

14. **सेनोल सेज़र (2016)** ''छात्रों की शैक्षणिक प्रेरणा, त्रुटि उन्मुख प्रेरणा और शैक्षिक तनाव पर शैक्षिक कोचिंग का प्रभाव'' विषय पर शोधकार्य किया जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों की शैक्षणिक प्रेरणा, त्रुटि उन्मुख प्रेरणा और शैक्षिक तनाव पर शैक्षिक कोचिंग का क्या प्रभाव पड़ता है? को ज्ञात करना है। न्यादर्श के रूप में 60 छात्र–छात्राओं का चयन किया। शोध विधि के रूप में प्रायोगिक विधि का प्रयोग 30–30 छात्रों का नियन्त्रित समूह बनाकर स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जिससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शैक्षिक कोचिंग का छात्रों के शैक्षणिक प्रेरणा, त्रुटि उन्तुख प्रेरणा और शैक्षिक तनाव पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नियन्त्रित समूह और अनुभाविक नियन्त्रित समूह के छात्रों की शैक्षणिक प्रेरणा, त्रुटि उन्मुख प्रेरणा व शैक्षिक तनाव में सार्थक अन्तर देखने का मिलता है। शैक्षिक कोचिंग छात्रों की शैक्षणिक प्रेरणा को बढ़ाती है और शैक्षिक तनाव का कम करती है।

15. **नफीस फातिमा एवं हुसैन नादिर एम. (2016)** "Depression among students of a Professional degree case of Undergradutes Medical and Engineering Students." विषय पर शोधकार्य किया जिसका मुख्य उद्देश्य स्नातकस्तरीय मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों के मध्य अवसाद का पता लगाना है। स्वनिर्मित अवसाद प्रमापनी तथा बेक डिप्रेशन इनवेस्ट्र द्वितीय उपकरण का प्रयोग किया तथा सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त विद्यार्थियों में अवसाद के लक्षण प्राप्त हुये है। मेडिकल विद्यार्थियों को अवसाद 15 प्रतिशत इंजीनियरिंग विद्यार्थियों में 25 प्रतिशत ज्यादा प्राप्त हुआ है। इस प्रकार मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों के अवसाद में सार्थक अन्तर प्राप्त होता है। इसका मुख्य कारण माता–पिता का कलह, प्रेम–प्रसंग, ड्रग्स व शराब पीना, स्मोकिंग करना, कॉलेज से निष्कासित करना, कॉलेज में काम दबाव ज्यादा होना, अकाद्मिक उपलब्धि से संतुष्टि न मिलना, हमेशा तंग महसूस करना, माता–पिता की अपेक्षाओं को पूरा करने में कठिनाई महसूस करना, हमेशा सामाजिक रूप से अलग–अलग महसूस करना आदि। मेडिकल विद्यार्थियों की अपेक्षा इंजीनियरिंग विद्यार्थियों में अवसाद ज्यादा पाया गया है।

2.4.2 समायोजन से संबन्धित शोधकार्य :–

2.4.2.1 भारत में समायोजन से सम्बन्धित किए गए शोध कार्य :–

मानव जीवन में समायोजन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान हैं। समायोजन व्यक्ति व पर्यावरण के मध्य सुखद संबंध को व्यक्त करता हैं। मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए व्यक्ति का पर्यावरण के साथ समायोजित होना बहुत आवश्यक हैं लेकिन सभी मनुष्य इस प्रक्रिया में सफल नही हो पाते हैं। सफलता नही मिलने से मानसिक तनाव एवं संघर्ष उत्पन्न होता हैं। छात्रों के समायोजन से संबंधित कई

शोध कार्य पूर्व में हो चुके हैं जैसे – श्रीवास्तव एस. (1989), मेहता अन्जु (1989), शर्मा एन. (1981), मूलिया आर.डी.(1991), जैन मृदुला (1990), कुमारी एस.(1990), विजय लक्ष्मी आर. (1991) आदि।

1. **Gupta, S. (1990)** ने *''किशोर छात्राओं पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर समायोजन का अध्ययन''* किया। यह अध्ययन चंडीगढ के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं पर किया। छात्राओं का चयन अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम स्कूलों से किया गया। निष्कर्षस्वरूप अंग्रेजी माध्यम में पढनें वाली छात्राओं का समायोजन हिन्दी माध्यम वाली छात्राओं की तुलना में अधिक अच्छा पाया गया।

2. **Pande, Bhujendra Nath (1992)** ने *''बनारस के 100 किशोर एवं 100 किशोरियों पर उपलब्धि के आधार पर समायोजन का अध्ययन''* किया। निष्कर्ष यह रहा कि उच्च उपलब्धि वाले किशोरों का सामाजिक, भावात्मक तथा समग्र समायोजन अच्छा होने के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च थी। छात्राओं में भी भावात्मक रूप से समायोजित छात्राओं की उपलब्धि उच्च पाई गई। इससे निष्कर्ष निकला कि लिंगभेद के आधार पर उच्च समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध पाया गया।

3. **Jargar, A.H. & Mohmd. Ikbal (1992)** ने *''माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियों की समायोजन व सृजनशीलता का अध्ययन''* किया और यह परिणाम निकाला कि उच्च सृजनशील किशोर संवेगात्मक, सामाजिक व समग्र समायोजन के क्षेत्र में असमायोजित थे। निम्न सृजनशील किशोर विद्यार्थियों में उच्च सृजनशील विद्यार्थियों की अपेक्षा कार्यक्षमता व समायोजन स्तर निम्न पाई गई।

4. **आमेटा, हेमलता (2000)** ने *''गाइड एवं गैर गाइड छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं स्वधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन''* किया। न्यादर्श के रूप में उदयपुर शहर के 2 विद्यालयों का चयन कर 25

गाइड एवं 25 गैर गाइड छात्राओं का चयन कर सर्वेक्षण विधि के माध्यम से अध्ययन किया एवं निष्कर्ष में पाया कि गाइड एवं गैर गाइड छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करने पर गाइड छात्राओं का सामाजिक समायोजन गैर–गाइड छात्राओं की अपेक्षा अधिक होता है।

5. **गोस्वामी, देवेन्द्रपुरी (2002)** ने *''सीनियर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुश्चिंता का उनके व्यक्तित्व तथा समायोजन के साथ संबंध का अध्ययन''* किया। उद्देश्य – सीनियर माध्यमिक विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं का उनके व्यक्तित्व तथा समायोजन के सम्बंध को ज्ञात करना। निष्कर्ष – कम दुश्चिंता वर्ग के विद्यार्थियों और अधिक दुश्चिंता वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है। छात्रों के समायोजन, घर, परिवार, सामाजिक स्वास्थ्य एवं विद्यालय क्षेत्र में उच्च स्तर का प्राप्त हुआ है। अधिक दुश्चिंता बढ़ने से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व समायोजन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसीलिए व्यक्तित्व एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

6. **शर्मा, देवेन्द्र कुमार (2002)** ने *"A Study of Adjustment and Classroom Learning Environment of Responsive Teachers"* का अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य उत्तरदायी अध्यापकों के कक्षा–कक्ष अधिगम वातावरण एवं समायोजन का अध्ययन करना था। शोध निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि जिम्मेदार अध्यापक कक्षा–कक्ष अधिगम वातावरण को सरल, रूचिपूर्ण व मनोरम बनाने का प्रयास करते हैं तो छात्रों की समायोजन क्षमता उच्च स्तर की होती है। लेकिन जब अध्यापक कक्षा–कक्ष वातावरण को अधिगम के अनुकूल नहीं बनाते हैं तो छात्रों की समायोजन क्षमता निम्न स्तर की प्राप्त होती है। इसीलिए कक्षा–कक्ष अधिगम वातावरण को छात्रों के सीखने के अनुकूल ही बनाया जाये ताकि उनका समायोजन स्तर उच्च बना रहे।

7. **Manika Mohan & Kulshrestha, Usha (2004)** ने *''किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन पैटर्न पर अध्ययन''* किया। यह अध्ययन छात्रावास में रहने वाले तथा दिवस किशोर छात्राओं पर किया। इनमें 50 छात्रावास तथा 50 दिवस विद्यार्थी थे। छात्रावास में रहने की अवधि 3 वर्ष रही। परिणाम यह रहा कि वे छात्राऐ जो लगातार तीन वर्ष से छात्रावास में रह रही थी उनका मानसिक स्वास्थ्य दिवस छात्राओं की अपेक्षा अधिक अच्छा पाया गया तथा उनका सामाजिक समायोजन भी अच्छा पाया जबकि दिवसीय छात्राओं में सांवेगिक तथा स्वास्थ्य समायोजन अच्छा पाया गया। गृह तथा शैक्षिक समायोजन दोनों का समान पाया गया।

8. **Kumari, Chandra & Kanwar, Bhanwar (2004)** द्वारा *''किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन में सहसम्बन्ध पर अध्ययन''* किया गया। हनुमानगढ जिले के 100 किशोरों पर मानसिक स्वास्थ्य जाँच सूची तथा स्कूल विद्यार्थियों हेतु समायोजन अनुसूची द्वारा पत्र संकलित किए गए। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रतिशत व पियरसन सहसम्बन्ध सूत्र द्वारा तथ्यों का विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष यह रहा कि छात्र व छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर पाया जाता हैं, पर दोनों के समायोजन में अन्तर नही पाया गया। मानसिक स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध पाया गया।

9. **Panwar, Meena (2004)** ने *''एकल एवं संयुक्त परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों के समायोजन व व्यक्तित्व के लक्षणों का अध्ययन''* किया जिसके शोध निष्कर्ष में पाया गया कि एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं व्यक्तित्व लक्षणों में भी कोई अन्तर नहीं हैं। इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया हैं।

10. **Tomar, Jagat Pal & Tripati, Brijesh Chand (2005)** द्वारा *''शहरी व ग्रामीण सहशैक्षिक तथा समलिंगिय बालिका विद्यालय की छात्राओं के समायोजन का अध्ययन''* किया गया। न्यादर्श में लखनऊ जनपद के 8 माध्यमिक विद्यालयों से (4 सहशैक्षिक व 4 समलिंगीय) कला, विज्ञान की छात्राओं के समायोजन का अध्ययन किया। निष्कर्ष यह निकला कि शहरी क्षेत्र की सहशैक्षिक विद्यालयों की किशोर छात्राओं का सांवेगिक समायोजन ग्रामीण किशोरियों में सामाजिक समायोजन अधिक अच्छा पाया गया।

11. **Saeed, Nabila & Bharti, K. (2005)** द्वारा *''दिल्ली के पब्लिक स्कूल में अध्ययनरत तथा शहरी वातावरण के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन तथा अधिगम शैली का अध्ययन''* किया। इनकी आयु 14–18 वर्ष के मध्य की थी। परिणामस्वरूप छात्र व छात्राओं में सांवेगिक, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन अच्छा पाया गया तथा अधिगम शैली में अंतर पाया गया।

12. **शर्मा, डॉ. इन्दिरा (2006)** ने *''विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता व समायोजन का अध्ययन''* किया। जिसका मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालयी स्तरीय शिक्षकों के समायोजन क्षमता का अध्ययन करना तथा शिक्षण प्रभावशीलता व समायोजन में सहसम्बन्ध ज्ञात करना। शोध निष्कर्ष के रूप में प्रोफेसर वर्ग की समायोजन क्षमता के विभिन्न आयामों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। पुरूष व महिला रीडर के समायोजन क्षमता के व्यावसायिक आयामों तथा समायोजन के सहसम्बन्ध में उच्च सार्थक अन्तर पाया गया। शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता व समायोजन क्षमता में निम्न स्तर का नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है।

13. **मुर्डिया, सुनीता (2007)** ने ''अध्यापकों की आध्यात्मिक बुद्धि, व्यक्तित्व लक्षणों एवं समायोजन में सह–सम्बन्ध का अध्ययन'' किया। जिसका मुख्य उद्देश्य अध्यापकों में विद्यमान आध्यात्मिक बुद्धि, समायोजन तथा

व्यक्तित्व विशेषकों का पता लगाना एवं लिंगवार तथा क्षेत्रवार तुलना करना था। न्यादर्श के रूप में 160 शिक्षकों का चयन किया गया। सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। शोध निष्कर्षों में पाया गया कि जो अध्यापक आध्यात्मिक दृष्टि से बुद्धिमान है, उनका समायोजन भी अच्छा होता है। साथ अध्यापकों में जैसे–जैसे स्वजागरूकता बढ़ती है वैस–वैसे आर्थिक समायोजन भी बढ़ता है तथा वे अध्यापक जो मूल्यों में आस्था रखते हैं उनका समायोजन भी अच्छा होता है। कुल आध्यात्मिक बुद्धि का विद्यालयी वातावरण, व्यक्तिगत समायोजन, सामाजिक समायोजन तथा कार्य दशाओं व कार्यभार के साथ धनात्मक सार्थक सहसम्बन्ध है। इससे स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक दृष्टि से बुद्धिमान अध्यापक विद्यालयी वातावरण, व्यक्तिगत समायोजन, सामाजिक समायोजन तथा कार्यदशाओं व कार्यभार के साथ आसानी से स्वयं को समायोजित कर लेते हैं।

14. **Dr. P. Usha (2007)** ने *''संवेगात्मक समायोजन व बालक की पारिवारिक स्वीकारिता का उपलब्धि के साथ सहसंबंध का अध्ययन''* किया गया जिसके पूर्ण न्यादर्श से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि संवेगात्मक समायोजन व पारिवारिक स्वीकार्यता का गणित उपलब्धि के साथ सकारात्मक सहसंबंध हैं। यह भी पाया गया कि बालक–बालिकाओं का पारिवारिक स्वीकार्यता व उपलब्धि भिन्न हैं किन्तु संवेगात्मक समायोजन समान हैं। किन्तु ग्रामीण व शहरी बालकों के संवेगात्मक समायोजन पारिवारिक स्वीकार्यता व गणित में उपलब्धि भिन्न–भिन्न पायी गयी।

15. **Kumar, Fulwariya Rajesh (2008)** ने *'आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के मध्य समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'* किया गया जिसके शोध निष्कर्ष में पाया गया कि आवासीय

एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के मध्य शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

16. **Nanda, A.N. (2009)** ने *''किशोर बालिकाओं की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं एवं समायोजन पर अध्ययन''* किया जिसके निष्कर्ष के अन्तर्गत पाया गया कि किशोर बालिकाओं में परीक्षा के प्रति चिन्ता बनी रहती हैं, क्योंकि उनका सामाजिक स्तर सफलता पर निर्भर करता हैं। माता–पिता की दमनात्मक अभिवृति तथा लड़कियों की परिपक्वता प्राप्त करने की स्थिति में माता–पिता की अत्यधिक निगरानी भी समायोजन में समस्या उत्पन्न करती हैं।

17. **Deepshika & Bhanot, Suman (2009)** ने *''पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र की किशोरियों के सामाजिक समायोजन में पारिवारिक वातावरण की भूमिका का अध्ययन''* किया जिसके निष्कर्ष से ज्ञात होता हैं कि पारिवारिक वातावरण का प्रभाव निम्न क्षेत्रों में पड़ता हैं–

(1) ग्रहण करने व देखभाल करने में

(2) गत्यात्मक पुर्नसंरचना करने में

(3) किशोरियों के सामाजिक समायोजन पर स्वतंत्रता व नियंत्रण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं।

18. **उपाध्याय, संतोष (2009)** ने *''शिक्षक महाविद्यालय में अध्ययनरत सामान्य व अनुसूचित जाति की छात्राओं के समायोजन एवं दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन''* विषय पर शोध कार्य किया, शोध का मुख्य उद्देश्य सामान्य व अनुसूचित जाति की छात्राओं के समायोजन एवं दुश्चिन्ता का का पता लगाना। निष्कर्ष :– शोध निष्कर्ष में पाया गया कि अनुसूचित जाति की छात्राओं का शैक्षिक समायोजन सामान्य जाति की छात्राओं की तुलना में अच्छा पाया गया साथ ही अनुसूचित जाति की छात्राओं में सामान्य जाति की छात्राओं की तुलना में अधिक दुश्चिंता पायी गयी।

19. **सिंह, महेश कुमार (2009)** ने *''उच्च व निम्न वैज्ञानिक मनोवृत्ति वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, स्वधारणा एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''* किया, जिसका मुख्य उद्देश्य उच्च व निम्न वैज्ञानिक मनोवृत्ति वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, स्वधारणा एवं समायोजन को ज्ञात करना था। इसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि उच्च व निम्न वैज्ञानिक मनोवृत्ति वाले विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है। उच्च वैज्ञानिक मनोवृत्ति वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, स्वधारणा एवं समायोजन अच्छा पाया गया है जबकि निम्न वैज्ञानिक मनोवृत्ति वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, स्वधारणा एवं समायोजन निम्न स्तर का पाया गया।

20. **रावल, उपेन्द्र (2010) :** *''अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्राध्यापकों के समायोजन, स्वसामर्थ्य तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।''*

उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के छात्राध्यापकों की समायोजन समस्याओं का पता लगाना।
2. अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के छात्राध्यापकों की समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों का समायोजन अच्छा पाया गया है तथा अनुसूचित जनजाति के छात्राध्यापकों का समायोजन औसत स्तर का प्राप्त हुआ है। अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के छात्राध्यापकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि दोनों का समायोजन औसत स्तर का रहा है। समग्र समायोजन के आधार पर दोनों ही समूह एक जैसे ही है।

21. **चौधरी, कैलाश चन्द्र (2011)** ने *''अध्यापकों की संगठनात्मक प्रतिबद्धता का उसके व्यक्तित्व गुणों तथा सामंजस्य से सम्बन्ध का अध्ययन''* किया, जिसका मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के सामंजस्य का अध्ययन करना था। सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। शोध निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि अध्यापकों में व्यावसायिक असंतुष्टि, सांवेगिक अस्थिरता, असुरक्षा की भावना, अपर्याप्त आय, सेवा सुरक्षा का अभाव, छात्रों में फैली अनुशासनहीनता, संस्था प्रधान का पक्षपात पूर्ण रवैया आदि ऐसे कारण है जो अध्यापकों में कुसमायोजन के लिए उत्तरदायी है। सामंजस्य की समस्याएं व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है साथ ही व्यावसायिक एवं सामाजिक क्षेत्रों को भी प्रभावित करती है।

22. **पुरोहित, मिट्ठूलाल (2016)** ने *''राजस्थान सरकारी सेवा में समायोजित अनुदानित संस्थाओं के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, समायोजन एवं समस्याओं का अध्ययन''* किया। जिसका मुख्य उद्देश्य सरकारी सेवा में समायोजित अनुदानित शिक्षकों के समायोजन एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना। न्यादर्श के तौर पर 800 शिक्षकों का चयन किया गया तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि सरकारी सेवा में अनुदानित शिक्षकों के समायोजन व कार्यसंतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। सरकारी सेवा में समायोजित महिलाकर्मी शिक्षक पारिवारिक सामाजिक, आर्थिक, व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक तथा वातावरण क्षेत्रों में पुरूषकर्मी शिक्षकों की अपेक्षा ज्यादा समायोजित पायी गयी तथा उनकी कार्य संतुष्टि भी औसत स्तर की प्राप्त हुई। कार्यस्थल पर अपने वातावरण के अनुसार दोनों समूह समायोजित कर लेते हैं। सरकारी सेवा में समायोजित अनुदानकर्मी समग्र रूप से समाज में सम्मान व अपने कार्य से संतुष्ट पाये गये है।

2.4.2.2 विदेशों में समायोजन से सम्बन्धित किए गए शोध कार्य :–

1. **ग्रीन्स डी.एन. (1998)** *"Students Failure and Adjustment."* के अध्ययन का उद्देश्य छात्रों के शैक्षिक क्षेत्र में असफल होने के कारणों का पता लगाना एवं सामाजिक संस्कारों के कारण उनके व्यवहारों में अन्तर होने वाले कारणों का पता लगाना। जिसमें न्यादर्श के अन्तर्गत **715 छात्रों** छात्रों का चयन किया गया जिनका विभिन्न सामाजिक एवं बौद्धिक स्तर के विभिन्न समायोजन पर छात्रों की जांच की गई। उन्होंने निष्कर्ष में पाया कि असमायोजित व्यक्तित्व का शैक्षणिक स्तर निम्न रहा है। इन छात्रों का व्यवहार भी संतोषप्रद रहा है।

2. **ये जिपेक्ग (2003)** ने *''समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''* किया। जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के स्तर का पता लगाना था। शोध निष्कर्ष में अनुसंधानकर्ता ने पाया किया असमायोजित व्यक्तित्व के कारण शैक्षिक स्तर ऊँचा रखने में असफल रहते हैं तथा इनका व्यवहार भी असंतोषजनक रहता है।

3. **थामस स्मित (2004)** ने *''शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन''* किया। संयुक्त राज्य अमेरिका के छात्रों के शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करके यह ज्ञात किया गया कि निम्नलिखित कारक सामंजस्य को प्रभावित करते है – उम्र, वैवाहिक स्थिति, शैक्षिक वर्गीकरण, पहले का रोजगार, शहरीकरण, महाविद्यालय का प्रकार, अध्ययन की कलाविधि आदि शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करते है।

4. **व्यबांक टाटी (2005)** ने *''व्यक्तिगत समायोजन एवं पारिवारिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन''* किया। जिसका मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत समायोजन एवं पारिवारिक समायोजन समबन्धी समस्याओं का अध्ययन करना था। शोध निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि जो

शिक्षार्थी उच्च घराने के आते हैं वे अपने व्यक्तित्व को सरलता से समायोजित कर लेते हैं। जबकि भिन्न वर्ग वाले छात्र शारीरिक एवं सामाजिक स्वतंत्रता अधिक प्राप्त कर लेते है। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि छात्रों में समायोजन स्तर बहुत उच्च स्तर का होता है।

5. **Thakkar, Kanheyalal (2005)** ने *''माध्यमिक स्तर के छात्रों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''* किया जिसमें न्यादर्श के रूप में 160 छात्रों का चयन किया गया तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया तथा शैक्षिक समायोजन, अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य भी धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

6. **Petra Hampal & Franz Peterman (2006)** ने *''किशोरों मे आकस्मिक अन्तः वैक्तिक दबाव, सहनशीलता तथा मनोवैज्ञानिक समायोजन का प्रारम्भिक व मध्यस्थ किशोरो में उनके प्रभाव का अध्ययन''* किया जिसके निष्कर्ष यह प्राप्त हुये है कि शोध का मूल्यांकन बहुआयामी पद्धति आधारित हैं तथा यह सुझाव प्रेक्षित करता हैं कि प्रारम्भिक रक्षात्मक कार्यक्रम अन्तरिम बाल्यावस्था के दौरान प्रेक्षित कर देने चाहिए।

7. **जिडेना रूजेलोवा (2007)** ने *"Adjustment Problem Diamension in Slovak Adolescents"* पर अध्ययन किया जिसका मुख्य उद्देश्य 15 वर्ष तक की किशोर बालिकाओं की समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना। शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि असामाजिक व्यवहार, माता–पिता के साथ व्यवहार तथा समूह के साथ व्यवहार बालक व बालिकाओं में समान पाया गया, भावनात्मक समस्याऐं और चिन्ताऐं बालक एवं बालिकाओं में समान रूप से प्रभाव डालती हैं जबकि निराशावादी भाव बालकों की तुलना में बालिकाओं में अधिक पाया गया हैं।

8. **सेवानी, डॉ. अशोक (2015)** : *''शहरी व ग्रामीण किशोर विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि एवं समायोजन कारकों के प्रभाव का अध्ययन''* विषय पर शोध कार्य किया। जिसका मुख्य उद्देश्य शहरी व ग्रामीण किशोर विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि व समायोजन कारकों के बीच सहसम्बन्ध का पता लगाना है। न्यादर्श के रूप में कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया, जिससे निष्कर्ष प्राप्त होते हैं कि शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि एवं समायोजन कारकों के मध्य सहसम्बन्ध पाया जाता है। लैंगिक अनुपात के आधार पर शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन कारकों में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया। शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों में ज्यादा समायोजन पाया गया है।

9. **व्यास, डॉ. शीतल (2015) :** *''उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन''* विषय पर शोध कार्य किया। जिसका मुख्य उद्देश्य उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की समयोजन क्षमता का पता लगाना है। न्यादर्श के रूप में 400 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता सार्थक अन्तर होता है। उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का स्तर निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया है।

2.5 शोध निष्कर्ष :–

इस शोध उपागम के अन्तर्गत, मापने योग्य सीमित स्थितियों का वर्णन किया जाता हैं, इस उपागम में यह अपेक्षा रहती हैं कि यह न तो कोई निर्णय देता हैं और न ही कथनों का मूल्यांकन या गुणों की व्याख्या करता हैं। इस

भाग में केवल वर्णन होता हैं। इस शोध उपागम में सूचनाओं को एक भी करना और किसी आधार पर जितने भी आवश्यक समूह बनाए जा सकते हैं। इस पर जोर रहता हैं और इन सभी समूहों में तुलना की जाती हैं। अन्य सभी पक्ष गौण रहते हैं। मूल्यांकन उपागम में कुछ कसौटियाँ एवं मानकों का प्रयोग कर किसी समस्या से सम्बन्धित तथ्यों का मूल्यांकन किया जाता हैं। सामान्यतया ये मूल्यांकन अच्छा, बुरा, सफल, असफल आदि के रूप में होता हैं।

2.6 उपसंहार :–

उपरोक्त शोध अध्ययनों का अन्वेषण करने से यह बात स्पष्ट होती हैं कि किशोर मनः स्थिति के अनुशीलन में शिक्षा जगत का व्यापक ध्यान हैं। इसकी शैक्षिक उपलब्धि की उच्चता, उच्च आकांक्षाऐं, श्रेष्ठ समायोजन तथा दबावग्रस्त में आने वाली समस्याओं के समाधान के प्रति शिक्षा क्षेत्र में निरंतर अध्ययन और अनुसंधान कार्य सम्पादित हो रहा हैं। विद्यार्थियों के व्यवहार को समुन्नत और परिष्कृत करने के लिए सफल मार्गदर्शन एवं मेडिटेशन, योगासन प्रक्रिया सुचारू रूप से प्रारम्भ हो गयी हैं। वर्तमान में बेरोजगार विद्यार्थियों की आकांक्षाऐं निरंतर बलवती होती जा रही हैं। जिससे उसकी जिन्दगीं में भूचाल आना प्रारम्भ हो जाता हैं और वह अपना मानसिक संतुलन खो बेठता हैं जिससे वह दबाव ग्रस्त हो जाता हैं। यद्यपि इस स्थिति से बचने के सामाजिक व धार्मिक संस्कारों से परिपूर्ण शिक्षा व नीति सूक्तियों की आवश्यकता हैं जिसके माध्यम से बालकों के अन्तर्मन को परिष्कृत किया जा सकता हैं। वर्तमान में कोचिंग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों के दबाव एवं समायोजन में आने वाली समस्याओं के व्यापक अनुसंधान की आवश्यकता भी सामने आती हैं क्योकि आज का प्रशिक्षणार्थी अपने व्यक्तिगत संवेगो की असफलता से प्रभावित हो रहे है। अपनी असफलता, हताशा एवं उदासीनता के कारण प्रशिक्षणार्थी अपने परिवार, मित्र व समाज के साथ समायोजित नही हो पा रहे हैं। आकांक्षाओं एवं इच्छाओं के भयंकर द्वन्द में बालक अपनी मनोरूचियों को समझ नही पाते हैं।

परिणाम स्वरूप प्रशिक्षणार्थी परिवार, व्यवसाय, शिक्षा व समाज के सम्पूर्ण वातावरण के साथ असमायोजित हो जाते हैं जिससे वह दबाव ग्रस्त होकर आत्महत्या करने का प्रयत्न करते हैं। प्रशिक्षणार्थी में RPSC परीक्षा दबाव से संबन्धित समस्याओ पर किये गये अध्ययनो से ज्ञात होता हैं कि यह समस्या सम्पूर्ण भारत में ही नही अपितु विश्व में भी भयानक अन्धकार की तरह व्याप्त हो रही हैं। अतः इस समस्या को दूर करने हेतु कुछ ऐसे ठोस कदम उठाये जाने चाहिए ताकि समय रहते लाखो बेरोजगार प्रशिक्षणार्थियों के जीवन को कालकल्वित होने से बचाया जा सके।

संबंधित शोध साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि अभी तक इस प्रकार का कोई शोध कार्य नहीं हुआ हैं। इसलिए शोधकर्त्री ने इस विषय पर शोध कार्य करना उचित समझा।

तृतीय परिच्छेद

शोध विधि, उपकरण, न्यादर्श

एवं प्रविधि

तृतीय परिच्छेद

शोध विधि, उपकरण, न्यादर्श एवं प्रविधि

3.1 प्रस्तावना :–

अनुसंधान प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण कड़ी अनुसंधान सामग्री का संग्रह हैं। किसी भी अनुसंधान की सफलता उसकी योजना पर निर्भर करती हैं। शोध के लिए आवश्यक विधि, उपकरण एवं न्यादर्श चयन की पूर्व योजना तैयार करना शोध उपागम के अन्तर्गत आता हैं। एक सुनियोजित योजना शोधकर्त्री के मार्ग में आने वाली अनेक बाधाओं पर विजय प्राप्त करा देती हैं। किसी भी शोध कार्य के प्रभावशाली, सुनिश्चित, व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध अध्ययन हेतु विधि, उपकरण एवं न्यादर्श का निश्चित एवं सुस्पष्ट होना अत्यन्त आवश्यक हैं। शोध की विधियाँ एवं उपकरणों में जितना घनिष्ठ संबंध होगा समस्या के विश्लेषण से उतने ही अधिक विश्वसनीय एव वैध निष्कर्ष निकलेंगे। विधि, उपकरण एवं प्रविधि अनुसंधान रूपी भवन की नींव हैं। जिनकी उपस्थिति में एक अनुसंधानकर्त्री, अनुसंधानरूपी भवन का निर्माण करती हैं। किसी अनुसंधान के लिए अनुसंधानकर्त्री को एक या एक से अधिक विधियों तथा उपकरणों का प्रयोग करना होता हैं। बिना उपयुक्त विधि तथा उपकरणों के शोधकार्य वांछित परिणाम नही दे सकता। अतः यह कहा जा सकता हैं कि विधियों एवं उपकरण वह व्यूहरचना हैं जिनके मार्गदर्शन से शोधकर्त्री अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर लेती हैं।

प्रस्तुत अध्याय में इस अनुसंधान कार्य हेतु प्रयुक्त विधि, प्रविधि, उपकरण एवं न्यादर्श चयन की विस्तृत जानकारी दी गई हैं। शोध विधि की जानकारी, अनुसंधान में दत्त संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरणों, उनके निर्माण, मानकीकरण, उपकरण किन न्यादर्श इकाईयों के लिए प्रयोग में लाए गये व चयनित न्यादर्श विधि का अनुप्रयोग आदि का विस्तृत वर्णन इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया हैं।

3.2 शोध विधि :–

शैक्षिक अनुसंधान की अनेक विधियाँ होती हैं। अध्ययन विधि का चयन शोधकार्य की सार्थकता, निष्कर्षों की वैधता तथा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक होता हैं। शोधकार्य के लिए प्रयुक्त होने वाली प्रमुख विधियाँ निम्न हैं – 1. ऐतिहासिक विधि 2. प्रायोगिक विधि 3. सर्वेक्षण विधि 4. वैयक्तिक अध्ययन विधि 5. वर्णनात्मक अनुसंधान विधि 6. क्रियात्मक अनुसंधान विधि।

प्रस्तुत समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया हैं। सर्वेक्षण विधि व्यापक रूप में प्रयोग की जाने वाली विधियों में से एक हैं जिसका उपयोग स्थानीय जिला संभाग, राज्य, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन करने के लिए किया जाता हैं।

3.2.1 सर्वेक्षण विधि :–

सर्वेक्षण का तात्पर्य ऐसे अध्ययनो से हैं जिसमें किसी स्थान पर जाकर कुछ अवस्थाओं या परिस्थितियों से संबन्धित सही सूचनाओं का संकलन किया जाता हैं। प्रायः इस विधि का प्रयोग सामाजिक विज्ञान के विषयों में किया जाता हैं। शोधकर्त्री स्वयं अपने शोधकार्य क्षेत्र में जाकर शोधकार्य के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। यह विधि उत्तम रूप से परीक्षित एवं समाज सर्वेक्षण हेतु प्राचीन पद्धति हैं।

किसी भी क्षेत्र मे सुधार लाने के लिए हमें उस क्षेत्र की तात्कालिक परिस्थितियो की जानकारी होना आवश्यक हैं। वह आर्थिक क्षेत्र हो या सामाजिक क्षेत्र हो, उन तथ्यों को जानने की विधि सर्वेक्षण विधि कहलाती हैं। अतः वर्तमान समय में अनुसंधानकर्त्री द्वारा

''राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढतें दबाव एवं समायोजन का अध्ययन'' का मापन करने हेतु सर्वेक्षण विधि ही उपयुक्त समझी गयी।

यह वर्तमान व प्रयत्नों से सम्बन्धित है जो सम्बन्धित है जो अनुसंधान के अन्तर्गत घटना एवं तथ्य की स्थिति को निर्धारित करते हैं। इस विधि को पुनः चार वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है :–

(अ) विवरणात्मक (ब) विश्लेषणात्मक

(स) विद्यालय सर्वेक्षण (द) सामाजिक

3.2.2 सर्वेक्षण विधि की परिभाषा :–

एस.पी.सुखिया के अनुसार –''सर्वेक्षण उपागम उस प्रदत्त को एकत्रित करने और विश्लेषण करने की विधि हैं जो बहुत से ऐसे उत्तरदायित्वों को संकलित किया जाता हैं जो एक एक सुनिश्चित जनसमुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं।''

मोर्स के अनुसार ''सामाजिक सर्वेक्षण कुछ परिभाषित उद्देश्यों के लिए विधि विशेष सामाजिक परिस्थिति समस्या या जनसंख्या का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप का विश्लेषण करने की केवल एक पद्धत्ति है।''

हैरिसन के अनुसार ''सामाजिक सर्वेक्षण एक सहकारी प्रयत्न है जिसके अन्तर्गत किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में पायी जाने वाली सामाजिक दशाओं तथा समस्याओं के अध्ययन और विश्लेषण के लिए वैज्ञानिक पद्धत्ति का उपयोग किया जाता है।''

3.2.3 सर्वेक्षण विधि की विशेषताएँ :–

सर्वेक्षण विधि की निम्नलिखित विशेषताएँ है :–

1. सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत एक ही समय में बहुत सारे लोगों के बारे में आंकड़े प्राप्त किये जाते हैं।
2. यह आवश्यक रूप से इसकी प्रकृति प्रतिखण्डात्मक होती है।
3. इसका सम्बन्ध व्यक्तियों की विशेषताओं से नहीं होता है।

4. इसका संबंध व्यक्तियों की विशेषताओं से नहीं होता है।
5. इसके अन्तर्गत स्पष्ट पारिभाषित समस्या पर कार्य किया जाता है।
6. इसके लिए विशिष्ट एवं कल्पनापूर्ण नियोजन आवश्यक होता है।
7. इसके आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण में सावधानी आवश्यक होती है।
8. सर्वेक्षण जटिलताओं से अधिक परिवर्तनशील होते हैं।
9. यह वैज्ञानिक सिद्धान्तों के संगठित ज्ञान को विकसित नहीं करता है।
10. यह ज्ञान में वृद्धि करता है क्योंकि जो कार्य किया जाये उसके लिये अपेक्षित प्रदत्त एकत्रित किये जाते हैं।
11. यह भविष्य के विकास के क्रम में सूचना देता है।
12. यह वर्तमान नितियों का निर्धारण करता है तथा वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

3.2.4 सर्वेक्षण विधि के उद्देश्य एवं उपयोग :–

अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि के उद्देश्य एवं उपयोगिता इस प्रकार है – यद्यपि अनुसंधान में सर्वेक्षण में सर्वेक्षण विधि का मुख्य उद्देश्य यह होता है – ''वर्तमान में इनका रूप क्या है? अर्थात् समस्या या घटना का विवरण करता है लेकिन बहुत से सर्वेक्षण केवल वर्तमान स्थितियों के विवरण की सीमा से भी बाहर होते हैं। उदाहरण के लिए पाठ्यक्रमों का सर्वेक्षण न केवल वर्तमान पाठ्यक्रम वर्तमान या घटना का विवरण करता है लेकिन बहुत से सर्वेक्षण केवल वर्तमान स्थितियों का सर्वेक्षण न केवल वर्तमान पाठ्यक्रम की अच्छाईयों या निर्बलताओं की सूचनाओं के बारे में सहायता करती है अपितु परिवर्तन लाने के लिए सुझाव भी दे सकती है।

विवरणात्मक सर्वेक्षण या सामान्य सर्वेक्षण अनुसंधानकर्ता का प्रथम कार्य यह है जिससे वह अधिक प्रखरता नियन्त्रण व वस्तुपरक विधि प्रयोग में ला सकें।

विवरणात्मक सर्वेक्षण अध्ययन मानव व्यवहार से संबंधित बहुमूल्य ज्ञान का सीधा साधन एवं स्त्रोत है। विवरणात्मक अध्ययन विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना बनाने में हमारे लिए सहायक है, विद्यालय जनगणना शायद विवरणात्मक विधि की शैक्षिक योजना में सबसे अधिक उपयोगिता है। विद्यालय सर्वेक्षण विद्यालय की विभिन्न पक्षों की समस्याओं के समाधान में सहायक है अर्थात् विद्यालय भवन, विद्यालय रख रखाव, शिक्षक वर्ग पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों व अधिगम के उद्देश्य आदि सम्मिलित किये जाते हैं।

3.2.5 सर्वेक्षण से प्राप्त की जाने वाली सूचनाएँ :–

सर्वेक्षण विधि या सर्वेक्षण अध्ययन से तीन प्रकार की सूचनाएँ एकत्रित की जाती है :–

1. वर्तमान स्थिति क्या है?
2. हम क्या चाहते है?
3. कैसे उन्हें पा सकते हैं?

वर्तमान में क्या है? इससे सम्बन्धित सूचनाएँ वर्तमान स्थिति की महत्वपूर्ण पक्षों के अध्ययन व विश्लेषण से प्राप्त की जा सकती है। हम क्या चाहते हैं? उससे सम्बन्धित सूचनाओं आवश्यक वस्तुयें, लक्ष्य एवं उद्देश्यों के स्पष्टीकरण से प्राप्त होती है। सम्भवतया स्थितियों जो और कहीं वर्तमान में है या विशेषतः क्या इष्ट मानते हैं?

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी के सर्वे से बना है। सर्वे शब्द – Sur व Vear दो शब्दों के योग से बना है जिसका अर्थ Over तथा See है। अतः इसका शाब्दिक अर्थ 'किसी घटना को ऊपर से देखना' है।

इस प्रकार सर्वेक्षण अनुसंधान की एक विधि है जिसके तहत अनुसंधानकर्ता घटनास्थल पर जाकर घटना विशेष का वैज्ञानिक निरीक्षण करता है।

करलिंगर के अनुसार – *''सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक, वैज्ञानिक शोध की वह शाखा है जो जनसंख्या में से चयनित न्यादर्श का चुनाव कर सामाजिक व मनोवैाानिक कारकों से संबंधित घटनाओं के अस्तित्व व अन्तः संबंधों का अध्ययन करती है।''*

(Kerliger, F (1986): Fundntions of behavioural research Hole Rinehar & Winston P. 197)

कार्ल गिर्यसन के शब्दों में – *''सर्वेक्षण से आशय उन सभी क्रियाओं से हैं जो सर्वेकर्ता द्वारा स्वयं घटनासथल पर जाकर संपादित किया जाता है।''*

(Element of education research, MC Grew Hill Book C Inc, New York (1963) P. 87)

उपरोक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि सर्वेक्षण विधि में सर्वेक्षण द्वारा सूची संकलित की जाती है जिसके आधार पर प्राप्त निष्कर्षों व गणनाओं को तर्कपूर्ण ढंग प्रस्तुत किया जाता है अतः यह विधि बहुत उपयोगी व महत्वपूर्ण है।

3.2.6 सर्वेक्षण विधि के प्रमुख सोपान :–

1. समस्या को स्पष्ट व निश्चित रूप प्रदान करना।
2. उद्देश्यों को पूर्ण रूपेण निर्धारित करना।
3. प्रतिदर्श चयन की व्याख्या करना।
4. विश्वसनीय, उपयोगी व वैद्य उपकरणों व प्रविधियों का चयन करना।

5. लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु, संभावित कारणों की खोज करने के लिए, विशेषज्ञों की राय हेतु आधार बनाना।

6. सर्वेक्षण कार्य की विधियों का निर्धारण व आंकड़ों का संकलन करना।

7. प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण व उन्हें सारणीबद्ध कर तथ्यों की आलेख अभिव्यक्ति करना।

इस प्रकार सर्वेक्षण विधि के तहत परिकल्पना निर्माण, तथ्यों का सारणीकरण, वर्गीकरण, मापन तथा मूल्याकंन निकालना इत्यादि चरण सम्मिलित है।

3.2.7 सर्वेक्षण विधि के चयन के कारण :–

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग करना उचित समझा क्योंकि यह विधि किसी क्षेत्र की तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी देती हैं। जिनके विश्लेषण से हम उन कारकों का पता लगा सकते हैं जो उस स्थिति के लिए उत्तरदायी हैं। इस प्रकार यह विधि हमें कार्य–कारण सम्बन्धों को समझाने में सहायता करती हैं। शोध न्यादर्श बडा होने के कारण तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढतें दबाव एवं समायोजन को जानने के लिए शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त समझा। शोध की परिस्थितियों को देखते हुए शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

3.3 न्यादर्श :–

प्रत्येक शोध अध्ययन का एक क्षेत्र होता है जिसे समष्टि अथवा जनसंख्या कहते है। सामाजिक अध्ययनों में जनसंख्या से आंकड़े एकत्रित करना कठिन होता है, इसलिए जनसंख्या में से कुछ ऐसे अंशों का चयन किया

जाता है जिनमें जनसंख्या की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व होता है। ऐसे अंश को न्यादर्श कहते हैं। इस न्यादर्श की सहायता से शोध कार्य सम्पन्न किया जाता है।

3.3.1 न्यादर्श का अर्थ :–

पी.वी. जुंग (1954) के शब्दों में ''एक न्यादर्श अपने समस्त समूह का लघुचित्र होता है।''

जे.डब्ल्यू. बेस्ट (1977) के अनुसार ''न्यादर्श चयन एक प्रभावोत्पादक छोटे समूह का एक बड़ी संख्या में से चयन करने की प्रविधि को कहा जाता है। उस न्यादर्श हेतु अपेक्षित आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है इस तरह पूरी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व हो जाता है।''

डॉ. एच.के. कपिल (1995) ने न्यादर्श का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''सांख्यिकीय निरन्तरता के नियमों के अनुसार यदि व्यापक जनसंख्या में से कुछ इकाइयों को यादृच्छिक आधार पर चयन किया जाए तब इस प्रकार से चयन की गई इाकइयां सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताओं का प्रतिनिधि मानी जाती है। ऐसी ही व्यापक संख्याओं में स्थिरता के नियम के अनुसार जनसंख्या का स्वरूप अन्य समय में परिवर्तित नहीं होता है। इस प्रकार न्यादर्श के आधार पर सम्बन्धित जनसंख्या का अध्ययन पर्याप्त मात्रा में विश्वसनीय एवं वैज्ञानिक होता है।''

गुड एवं बार (1959) ने न्यादर्श के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा ''न्यादर्श के द्वारा प्रत्येक दृष्टिकोण में विश्लेषण करने एवं कुछ समस्याओं को गहराई से अध्ययन करने में सुविधा हो जाती है।''

न्यादर्श किसी भी अनुसंधान की आधारशिला है। यह आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होंगे। किसी भी अनुसंधान के लिए यह संभव नही हैं कि वह

पूरी जनसंख्या के सभी व्यक्तियों को अपनी खोज का विषय बना सके। इसलिए जनसंख्या मे से कुछ इकाइयों का चयन किया जाता हैं। जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करे और जिन पर किये गये अध्ययन के आधार पर समग्र के निष्कर्ष निकाले जा सके। अध्ययन के लिये चयनित व्यक्तियों के ऐसे समूह को न्यादर्श कहते हैं।

3.3.2 शोध कार्य में प्रयुक्त न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन की पूर्ति हेतु शोधकर्त्री ने न्यादर्श चयन हेतु शैक्षणिक नगरी कोटा के चार व्यावसायिक कोचिंग संस्थाओं में अध्ययनरत आर.पी.एस.सी. के विद्यार्थियों का चयन किया हैं। शैक्षणिक नगरी के व्यावसायिक कोचिंग संस्थानों के रूप में सफल क्लासेज, साकार क्लासेज, काव्य क्लासेज, एडवांस क्लासेज का चयन किया। प्रत्येक कोचिंग संस्थान से 100–100 पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस प्रकार कुल न्यादर्श के रूप में 600 पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का चयन किया गया। तदुपरान्त उन बालकों पर क्रमशः दबाव प्रमापनी, समायोजन अनुसूची सम्बन्धित प्रश्नावली का प्रशासन किया गया।

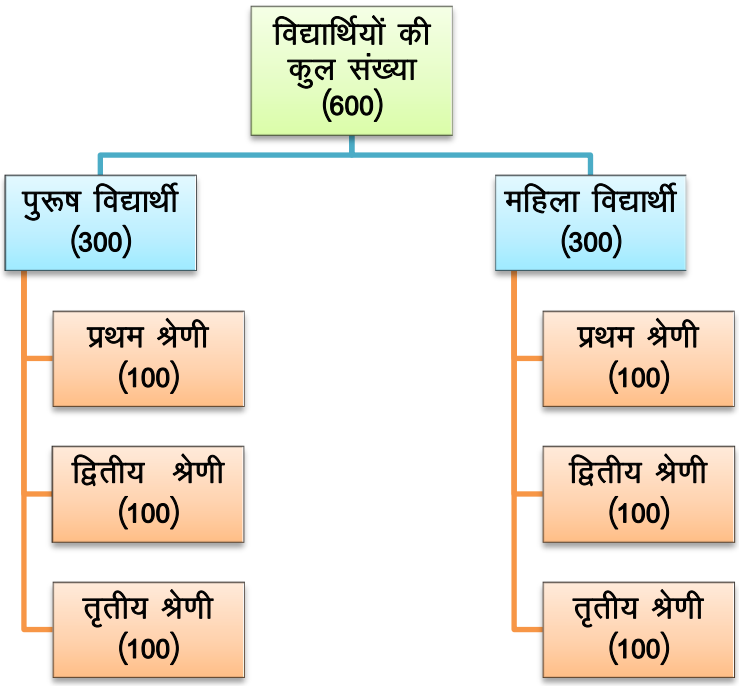

3.4 शोध उपकरण :–

उपकरणों को अनुसंधान का मुकुट कह दिया जाए तो अतिशयोक्ति नही होगी क्योंकि इसके अभाव में विभिन्न प्रकार के दत्तों का संकलन असंभव हैं। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीन दत्त संकलन हेतु नवीन क्षेत्र का उपयोग करते हुए कतिपय साधनों की आवश्यकता होती हैं। इन साधनों को ही शोध उपकरण कहते हैं। अतः उपकरण अनुसंधान रूपी भवन के लिए नींव की ईंट हैं जिसकी अनुपस्थिति में एक अनुसंधानकर्त्री अनुसंधानरूपी भवन का निर्माण नहीं कर सकता।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट (1977) ने उपकरणों को ''एक बढई के सन्दूक में पड़े औजारों के उपयोग की भाँति प्रत्येक अनुसंधान में विशिष्ट परिस्थिति में उपकरण का उपयुक्त प्रयोग करना बताया हैं।''

3.4.1 शोध उपकरणों के प्रकार :–

प्रस्तुत शोध में अध्ययन हेतु मानकीकृत एवं स्वनिर्मित दोनों प्रकार के उपकरणों का चयन किया गया हैं :–

1. **मानकीकृत उपकरण :–**

(अ) **समायोजन प्रश्नावली**–कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तर को जानने हेतु शोधकर्त्री ने **आर. पी. सिंह (पटना)** व **ए. के. पी. सिन्हा (पटना)** द्वारा निर्मित **एडजेस्टमेंट इन्वेटरी फॉर कॉलेज स्टूडेन्टस** मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया हैं।

2. **स्वनिर्मित उपकरण :–**

(अ) **दबाव प्रमापनी** – शोधकर्त्री ने कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के दबाव स्तर को जानने के लिए स्वनिर्मित दबाव प्रमापनी का प्रयोग किया हैं।

(ब) **साक्षात्कार अनुसूची** – शोधकर्त्री ने कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के दबाव स्तर को जानने के लिए संस्था निदेशकों एवं अध्यापकों के साक्षात्कार हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया हैं।

3.4.2 दबाव प्रमापनी की निर्माण प्रक्रिया –

1. प्रथम सोपान : संबन्धित साहित्य का अध्ययन :–

दबाव प्रमापनी का निर्माण करने से पूर्व शोधकर्त्री ने निम्नांकित संबन्धित साहित्य का अध्ययन किया।

i) Sixth Survey of Research in Education - Edited by Sharma 2006.

ii) Fifth survey of Research in Education - Buch M.B. 2006.

iii) Second survey of Research in Education - Buch M.B. ,1979.

iv) Indian Educational abstracts - Edited by NCERT 2007,2008,2009.

v) International Dissertation abstract, 2001, 2005, 2007, 2010.

vi) Ph.D. Thesis and M.Ed. Dissertation.

vii) Journal of Education and Psychology.

viii) Asian Journal of Psychology.

ix) Bhartiya Adhunik Shiksha.

x) Social Psychology Basic – S karlingar

xi) Manic Depressive Psychosis - Dr. M.L. Agrawal

xii) दबाव एक परिचय–डॉ. एम.एल अग्रवाल

xiii) शारीरिक एवं मानसिक तनाव – डॉ. सरूपसिंह मरवाह

2. द्वितीय सोपानः क्षेत्रों का चयन :–

कोचिंग विद्यार्थियों में दबाव के मापन हेतु संबन्धित साहित्य के अध्ययन के आधार पर क्षेत्रों का चयन किया गया। तत्पश्चात् अध्ययनों से प्राप्त क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया जो निम्नांकित हैं–

1. परीक्षा
2. साथियों से संबंध
3. कक्षा–कक्ष अन्तः क्रिया
4. अध्यापकों का व्यवहार
5. कोचिंग संस्थान का वातावरण
6. उचित एवं सार्थक सामग्री का अभाव
7. पुस्तकालय सुविधा का अभाव
8. पारिवारिक वातावरण
9. उचित निर्देशन का अभाव
10. सामाजिक वातावरण
11. असफलता, संवेगात्मक, व्यक्तिगत
12. मानसिक एवं शारीरिक दुर्बलता
13. आक्रामक व्यवहार
14. पश्चाताप / पछतावा
15. अनिद्रा / नींद में बाधा
16. थकावट / थकान
17. समाज से अलगाव
18. छात्रावास में सुविधाओं का अभाव

शोधकर्त्री ने उक्त क्षेत्रों की सूची तैयार कर अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे अनुभवी शिक्षाविद्ों एवं विषय विशेषज्ञों की राय जानने के लिए इनका एक प्रारूप तैयार किया। विशेषज्ञों के महत्वपूर्ण सुझावों के आधार पर प्रस्तुत शोधकार्य के लिए निम्नांकित क्षेत्रों का चयन किया गया। जो निम्न प्रकार से हैं –

1. सामाजिक क्षेत्र

2. आर्थिक क्षेत्र

3. व्यावसायिक क्षेत्र

4. पारिवारिक क्षेत्र

5. मनोवैज्ञानिक क्षेत्र

6. शैक्षिक क्षेत्र

3. तृतीय सोपानः कथनों का निर्माण :–

कोचिंग विद्यार्थियों के दबाव के प्रत्येक क्षेत्र से संबन्धित उपलब्ध विषयों का अवलोकन करने के पश्चात शोधकर्त्री ने संबंन्धित कथनों का निर्माण प्रारम्भ किया। कथनों के निर्माण करते समय यह ध्यान रखा गया कि छात्र किस प्रकार के दबाव का अनुभव करते हैं। प्रत्येक क्षेत्र लिए 12 कथनों का निर्माण किया गया। इस प्रकार कुल 72 कथनों का निर्माण किया गया। प्रत्येक कथन में प्रत्युत्तर प्राप्त करने के लिए पांच मान क्रम निर्धारित किये गये। जो निम्न प्रकार हैं–

1. पूर्णतया सहमत

2. सहमत

3. अनिश्चित

4. असहमत

5. पूर्णतया असहमत

4. चतुर्थ सोपानः विशेषज्ञों की राय :–

शोधकर्त्री द्वारा निर्मित उपकरण की 25 प्रतियाँ बनाकर विषय विशेषज्ञों को इस आशय के पत्र के साथ दी गयी कि वे दबाव के प्रत्येक क्षेत्र से संबन्धित कथनों के मूल्य एवं महत्व को देखते हुए कथनों

का मूल्यांकन करे। सभी विशेषज्ञों से अनुरोध किया गया कि विषय से संबन्धित कथनों पर सही एवं असम्बद्ध कथनों पर गलत का निशान लगा दे। ऐसे कोई कथन जिनकी भाषा स्पष्ट या अस्पष्ट हो उनमें संशोधन करने अथवा कोई कथन जो उपकरण में सम्मिलित करना हो सुझाव के रूप में प्रदान करे। इस प्रकार उनसे प्राप्त सुझावों के आधार पर कथनों का मूल्यांकन किया गया तथा जिन कथनों को 80 प्रतिशत से 100 प्रतिशत विषय विशेषज्ञों ने उपयुक्त बताया उन्हें उपकरण में सम्मिलित किया गया। विशेषज्ञों के सुझावानुसार कुछ कथनों व शब्दों की पुनरावृति, भाषागत त्रुटि, वाक्यांशों में आवश्यक सुधार, अर्थगत त्रुटि को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक क्षेत्र से 4 कथनों को अर्थात कुल 24 कथनों को हटाया गया इस प्रकार से चयनित कथनों की संख्या 48 रही। क्षेत्रवार कथनों की सूची निम्न प्रकार हैं–

सारणी संख्या 3.1

क्षेत्रवार कथनों की सूची

क्र.सं.	**दबाव प्रमापनी क्षेत्र**	**कथनों की संख्या**
1.	सामाजिक क्षेत्र	8
2.	आर्थिक क्षेत्र	8
3.	व्यावसायिक क्षेत्र	8
4.	पारिवारिक क्षेत्र	8
5.	मनोवैज्ञानिक क्षेत्र	8
6.	शैक्षिक क्षेत्र	8
	कुल कथनों की संख्या	**48**

5. पंचम सोपान : उपकरण का प्रथम प्रारूप :–

विशेषज्ञों की सहमति के आधार पर शोधकर्त्री द्वारा निर्मित उपकरण को कोचिंग लेने वाले 20 विद्यार्थियों को इस आशय से दिया गया कि कथनों की भाषा सम्बन्धी कठिनाई को दूर किया जा सके। किशोर विद्यार्थियों की कठिनाईयों एवं सुझावों को ध्यान में रखकर उपकरण का प्रारम्भिक प्रारूप तैयार किया गया।

6. षष्ठम सोपान : उपकरण का प्रशासन–

शोधकर्त्री द्वारा निर्मित उपकरण को कोचिंग में पढने वाले 100 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। उपकरण के प्रशासन से पूर्व छात्रों को आवश्यक निर्देश एवं उपकरण संबंधी जानकारी दी गई। स्वतन्त्र एवं मित्रवत् वातावरण में और शान्त मानसिक स्थिति में पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों ने अपने दबाव की अभिव्यक्ति निम्नांकित श्रेणी के अनुसार की–

सारणी संख्या 3.2

लिंकर्ट गणना

श्रेणी	मापन मूल्य
पूर्णतया सहमत	5
सहमत	4
अनिश्चित	3
असहमत	2
पूर्णतया असहमत	1

उपकरण प्रशासन के लिए पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का समान संख्या में चयन किया गया। परीक्षण प्राप्त अनुक्रियाओं का मापन करने के लिए लिंकर्ट गणना का प्रयोग किया गया।

7. सप्तम सोपानः पद विश्लेषण :–

पद विश्लेषण की प्रक्रिया उपकरण निर्माण की रीढ की हड्डी की तरह हैं। लिंकर्ट पद्धति में पद विश्लेषण के आधार पर कथनों को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने का प्रावधान होता हैं। पद विश्लेषण दृढ़ता की वह प्रक्रिया हैं जो कि उच्च एवं निम्न समूह में विभाजित करती हैं। पद का महत्व बताते हुए **गिलफोर्ड** (1985) ने लिखा हैं कि – ''उपकरण की अन्तिम रूप से रचना करने के पूर्व श्रेष्ठ पदो के चयन हेतु पद विश्लेषण विधि का प्रयोग अत्यन्त उपयोगी हैं। सम्पूर्ण उकपरण के विभिन्न गुण उसमें निहित पदों के गुणों पर निर्भर होते हैं। ये गुण हैं–मध्यमान, प्रसरण, फलांक, वितरण का रूप, विश्वसनीयता और वैधता आदि। उकपरण का प्रशासन एवं अंकन करने के बाद 280 विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर प्रत्येक पद का विश्लेषण किया गया। इसके लिए सर्वप्रथम सभी विद्यार्थियों के प्राप्तांको को घटते क्रम में लिखा। इसके पश्चात् दोनो छोर के 27 प्रतिशत विद्यार्थियों के प्राप्तांको को विश्लेषण के लिए लिया गया। इन विद्यार्थियों के प्राप्तांको की उच्च स्तर एवं निम्न स्तर के रूप नामकरण किया गया। उच्च स्तर एवं निम्न स्तर के 76,76 छात्रों के प्राप्तांको के मध्य परीक्षण कर प्रत्येक कथन का 't' मान ज्ञात किया गया। 't' का मान ज्ञात करने के लिए लिंकर्ट द्वारा दिए गए सूत्र का प्रयोग किया गया।

पद विश्लेषण सूत्र :–

$$t = \frac{\left(\bar{x}_n - \bar{x}_l\right)}{\sqrt{\frac{\Sigma\left(x_n - \bar{x}_n\right)^2 + \Sigma\left(x_l - \bar{x}_l\right)^2}{N(N-1)}}}$$

x_n = उच्च स्तर के किसी कथन पर प्राप्तांकों का मध्यमान

x_l = निम्न स्तर के किसी कथन पर प्राप्तांकों का मध्यमान

$$\Sigma(x_n - \bar{x}_n)^2 = \left[\Sigma f x_n{}^2 - \left(\frac{\Sigma f x_n}{N} \right)^2 \right]$$

$$\Sigma(x_1 - \bar{x}_1)^2 = \left[\Sigma f x_1{}^2 - \left(\frac{\Sigma f x_1}{N} \right)^2 \right]$$

N = आवृत्तियों का कुल योग

f = आवृत्ति

उक्त सूत्र के आधार पर प्रत्येक कथन का 't' मान ज्ञात किया गया।'t' मान वह मापन हैं जो उच्च एवं निम्न समूह में विभेदनशीलता को दिखाता हैं। साधारणतया df 150के लिए .05 स्तर के लिए 't' का मान 1.98 एवं .01 स्तर के लिए 't' का मान 2.61या इससे अधिक होने पर उच्च एवं निम्न समूह में सार्थक विभेदन क्षमता होती हैं। यहां उपकरण के प्रत्येक पद पर प्राप्त 't' का मान सारणी 3.3 में प्रदर्शित किया गया हैं। उपकरण के कथनों के चयन हेतु 't'' मान 1.98 या 2. 61 से अधिक लिया गया हैं। उन सभी कथनों का चयन किया गया जिनका 't' मान 1.98 या 2.61 से अधिक हैं।

8. अष्टम सोपानःउपकरण का अन्तिम रूप :–

पद विश्लेषण के पश्चात् अन्तिम रूप में उपकरण में उन सभी कथनों का चयन किया गया जिनका 't'मान अधिक पाया गया। कम 't 'मान वाले कथनों को उपकरण में से हटा दिया गया। इस प्रकार अन्तिम प्रारूप में 48 कथनों को सम्मिलित किया गया। चयनित कथनों को निम्नांकित सारणी में क्षेत्र अनुसार दर्शाया गया हैं :–

सारणी 3.3

(दबाव प्रमापनी) के प्रत्येक कथन का 'टी' मान

कथन संख्या	'टी' मान	विवरण	कथन संख्या	'टी' मान	विवरण	कथन संख्या	'टी' मान	विवरण
1.	3.15	स्वीकृत	26	2.45	स्वीकृत	51	2.72	स्वीकृत
2.	2.65	स्वीकृत	27	2.66	स्वीकृत	52	2.22	स्वीकृत
3.	2.47	स्वीकृत	28	2.68	स्वीकृत	53	2.29	स्वीकृत
4.	2.70	स्वीकृत	29	1.40	**अस्वीकृत**	54	2.12	स्वीकृत
5.	4.85	स्वीकृत	30	1.56	**अस्वीकृत**	55	1.40	**अस्वीकृत**
6.	2.43	स्वीकृत	31	2.67	स्वीकृत	56	1.56	**अस्वीकृत**
7.	1.13	**अस्वीकृत**	32	2.62	स्वीकृत	57	2.67	स्वीकृत
8.	0.40	**अस्वीकृत**	33	2.67	स्वीकृत	58	2.62	स्वीकृत
9.	1.20	**अस्वीकृत**	34	2.62	स्वीकृत	59	2.10	स्वीकृत
10.	1.15	**अस्वीकृत**	35	2.64	स्वीकृत	60	1.40	**अस्वीकृत**
11.	6.55	स्वीकृत	36	2.34	स्वीकृत	61	1.56	**अस्वीकृत**
12.	2.94	स्वीकृत	37	2.32	स्वीकृत	62	2.67	स्वीकृत
13.	3.09	स्वीकृत	38	2.91	स्वीकृत	63	2.62	स्वीकृत
14.	2.88	स्वीकृत	39	1.30	**अस्वीकृत**	64	1.40	**अस्वीकृत**
15.	2.62	स्वीकृत	40	2.81	स्वीकृत	65	1.56	**अस्वीकृत**
16.	2.92	स्वीकृत	41	4.80	स्वीकृत	66	2.67	स्वीकृत
17.	2.55	स्वीकृत	42	1.30	**अस्वीकृत**	67	2.62	स्वीकृत

18.	2.31	स्वीकृत	43	2.70	स्वीकृत	68	1.40	**अस्वीकृत**
19.	1.01	**अस्वीकृत**	44	2.87	स्वीकृत	69	1.56	**अस्वीकृत**
20.	1.40	**अस्वीकृत**	45	1.02	**अस्वीकृत**	70	2.67	स्वीकृत
21.	1.30	**अस्वीकृत**	46	2.83	स्वीकृत	71	2.62	स्वीकृत
22.	4.76	स्वीकृत	47	2.92	स्वीकृत	72	2.62	स्वीकृत
23.	2.95	स्वीकृत	48	0.90	**अस्वीकृत**			
24.	1.21	**अस्वीकृत**	49	3.52	स्वीकृत			
25.	1.32	**अस्वीकृत**	50	0.85	**अस्वीकृत**			

उपकरण की विश्वसनीयता –

उपकरणों का निर्माण किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा क्रियाओं के विभिन्न गुणों का मापन करने के लिए किया जाता हैं। विश्वसनीयता उपकरण का वह गुण हैं जो यह बताता हैं कि उपकरण कितनी सघनता के साथ मापन कर सकता जब कोई परीक्षण बार–बार उपयोग में लाये जाने पर एक–सा परिणाम देता हैं अर्थात प्राप्तांको की संगति या निश्चिता पायी जाये उसे विश्वसनीय माना जा सकता हैं जो कि बिना संदेह के दुबारा प्रयोग में लाया जा सके। एक विश्वसनीय परीक्षण सदैव ही विभिन्न मानसिक एवं व्यावहारिक योग्यताओं का एकरूपता से मापन करता हैं।

अर्द्धविच्छेद विधि–

इस विधि में उपकरण के समस्त पदों को दो बराबर भागों में विभाजित किया जाता हैं। सामान्यत्या यह विभाजन उपकरणों के सम एवं विषम संख्या वाले कथनो के रूप में किया जाता हैं। इन दो बराबर वाले भागों को एक ही समय एक ही समूह पर प्रशासित कर प्राप्तांक

प्राप्त किये जाते हैं। इन दो प्राप्तांको के समूह के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात किया जाता हैं। यह सहसम्बन्ध उपकरण का अर्द्धविश्वसनीयता गुणांक कहलाता हैं। सम्पूर्ण उपकरण का विश्वसनीयता गुणांक ज्ञात करने के लिए **स्पीयरमैन ब्राउन** द्वारा प्रदत्त सूत्र का प्रयोग किया गया हैं।

विश्वसनीयता(r)= $\frac{2r1}{1+r1}$

r = सम्पूर्ण उपकरण का विश्वसनीयता गुणांक

r1 = परीक्षण के दोनो अर्द्ध पदों का विश्वसनीयता गुणांक

अर्द्धविच्छेदन विधि द्वारा दबाव प्रमापनी का विश्वसनीयता गुणांक .75 प्राप्त हुआ हैं। अतः प्रमापनी विश्वसनीयहैं।

$$r = \frac{N\Sigma xy - \Sigma x\Sigma y}{\sqrt{\left[N\Sigma x^2 - (\Sigma x)^2\right]\left[N\Sigma y^2 - (\Sigma y)^2\right]}}$$

$\sum x$ = विषम पदों के प्राप्तांको का योग

$\sum y$ = सम पदों के प्राप्तांको का योग

$\sum x^2$ = विषम पदों के प्राप्तांको के वर्गो का योग

$\sum y^2$ = सम पदों के पाप्तांको के वर्गो का योग

$\sum xy$ = विषम पद व सम पदो के प्राप्तांको के गुणनफल का योग

N = 50 कुल योग (विद्यार्थी)

विश्वसनीयता का सूत्र :–

$$r = \frac{N\Sigma xy - \Sigma x\Sigma y}{\sqrt{\left[N\Sigma x^2 - (\Sigma x)^2\right]\left[N\Sigma y^2 - (\Sigma y)^2\right]}}$$

$$r = \frac{[30\times 5350 - (377)(397)]}{\sqrt{\left[30\times 5113 - (377)^2\right]\left[30\times 5656 - (397)^2\right]}}$$

$$r = \frac{160500 - 149669}{\sqrt{[153390 - 142129]\,[169680 - 157609]}}$$

$$r = \frac{10831}{\sqrt{11261 \times 18071}}$$

$$r = \frac{10831}{14265}$$

$r = 0.75$ उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध

अतः उपकरण का विश्वसनीयता गुणांक 0.75 हैं।

दबाव प्रमापनी की विश्वसनीयता की गणना करते हुए कोचिंग विद्यार्थियों पर उपकरण का प्रशासन किया गया। इन विद्यार्थियों के उत्तरों को सारणीबद्ध कर **कार्ल पियर्सन** के सूत्र से वांछित गणना की गई। अन्ततः उपकरण की विश्वसनीयता गुणांक .75 प्राप्त हुआ। अतः दबाव प्रमापनी विश्वसनीय मान ली गई।

दबाव मापनी की वैधता :–

परीक्षण की वैधता से हमारा आशय हैं कोई अमुक परीक्षण कितनी शुद्धता एवं आवश्यकता से परीक्षण के उन विशिष्ट एवं सामान्य उद्देश्यों का मापन करता हैं जिसके लिए उसकी रचना की गयी हैं अर्थात् वैधता उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शुद्धता एवं सार्थकता को इंगित करती हैं।

परीक्षण की वैधता ज्ञात करने की विधिः–

दबाव प्रमापनी परीक्षण की वैधता ज्ञात करने के लिए रूप या अनीक वैधता विधि का प्रयोग किया गया हैं।

दबाव प्रमापनी के प्रश्नों को अध्ययन के उद्देश्यों व परीक्षण समूहों की विशेषताओं व आवश्यकताओं के अनुरूप निर्मित किया गया तथा शोधार्थी द्वारा निर्मित उपकरण को वरिष्ठ विशेषज्ञों को इस आशय से

दिया गया कि वे दबाव प्रमापनी के क्षेत्र से सम्बन्धित कथनों के मूल्य एवं महत्व को देखते हुए शोधार्थी द्वारा निर्मित कथनों का मूल्यांकन करें तथा वरिष्ठ विशेषज्ञों द्वारा दिये गये सुझावों के आधार पर कुछ कथनों में भाषागत अर्थगत पुनरावृति एवं वाक्यांश में परिवर्तन कर प्रश्नों का निर्धारण व चयन किया गया ताकि यह परीक्षण प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति कर पाने में सफल सिद्ध हो सके। प्रस्तुत अध्ययन में भी रूप वैधता के आधार पर दबाव प्रमापनी की वैधता ज्ञात की गई हैं। जिसकी वैधता स्तर .75 प्राप्त हुआ हैं।

3.4.3 समायोजन प्रश्नावलीः–

यह मानकीकृत उपकरण **आर. पी. सिंह (पटना)** व **ए. के. पी. सिन्हा (पटना)** द्वारा निर्मित हैं। यह टेस्ट महाविद्यालय स्तर के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के सामंजस्य परीक्षण ज्ञात करने के लिए प्रयोग में लिया गया हैं। उक्त परीक्षण हिन्दी में हैं। यह भारत में महाविद्यालय स्तर के 600 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया हैं। परीक्षण में 102 कथन हैं। जीवन समायोजन का एक सतत् तरीका हैं।मनोविज्ञान को मनुष्य के व्यवहार के विज्ञान द्वारा परिभाषित किया जा सकता हैं और अच्छी तरह से समझा जा सकता हैं यदि समायोजन का तरीका जानते हैं। वास्तव में लोग जीवन के कई क्षेत्रों में समायोजन करके सहयोग करने की कोशिश करते हैं, जीवन के प्रत्येक दिन की समस्याओं का समाधान करते हैं। **(Goodstein and Lanyon, 1975, Singh 1986)** के अनुसार :– कुछ व्यक्ति अच्छी तरह से समायोजित होते हैं। कुछ कम समायोजित होते हैं। कई प्रकार के समायोजन में से मनोविज्ञानिकों ने पांच मुख्य प्रकार के समायोजन लिये हैं। जैसे–घर स्वास्थ्य, सामाजिक, सांवेगिकता और शैक्षणिक में समायोजन सबसे महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान में इन पांच क्षेत्रों में समायोजन विद्यालय में 18

वर्ष से 26 वर्ष की उम्र तक के विद्यार्थियों में किया गया। इस प्रमापनी के प्रारम्भिक प्रारूप में 201 कथन लिये गये। पांच विषयगत् व्यक्तियों के सुझावानुसार 35 प्रश्नों को हटाकर 166 प्रश्न रखे गयें।इसमें द्वितीय प्रयास को आधार मानते हुए विश्लेषण के आधार पर 0.01 स्तर पर 64 कथनों को हटा लिया गया और 102 कथनों को अन्तिम प्रसास में रखा गया।सबसे पहले विद्यार्थियों को कहा गया कि वे अपनी जगह पर आराम से बैठ जाये फिर विद्यार्थियों से थोडी देर सामान्य बात की गयी। **Reusable Test booklet** के सामने के पेज पर दिये गये अनुदेश विद्यार्थी पढेगा तथा बच्चे भी चुपचाप अनुदेश पढेंगे। यदि अनुदेश के बारे में कोई शक हो तो छात्र बिना किसी भय के अपना हाथ खडा करके पूछेंगे। इसमें सही और गलत उत्तर जैसा ऐसा कुछ भी नही हैं। वे ध्यान से प्रश्नों को पढेंगे और तब उनके उत्तर पर Tick Mrak (✓) दो कोष्ठकों में से एक पर लगायेंगे। ये उत्तर पत्रक पर हाँ और नही में उत्तर को प्रदर्शित करेगा। इस परीक्षण के लिए समय की पाबन्दी नही हैं लेकिन सामान्यतया एक विद्यार्थी 40 से 45 मिनट का समय इस परीक्षण को पूरा करने में लेते हैं। जाँच करने वाले को यह पूरा विश्वास हो जाना चाहिए कि विद्यार्थियों ने आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिये हैं। वह विद्यार्थियो से आशा रखे कि वे उसमें पूरा सहयोग देवें तथा अच्छे अंक लावे। जाँच करने वाला कठोरता से यह ध्यान रखे कि उत्तर पत्रक पर ही **Booklet** के उत्तर लिखे जावे। विद्यार्थियों को उनके मित्रों से बात या बहस की इजाजत नहीं दी जाये क्योंकि इससे छात्र परीक्षण के उद्देश्य में बाधा आयेगी। अन्त में जैसे ही विद्यार्थी उनका कार्य पूरा करे **Reusable Booklet** पुस्तक तथा उत्तर पत्रक एकत्रित कर लिये जायेंगे।

अंकन :–

इस परीक्षण के सम्भवत्या अधिकतम अंक 102 हैं। इस संबंध में प्रत्येक कथन के (+1) या जीरो (0) अंक हैं। इसमें दो प्रकार के उत्तर हैं– हाँ और नही। इसमें समायोजन के पांच विभिन्न क्षेत्र हैं –

अ) घर ब) स्वास्थ्य स) सामाजिक द) सांवेगिकता य) शैक्षणिक

समायोजन के इन विभिन्न क्षेत्रों में 102 कथन हैं। इस परीक्षण में अच्छे अंक लाना अच्छा समायोजन हैं तथा कम अंक लाना कम समायोजन का सूचक हैं। उस विषय के सम्बन्ध में प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक दिया जायेगा तथा प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 0 अंक दिया जायेगा। अच्छे समायोजन के लिए Transparent Scoring Keys क्षेत्रानुसार प्रत्येक सही उत्तर के लिए दी गयी हैं। प्रत्येक कुंजी उत्तर पत्रक के उपर रखी जायेगी। Checks and Ticked की सहायता से गोले बनाकर Scoring Test में उस विशेष क्षेत्र अंक प्राप्ति को बताया जायेगा। सही अंको को क्षेत्रानुसार जोड़ा जायेगा और अन्त में कुल समायोजन को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक क्षेत्र के अंको को जोड़ा जायेगा।

विश्वसनीयता :–

AICS परीक्षण की विश्वसनीयता दो तरीके से Test Retest के आधार पर इसकी विश्वसनीयता .93 हैं तथा Split Half Method के आधार पर इसकी विश्वसनीयता .94 हैं।

वैधता :–

AICS has been validated against the Bell Adjustment Inventory जो कि Mohsin और Shamsad (1969) ने बनायी थी। इस के साथ ही AICS Bhagia (1967)ने बनायी। Table2 presents the obtained validity of AICS.

Correlation of Coefficient की प्राप्ति के आधार पर ये पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता हैं कि 0.01 AICS एक प्रामाणिक परीक्षण हैं।

3.4.4 साक्षात्कार अनुसूची :–

पी.वी. यंग के अनुसार, ''साक्षात्कार को ऐसी व्यवस्थित विधि माना जा सकता हैं जिसके अन्तर्गत एक व्यक्ति काल्पनिक रूप से कम या अधिक एक ऐसे व्यक्ति के आन्तरिक जीवन में प्रवेश करता हैं जो कि उसके लिए अपेक्षाकृत अपरिचित होता हैं।'' अतः साक्षात्कार ऐसी प्रक्रिया हैं जिसमें एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के विचार, किसी समस्या विशेष के सन्दर्भ में जानता हैं या जानने का प्रयास करता हैं।इस प्रकार साक्षात्कार द्वारा किसी समस्या के उपर दो या दो से अधिक लोगों के विचारों को जानकर अनुसंधानकर्त्री अपनी समस्या के समाधान का प्रयास करती हैं। प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री द्वारा शिक्षक एवं संस्था निदेशकों हेतु साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया हैं।

साक्षात्कार निर्माण प्रक्रिया –

साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण निम्न सोपानों के आधार पर किया गया हैं–

1. प्रथम सोपान :–

अनुसंधानकर्त्री द्वारा साक्षात्कार हेतु शोध समस्या से सम्बन्धित निम्न क्षेत्रों का चयन प्रारम्भिक स्तर पर किया –

(क) कोचिंग विद्यार्थियों में दबाव के कारण

(ख) दबाव और समायोजन में सम्बन्ध

2. द्वितीय सोपान :–

उपरोक्त क्षेत्रों के चिन्हित करने के बाद अनुसंधानकर्त्री ने विभिन्न शिक्षाविद्ों से सम्पर्क किया। सम्पर्क के बाद जैसा मार्गदर्शन और सुझाव प्राप्त हुए उस आधार पर प्रश्नों के क्षेत्रों को पुनः संगठित किया गया। इस प्रकार अन्ततः कुछ क्षेत्रों के कथन निर्माण हेतु निश्चित किया गया। जो निम्नवत हैं :–

1. कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में बढ़ रहें दबाव के कारण।
2. कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन से दबाव का सम्बन्ध।

3. तृतीय सोपान :–

उक्त निर्धारित क्षेत्रों से शोधकर्त्री ने 20 कथनो का निर्माण किया जिन्हे क्रमबद्ध करके विषय विशेषज्ञों से सलाह व परामर्श किया। विषय विशेषज्ञों की राय के अनुसार प्रश्न संख्या सीमित कर 8 कथनो को साक्षात्कार अनुसूची में सम्मिलित किया गया।

3.5 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि :–

शोध परीक्षणों अथवा उपकरणों का प्रशासन व ऑकडे संकलन के पश्चात् उनका व्यवस्थापन व सारणीयन करना होता हैं। उपकरणों से प्राप्त आंकड़ें अव्यवस्थित होते हैं। इन्हें एकनिश्चित रूप प्रदान कर विश्लेषण किया जाता हैं। प्रदत्तों को सारणीबद्ध करने व अर्थपूर्ण बनाने के लिए सांख्यिकीय गणनाओं द्वारा विश्लेषण किया जाता है और इस विश्लेषण की सहायता से शोध में प्रयुक्त की गई परिकल्पनाओं का सामान्यीकरण व परीक्षण किया जाता हैं। शोध कार्य के प्रदतों के निष्कर्ष हेतु निम्नांकित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया हैं :–

एम.डी. केण्डल (1963, पृष्ट 145) –''सांख्यिकीय प्रदत्तों के संकलन तथा उनके विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने का विज्ञान हैं।''

1. **मध्यमान (M) :–** सांख्यिकी में जिसे मध्यमान कहते हैं सामान्य गणित में उसे औसत कहते हैं। संकेत रूप में मध्यमान (M) को चिन्ह से प्रदर्शित करते हैं। मध्यमान वह प्राप्तांक हैं। जिसके दोनों ओर प्राप्तांकों का विचलन समान होता हैं। मध्यमान ज्ञात करने का सबसे सरल तरीका यह हैं कि संख्याओं के जोड़ को उनकी संख्या से भाग कर दिया जाता हैं। इसे निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता हैं।

$$M = \frac{\Sigma x}{N}$$

जहाँ:– M = मध्यमान

$\sum$ = जोड़

x = प्राप्तांक

N = प्राप्तांकों की संख्या

2. **मानक विचलन (S.D.) :–** सांख्यिकी के विचलन मान किसी समूह की सजातीयता या विजातीयता का स्पष्ट संकेत देते हैं। इसके द्वारा हम ठोस रूप में व्यक्त कर सकते हैं। विचलन मान ज्ञात करने के लिए मानक विचलन को व्यापक स्तर पर प्रयुक्त किया जाता हैं। इसे निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता हैं।

$$SD = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

जहाँ:–

SD = मानक विचलन

d = मध्यमान से विचलन

N = प्राप्तांकों की संख्या (आवृत्तियों की संख्या)

3. **टी–परीक्षण (T-test) :–** दो समूहों या दो मध्यमानों में सार्थक अंतर को ज्ञात करने के लिए प्राथमिक रूप से टी–परीक्षण का प्रयोग किया जाता हैं। टी–परीक्षण प्राप्त आँकड़ों की सार्थकता को ज्ञात करने के लिए सीधे ही प्रस्तुत किया जा सकता हैं।

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD_1^{\,2}}{N_1} + \frac{SD_2^{\,2}}{N_2}}}$$

जहाँ:–

t = टी–मान

M_1 = प्रथम समूह का मध्यमान

M_2 = द्वितीय समूह का मध्यमान

$SD_1^{\,2}$ = प्रथम समूह के प्रामाणिक विचलन का वर्ग

$SD_2^{\,2}$ = द्वितीय समूह के प्रामाणिक विचलन वर्ग

N_1 = प्रथम समूह की संख्या

N_2 = द्वितीय समूह की संख्या

4. **सहसम्बन्ध गुणांक :–** शिक्षा के क्षेत्र में बहुधा प्राप्तांकों की दो श्रेणियों की मात्रा के सम्बन्ध की मात्रा निर्धारित करने की आवश्यकता पड़ती हैं। इस सम्बन्ध को सह सम्बन्ध गुणांक से व्यक्त किया जाता हैं।

$$r = \frac{N\Sigma xy - \Sigma x\Sigma y}{\sqrt{\left[N\Sigma x^2 - (\Sigma x)^2\right]\left[N\Sigma y^2 - (\Sigma y)^2\right]}}$$

जहाँ:–

r = सह सम्बन्ध गुणांक

x = प्रथम समूह के प्राप्तांक

y = द्वितीय समूह के प्राप्तांक

N = कुल आवृत्ति (प्रथम समूह व द्वितीय समूह की आवृत्तियों का योग)

5. **प्रतिशत मध्यमान :–** मध्यमान प्रतिशत निकालने के लिए निम्न सूत्र का उपयोग किया गया।

$$\text{मध्यमान प्रतिशत} = \frac{\text{कुल मध्यमान}}{\text{अधिकतम सम्भावित प्राप्तांक}} \times 100$$

3.6 उपसंहार :–

अनुसंधान समस्या के चयन और तत् संबन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण कार्य उपर्युक्त एवं सही अनुसंधान विधि का चुनाव होता हैं। तदन्तर सम्बन्धित उपकरणों का चयन और निर्माण अनुसंधान का सबसे अधिक श्रम साध्य और महत्वपूर्ण कार्य होता हैं। प्रस्तुत अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं। सामान्यतया कोचिंग विद्यार्थियों के लिए दबाव प्रमापनी का प्रयोग किया गया है तथा समायोजन स्तर को ज्ञात करने के लिए **आर. पी. सिंह (पटना**) व **ए. के. पी. सिन्हा (पटना)** की प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।संबन्धित समस्या के सन्दर्भ में कोचिंग निदेशको, शिक्षकों, अभिभावकों तथा विशिष्ट शिक्षाविदों के अभिमत को जानने हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया हैं।'' जिनसे उपलब्ध दत्त संकलन शोधकार्य हेतु प्रयोग में लाया गया हैं। दत्त विश्लेषण के लिए मध्यमान,मानक विचलन, टी–परीक्षण, सहसम्बन्ध आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया हैं तथा इनके माध्यम से शोध निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। इन अध्ययन में शोधकर्त्री ने अध्ययन विधि, उपकरण, न्यादर्श एवं प्रविधियों को गहराई से समझने का प्रयास किया तथा उनकी महता के आधार पर ही पुष्टि की हैं।

चतुर्थ परिच्छेद

प्रदत्तों का विश्लेषण

एवं व्याख्या

चतुर्थ परिच्छेद

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना :–

''प्रदत्तों के विश्लेषण से तात्पर्य व्यवस्थित तथ्यों का इस प्रकार से अध्ययन करने से है कि उन प्रदत्तों में निहित तथ्यों के विश्लेषण के माध्यम से खोज हो सके।''

– कोल

शोधकार्य में आंकड़ों का एकत्रीकरण एवं विश्लेषण प्रस्तुत करना मुख्य कार्य है। गलत विश्लेषण से शोधकार्य के परिणाम भी गलत हो जाते हैं। केवल आंकड़ों का संकलन एवं उनका प्रस्तुतीकरण कर लेने मात्र से शोधकार्य पूर्ण नहीं हो जाता वरन् उनका विश्लेषण एवं व्याख्या प्रस्तुत करने पर ही शोधकार्य का वास्तविक अर्थ, कारण एवं परिणाम स्पष्ट हो सकते हैं।

किसी भी शोधकार्य की सफलता केवल इसी बात पर निर्भर नहीं करती कि उसके लिए कितनी उपयुक्त एवं विश्वसनीय प्रविधियों द्वारा आंकड़ों को संकलित किया गया है वरन् इस बात पर भी निर्भर करती है कि संकलित किए गए आंकड़ों को किस प्रकार से विश्लेषित कर उनकी व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

अतः प्रस्तुत अध्याय में आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या पर प्रकाश डाला गया है। आंकड़ों का विश्लेषण कर इससे प्राप्त निष्कर्षो को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है।

4.2 प्रदत्तों का वर्गीकरण एवं सारणीयन :–

अपने लघुशोध में शोधकर्त्री ने निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु मानकीकृत उपकरण की अनुपलब्धता में स्वनिर्मित उपकरणों की सहायता से दत्तों का संकलन किया है। वर्गीकरण तथ्यों या दत्तों को व्यवस्थित एवं संक्षिप्त करने की

प्रक्रिया है। आँकड़ो को प्रदर्शन योग्य बनाने हेतु वर्गीकरण आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने शोध उद्देश्यों के आधार पर तथ्यों का वर्गीकरण किया है।

4.3 प्रदत्तों का विश्लेषण :–

प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ प्रदत्तों में निहित तथ्यों को निश्चित करने के लिए सामग्री का सारणीयन कर अध्ययन करना है। इसके अन्तर्गत जटिल कारकों को छोटे–छोटे हिस्सों में बांट लेते हैं एवं व्याख्या के उद्देश्य से उनको एक साथ एक नवीन क्रम में व्यवस्थित कर लेते हैं। प्रदत्त संकलन से पूर्व विश्लेषण की योजना कर लेनी चाहिए। आरम्भिक विश्लेषण में योजना की जांच करने के बाद अगर आवश्यक हो तो प्रदत्तों के अन्तिम विश्लेषण का विस्तार कर लेते हैं। इस प्रक्रिया में जब विश्लेषण नियोजित न हो तो सावधानी और सतर्कता से काम लेना होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु गुड बार एवं स्केट्स ने चार सुझाव दिये हैं –

1. प्रदत्तों के बारे में सार्थकता सारणी के अनुसार विचार करना।
2. समस्या कथन की सार्थकता से जांच करना और आरम्भिक प्रदत्त अभिलेखों का अध्ययन करना।
3. सामान्य व्यक्ति की तरह समस्या पर विचार करना।
4. विभिन्न साधारण सांख्यिकी विश्लेषण का प्रदत्तों पर प्रयोग करना।

शोध प्रदत्तों के विश्लेषण की सामान्य प्रक्रिया में सांख्यिकीय विधियों का विशेष महत्व है। इकाईयों के छोटे अथवा बड़े समूह के किसी भी शोध अध्ययन में साधारण सांख्यिकी गणनाओं का स्थान होता है। सांख्यिकीय के अन्तर्गत प्रदत्तों का संकलन, संगठन, विवरण, व्याख्या की जाती है। अतः सांख्यिकीय मापन एवं शोध का मुख्य उपकरण है।

4.4 प्रदत्तों के विश्लेषण की आवश्यकता :–

शोध परिणामों के प्रशासन एवं अंकन के प्रश्चात् प्रदत्तों का संकलन एवं व्यवस्थापन किया जाता है। संकलित प्रदत्त व प्राप्त प्रदत्त के रूप में जाने जाते हैं। प्राप्त प्रदत्त तब तक अर्थपूर्ण नहीं होते जब तक कि उसको सांख्यिकीय विश्लेषण नहीं दिया जाता है। प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ प्राप्त प्रदत्तों को अर्थपूर्ण बनाना है अथवा उपयुक्त सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिणाम प्राप्त करना है। सार्थक परिणामों से प्राप्त करने के लिए प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण की सहायता से परिकल्पना का परीक्षण किया जाता है। इस प्रकार प्रदत्तों के विश्लेषण के निम्नलिखित कार्य है :–

1. प्रदत्तों को अर्थपूर्ण बनाना।
2. शून्य परिकल्पना का परीक्षण करना।
3. सार्थक परिणाम प्राप्त करना।
4. परा सांख्यिकी के सम्बन्ध में अनुमान लगाना।

4.5 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

शोधार्थी ने प्रदत्तों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नांकित प्रकार से की है :–

1. दबाव प्रमापनी से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण
2. समायोजन प्रमापनी से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण
3. सहसम्बन्ध गुणांक से प्राप्त विश्लेषण

शोधार्थी ने विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्यों का चयन कर निम्नलिखित सारणियों का निर्माण किया है जो इस प्रकार से है:–

1. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

2. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

3. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।

4. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।

5. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।

6. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

7. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

8. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

9. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

10. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

11. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

12. आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

4.5.1 दबाव प्रमापनी से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण :–

राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का पता लगाने हेतु जो प्रदत्त प्राप्त हुए है उनका विश्लेषण, सारणीयन एवं आरेखों के माध्यम से व्याख्या की गई हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में जो उद्देश्य निर्धारित किये गये है, उनको दृष्टिगत रखते हुए इस परिच्छेद का गठन किया गया हैं। प्राप्त प्रदत्तों का उपयोग करके परिकल्पनाओं का सत्यापन करने हेतु उपयुक्त सांख्यिकी का भी आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया हैं। शोधकर्त्री ने राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के दबाव स्तर को मापने के लिए स्वनिर्मित ''दबाव प्रमापनी'' का प्रयोग किया है उपकरण के प्रशासन के पश्चात् प्राप्त उत्तर पत्रकों का अंकन कार्य कर उन अंकों का सारणीयन किया गया। गणना के पश्चात् दबाव प्रमापनी का विश्लेषण एवं व्याख्या को इस परिच्छेद में प्रस्तुत किया गया हैं। अतः इस परिच्छेद में कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के दबाव स्तर का पता लगाकर विभिन्न समूहों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया हैं।

शोध उद्देश्यों व परिकल्पनाओं के आधार पर दबाव प्रमापनी से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण किया हैं जो निम्नांकित हैं :–

उद्देश्य : 1 आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.1

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

वर्ग	प्रतिशत मध्यमान	मध्यमान	प्रमाप विचलन
शैक्षिक	26.8	5.9	67.0
आर्थिक	26.4	5.6	65.9
सामाजिक	26.0	5.4	65.0
मनोवैज्ञानिक	26.2	5.8	65.4
पारिवारिक	25.3	5.2	63.3
व्यावसायिक	27.0	4.0	67.6
कुल	**157.7**	**21.5**	**65.7**

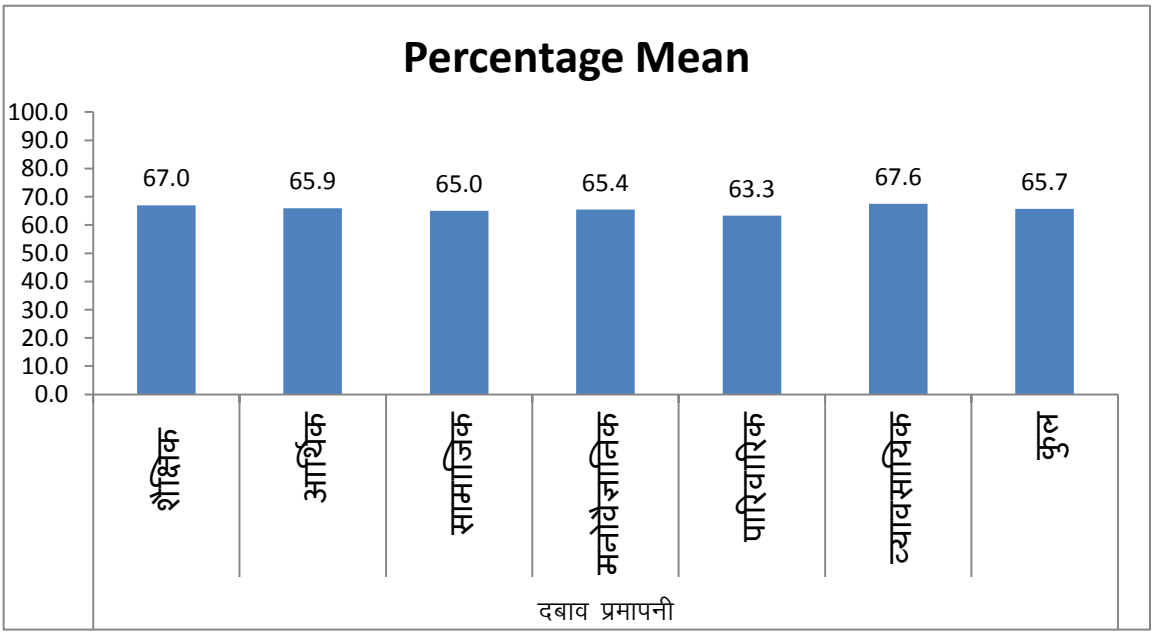

आरेख संख्या 4.1

विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार कुल मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति

उपरोक्त सारणी 4.1 एवं आरेख 4.1 को समेकित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में दबाव स्तर का कुल मध्यमान 157.7, मानक विचलन 21.5 व प्रतिशत मध्यमान 65.7 प्रतिशत प्राप्त हुआ हैं जो औसत स्तर का हैं।

क्षेत्रानुसार दबाव स्तर का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक दबाव व्यावसायिक क्षेत्र में 27.00 प्रतिशत प्राप्त हुआ है तथा सबसे कम दबाव 25.3 प्रतिशत के साथ पारिवारिक क्षेत्र मे प्राप्त हुआ हैं। अन्य क्षेत्रो में शैक्षिक में 26.80 प्रतिशत, आर्थिक में 26.40 प्रतिशत, सामाजिक क्षेत्र में 26.00 प्रतिशत तथा मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में 26.20 प्रतिशत प्राप्त हुआ हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने से विद्यार्थियों में पारिवारिक, व्यावसायिक, शैक्षिक व आर्थिक दबाव ज्यादा बढ़ रहा है क्योंकि कोचिंग में विद्यार्थियों में प्रतियोगी प्रतिस्पर्धा ज्यादा होती है। कोचिंग में टेस्ट परीक्षा में रेंक कम आना, भर्ती परीक्षा की अनिश्चितता, भर्ती घोटाले, प्रश्नपत्र का बाजार में लीक होना इत्यादि कारणों से विद्यार्थियों में मानसिक, व्यावसायिक व शैक्षिक दबाव ज्यादा बढ़ रहा है।

उद्देश्य : 2 आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.2

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

	पुरूष विद्यार्थी		महिला विद्यार्थी		पुरूष विद्यार्थी	महिला विद्यार्थी
क्षेत्र	**Mean**	**Sd**	**Mean**	**Sd**	**Percentage Mean**	
शै क्षक	28.1	5.5	25.5	6.0	70.3	63.7
आ र्थक	27.8	5.2	24.9	5.5	69.6	62.2
सामाजिक	26.7	5.3	25.3	5.4	66.7	63.4
मनोवैज्ञानिक	27.9	5.3	24.4	5.8	69.8	61.1
पारिवारिक	27.0	5.9	23.7	3.6	67.4	59.1
व्यावसायिक	28.4	4.5	25.6	2.7	71.1	64.0
कुल	**166.0**	**20.6**	**149.4**	**19.1**	**69.2**	**62.2**

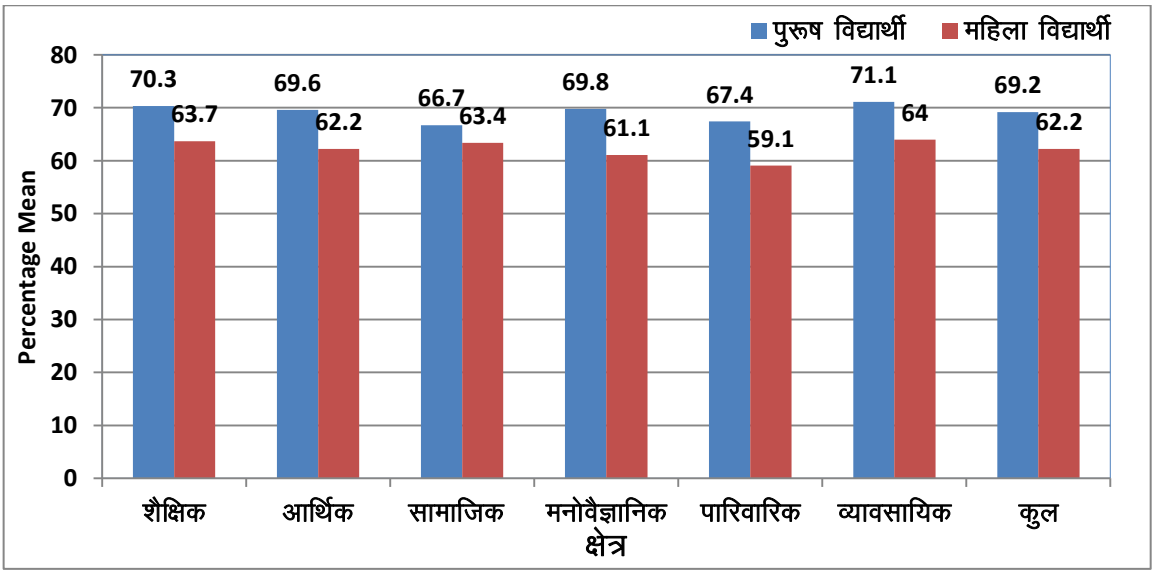

आरेख संख्या 4.2

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति

उपरोक्त सारणी 4.2 व आरेख 4.2 को सम्मिलित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि पुरूष विद्यार्थियों में दबाव स्तर का मध्यमान 69.20 प्रतिशत मध्यमान प्राप्त हुआ है जो महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर का प्रतिशत मध्यमान 62.20 प्रतिशत से बहुत ज्यादा है। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में दबाव ज्यादा पाया जाता है क्योंकि इनमें परिस्थितियों के साथ समायोजन की क्षमता महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा कम पायी जाती है।

क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी पुरूष विद्यार्थियों में दबाव स्तर महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुत ज्यादा पाया गया है जिसका मुख्य कारण व्यावसायिक 71.10 प्रतिशत के साथ रहा है। जबकि शैक्षिक क्षेत्र 70.30 प्रतिशत, आर्थिक 69.60 प्रतिशत, सामाजिक 66.70 प्रतिशत, मनोवैज्ञानिक 69.80 प्रतिशत, पारिवारिक 67.40 प्रतिशत दबाव प्राप्त हुआ है। महिला विद्यार्थियों में सर्वाधिक दबाव व्यावसायिक क्षेत्र में 64.00 प्रतिशत पाया गया है तथा न्यूनतम दबाव पारिवारिक क्षेत्र में पाया गया है। अन्य क्षेत्रों में भी शैक्षिक 63.70 प्रतिशत, आर्थिक 62.20 प्रतिशत, सामाजिक 63.40 प्रतिशत, मनोवैज्ञानिक 61.10 प्रतिशत के साथ महिला विद्यार्थियों में दबाव प्राप्त हुआ है जो पुरूष विद्यार्थियों के दबाव स्तर से बहुत कम है। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि महिला विद्यार्थी सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से समायोजित करने में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा ज्यादा सक्षम होती है, जबकि व्यावसायिक की चिंता पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव का मुख्य कारण रही है।

उद्देश्य : 3 आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.3

आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर के मध्यमान एवं प्रमाव विचलन

क्षेत्र	पुरूष विद्यार्थी प्रथम श्रेणी		महिला विद्यार्थी प्रथम श्रेणी		प्रतिशत मध्यमान	
	Mean	**Sd**	**Mean**	**Sd**	पुरूष विद्यार्थी प्रथम श्रेणी	महिला विद्यार्थी प्रथम श्रेणी
शै क्षक	25.2	1.9	20.5	3.7	63.0	51.3
आ र्थक	25.8	3.0	21.4	5.1	64.6	53.4
सामाजिक	25.0	5.4	21.5	4.2	62.4	53.8
मनोवैज्ञानिक	24.0	2.9	21.3	4.7	60.0	53.3
पारिवारिक	23.2	6.5	22.1	4.3	58.1	55.2
व्यावसायिक	26.1	2.8	24.9	2.0	65.2	62.3
कुल	**149.3**	**10.7**	**131.7**	**9.8**	**62.2**	**54.9**

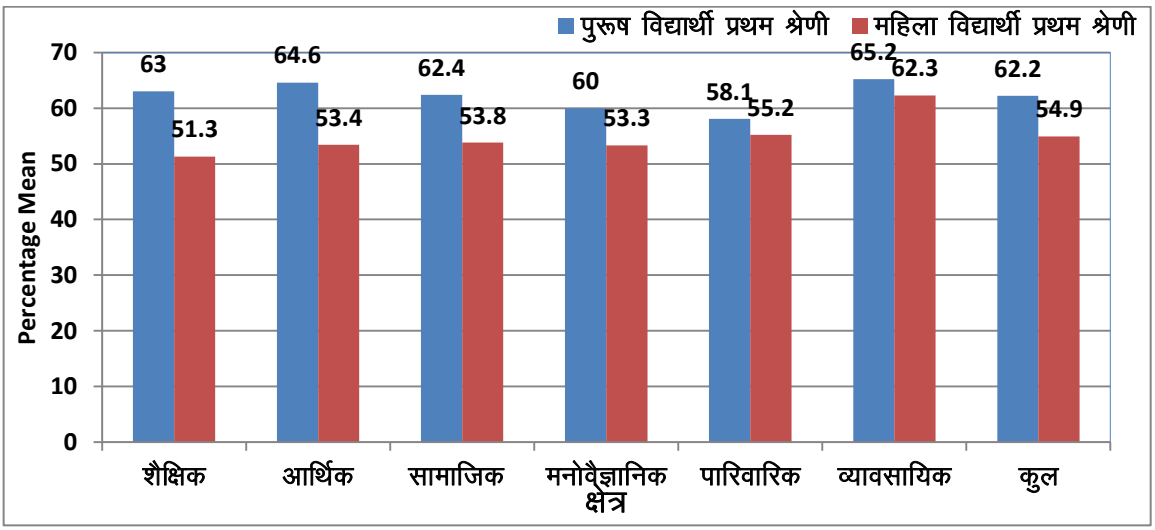

आरेख संख्या 4.3

आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति

उपरोक्त सारणी 4.3 व आरेख 4.3 को समेकित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का मध्यमान 62.20 प्रतिशत प्राप्त हुआ है जो महिला विद्यार्थियों के मध्यमान 54.90 प्रतिशत से ज्यादा है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रथम श्रेणी की तैयारी करने वाले पुरूष विद्यार्थियों में महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा ज्यादा दबाव पाया जाता है क्योंकि उनमें केरियर के साथ–साथ सामाजिक, पारिवारिक व व्यावसायिक जिम्मेदारी ज्यादा होती है।

क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी ज्ञात होता है कि प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में दबाव स्तर का मध्यमान सर्वाधिक 65.20 प्रतिशत व्यावसायिक क्षेत्र में प्राप्त हुआ है जो महिला विद्यार्थियों के व्यावसायिक क्षेत्र के मध्यमान 62.30 प्रतिशत से बहुत ज्यादा है। अन्य क्षेत्रों में भी महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है। जो इस प्रकार है – शैक्षिक क्षेत्र 63.9 प्रतिशत, आर्थिक 64.60 प्रतिशत, सामाजिक 62.40 प्रतिशत, मनोवैज्ञानिक 60 प्रतिशत, पारिवारिक 58.10 प्रतिशत रहा है। महिला विद्यार्थियों में भी अन्य क्षेत्रों में दबाव स्तर शैक्षिक क्षेत्र 51.30 प्रतिशत, आर्थिक 53.40 प्रतिशत, सामाजिक 53. 8 प्रतिशत, मनोवैज्ञानिक 53.30 प्रतिशत तथा पारिवारिक क्षेत्र में 55.20 प्रतिशत रहा हैं जो पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा न्यूनतम है।

उद्देश्य : 4 आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.4

आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

क्षेत्र	पुरूष विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी		महिला विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी		प्रतिशत मध्यमान	
	Mean	**Sd**	**Mean**	**Sd**	पुरूष विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी	महिला विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी
शै क्षक	28.2	5.5	25.8	3.4	70.4	64.5
आ र्थक	26.6	5.7	25.6	2.8	66.5	64.1
सामाजिक	26.3	5.4	25.4	3.0	65.7	63.5
मनोवैज्ञानिक	28.3	5.4	23.9	4.4	70.7	59.8
पारिवारिक	27.1	3.9	23.6	3.8	67.8	59.0
व्यावसायिक	28.8	4.6	25.0	1.7	71.9	62.4
कुल	**165.2**	**19.3**	**149.3**	**7.6**	**68.8**	**62.2**

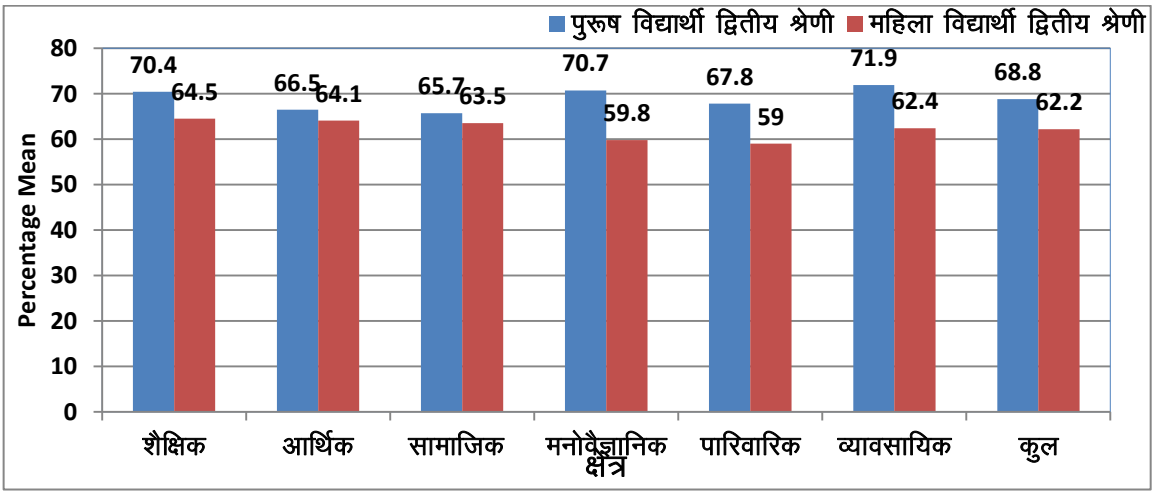

आरेख संख्या 4.4

आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति

उपरोक्त सारणी 4.4 व आरेख 4.4 को समेकित रूप से देखने पर पता चलता है कि आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का मध्यमान 68.20 प्रतिशत प्राप्त हुआ है जो महिला विद्यार्थियों के मध्यमान 62.20 प्रतिशत से ज्यादा है। इससे स्पष्ट होता है कि द्वितीय श्रेणी की तैयारी करने वाले पुरूष विद्यार्थियों में महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा ज्यादा दबाव पाया जाता है क्योंकि पुरूष विद्यार्थियों में महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, व्यावसायिक जिम्मेदारी होती है।

क्षेत्रानुसार तुलना करने से भी ज्ञात होता है कि द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में दबाव स्तर का मध्यमान सर्वाधिक 71.90 प्रतिशत व्यावसायिक क्षेत्र में प्राप्त हुआ है जो महिला विद्यार्थियों के व्यावसायिक क्षेत्र के मध्यमान 62.40 प्रतिशत से ज्यादा है। अन्य क्षेत्रों में शैक्षिक क्षेत्र 70.40 प्रतिशत, आर्थिक 66.50 प्रतिशत, सामाजिक 65.70 प्रतिशत, मनोवैज्ञानिक 70.70 प्रतिशत तथा पारिवारिक 67.20 प्रतिशत के साथ महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सभी क्षेत्रो में महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव देखने को मिलता है।

उद्देश्य : 5 आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.5

आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

क्षेत्र	पुरूष विद्यार्थी तृतीय श्रेणी		महिला विद्यार्थी तृतीय श्रेणी		प्रतिशत मध्यमान	
	Mean	**Sd**	**Mean**	**Sd**	पुरूष विद्यार्थी तृतीय श्रेणी	महिला विद्यार्थी तृतीय श्रेणी
शै क्षक	31.0	6.4	30.1	6.0	77.6	75.3
आ र्थक	31.1	4.7	27.6	6.2	77.9	69.0
सामाजिक	28.8	4.2	29.1	5.8	72.1	72.8
मनोवैज्ञानिक	31.5	4.4	28.0	6.0	78.8	70.1
पारिवारिक	30.6	4.4	25.3	1.3	76.4	63.2
व्यावसायिक	30.5	4.6	27.0	3.5	76.2	67.4
कुल	**183.6**	**14.0**	**167.1**	**17.7**	**76.5**	**69.6**

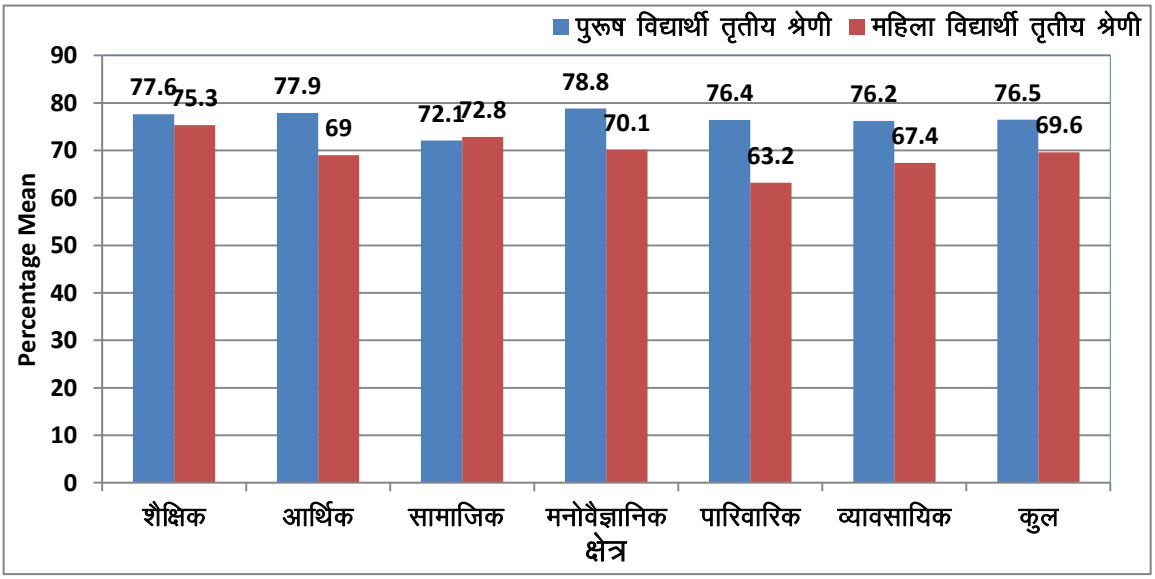

आरेख संख्या 4.5

आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति

उपरोक्त सारणी 4.5 व आरेख 4.5 को सम्मिलित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की तैयारी करने वाले पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का मध्यमान 76.50 प्रतिशत प्राप्त हुआ है जो महिला विद्यार्थियों के मध्यमान 69.60 प्रतिशत से बहुत ज्यादा है। इससे स्पष्ट होता है कि तृतीय श्रेणी की तैयारी करने वाले पुरूष विद्यार्थियों में महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा ज्यादा दबाव देखने को मिलता है। इसका मुख्य कारण पुरूष विद्यार्थियों में परिस्थितियों के साथ समायोजित करने की कम क्षमता होना है। जबकि महिला विद्यार्थी हर परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने में सक्षम होती है।

क्षेत्रानुसार तुलना करने से भी पुरूष विद्यार्थियों में महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा सबसे ज्यादा दबाव मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में 78.80 प्रतिशत पाया गया है जो महिला विद्यार्थियों के 70.10 प्रतिशत से बहुत ज्यादा है। अन्य क्षेत्रों में आर्थिक 77.9, शैक्षिक 77.60, सामाजिक 72.1, पारिवारिक 76.40, व्यावसायिक 76.20 प्रतिशत के साथ महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव देखने को मिलता है। इससे पता चलता है कि महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थी केरियर के प्रति ज्यादा चिंता करते हैं। सामाजिक, व्यावसायिक, पारिवारिक व मनोवैज्ञानिक रूप से ज्यादा दबावग्रस्त रहते हैं कि यदि नौकरी नहीं लगी या नौकरी में चयन नहीं हुआ तो समाज व परिवार वाले क्या कहेंगे।

4.5.2 परिकल्पनाओं के आधार पर दबाव स्तर का विश्लेषण :–

विभिन्न वर्गों के दबाव स्तर में अन्तर की सार्थकता समग्र न्यादर्श के विभिन्न समूहों पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों, प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी तथा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर की सार्थकता का पता लगाने हेतु ''टी'' परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका क्रमशः वर्णन निम्नानुसार है:–

परिकल्पना : 1 आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या 4.6

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति

क्षेत्र	N	पुरूष विद्यार्थी		महिला विद्यार्थी		Sed	t value
		Mean	Sd	Mean	Sd		
शै क्षक	300	28.1	5.5	25.5	6.0	0.5	5.65
आ र्थक	300	27.8	5.2	24.9	5.5	0.4	6.82
सामाजिक	300	26.7	5.3	25.3	5.4	0.4	3.07
मनोवैज्ञानिक	300	27.9	5.3	24.4	5.8	0.5	7.70
पारिवारिक	300	27.0	5.9	23.7	3.6	0.4	8.31
व्यावसायिक	300	28.4	4.5	25.6	2.7	0.3	9.39
कुल	300	166.0	20.6	149.4	19.1	1.6	10.25

Table Value at df = 598 0.05 = 1.96 and 0.01 = 2.58

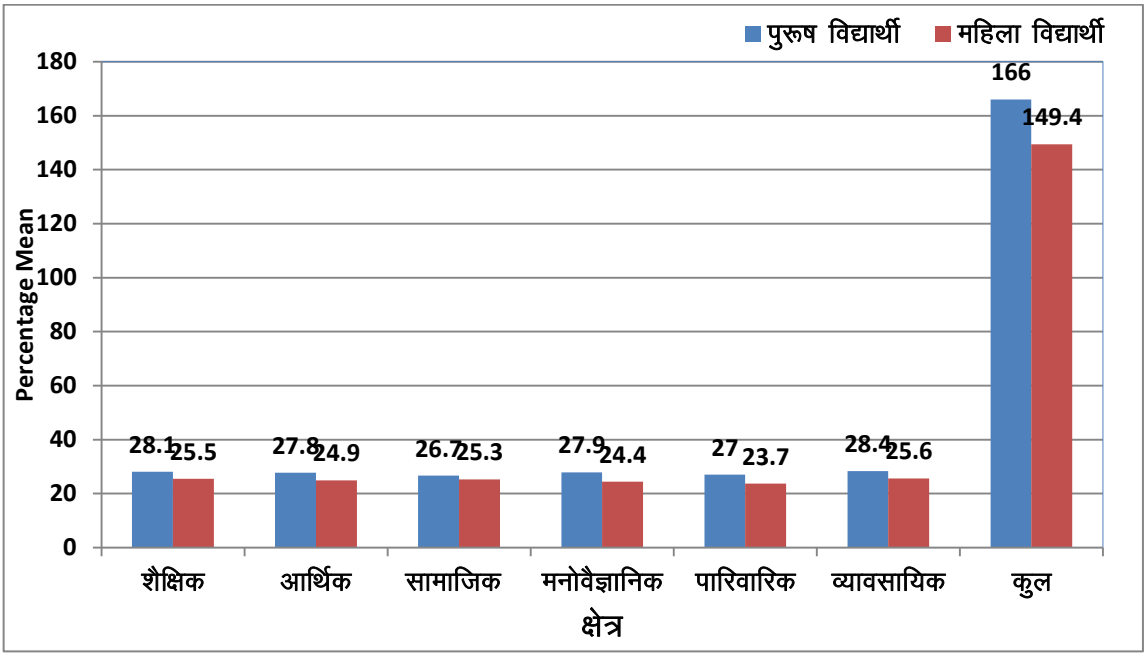

आरेख संख्या 4.6

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

उपरोक्त सारणी 4.6 से स्पष्ट है कि आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव स्तर का तुलात्मक अध्ययन करने पर ''टी'' का मान 10.25 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश 598 (df-598) के सारणी मान 0.05 स्तर पर 1.96 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 से बहुत ज्यादा हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर में सार्थक अन्तर होता है। आर.पी.एस.सी. के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर शैक्षिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक क्षेत्रों में दबाव स्तर का 'टी' मान क्रमशः 5.65, 6.82, 7.70, 8.31, 3.07, 9.39 पाया गया है। व्यावसायिक क्षेत्र का ''टी'' मान क्रमशः 9.39 प्रतिशत ज्यादा होने से पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर में सर्वाधिक अन्तर देखा गया है। अतः आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर अधिक पाये जाने के कारण परिकल्पना 1 को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना : 2 आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या 4.7

आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति

क्षेत्र	N	पुरूष विद्यार्थी प्रथम श्रेणी		महिला विद्यार्थी प्रथम श्रेणी		Sed	t value
		Mean	Sd	Mean	Sd		
शै क्षक	100	25.2	1.9	20.5	3.7	0.4	11.26
आ र्थक	100	25.8	3.0	21.4	5.1	0.6	7.54
सामाजिक	100	25.0	5.4	21.5	4.2	0.7	5.04
मनोवैज्ञानिक	100	24.0	2.9	21.3	4.7	0.6	4.82
पारिवारिक	100	23.2	6.5	22.1	4.3	0.8	1.48
व्यावसायिक	100	26.1	2.8	24.9	2.0	0.3	3.37
कुल	**100**	**149.3**	**10.7**	**131.7**	**9.8**	**1.5**	**12.07**

Table Value at df = 198 0.05 = 1.98 and 0.01 = 2.61

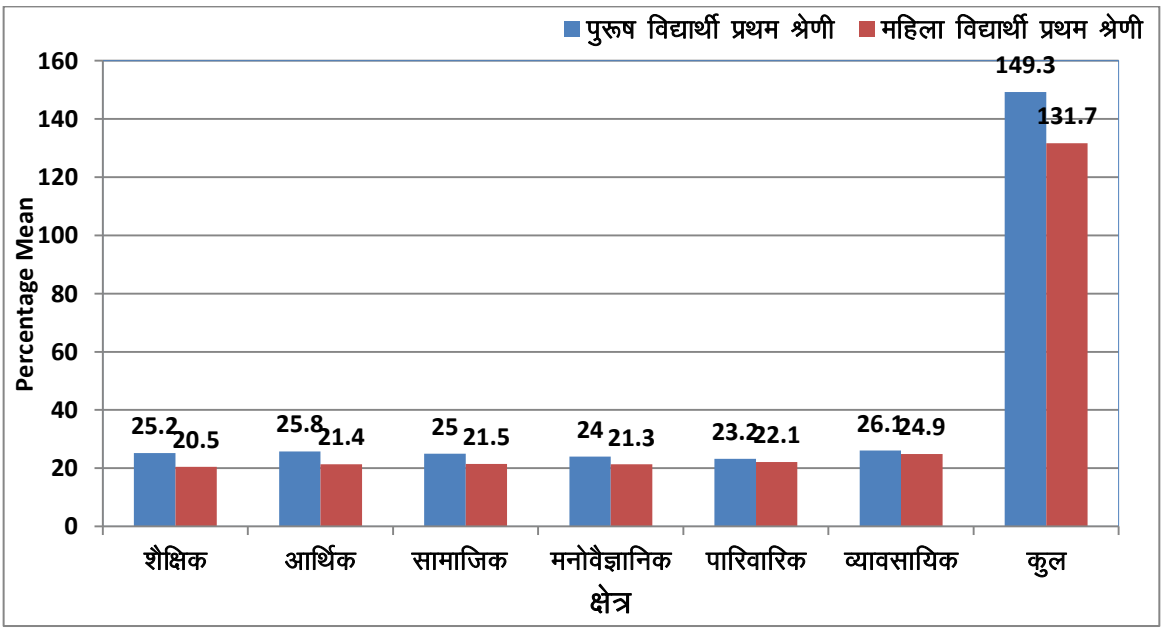

आरेख संख्या 4.7

आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

उपरोक्त सारणी 4.7 से स्पष्ट है कि आर.पी.एस.सी. **प्रथम** श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का ''टी'' मान 12.07 प्रतिशत प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 198 (df-198) के सारणीमान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 से अधिक पाया गया हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आर.पी.एस.सी. **प्रथम** श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर में सार्थक अन्तर होता है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर आर.पी.एस.सी. **प्रथम** श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति दबाव स्तर शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, व्यावसायिक क्षेत्रों का 'टी' मान क्रमशः 11.26, 7.54, 5.04, 4.82, 1.48, 3.37 पाया गया है। जो ''टी'' मान से बहुत ज्यादा है। अतः आर.पी.एस.सी. **प्रथम** श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में पारिवारिक क्षेत्र में टी–मान 1.48 सारणीमान 1.98 से कम है इसीलिए पारिवारिक क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर में अन्तर देखने को मिलता है। अतः आर.पी.एस.सी. **प्रथम** श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का 'टी' मान 0.05 स्तर से अधिक पाये जाने के कारण परिकल्पना 2 को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना : 3 आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या 4.8

आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति

क्षेत्र	N	पुरूष विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी		महिला विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी		Sed	t value
		Mean	Sd	Mean	Sd		
शै क्षक	100	28.2	5.5	25.8	3.4	0.6	3.69
आ र्थक	100	26.6	5.7	25.6	2.8	0.6	1.49
सामाजिक	100	26.3	5.4	25.4	3.0	0.6	1.42
मनोवैज्ञानिक	100	28.3	5.4	23.9	4.4	0.7	6.22
पारिवारिक	100	27.1	3.9	23.6	3.8	0.5	6.42
व्यावसायिक	100	28.8	4.6	25.0	1.7	0.5	7.72
कुल	**100**	**165.2**	**19.3**	**149.3**	**7.6**	**2.1**	**7.64**

Table Value at df = 198 0.05 = 1.98 and 0.01 = 2.61

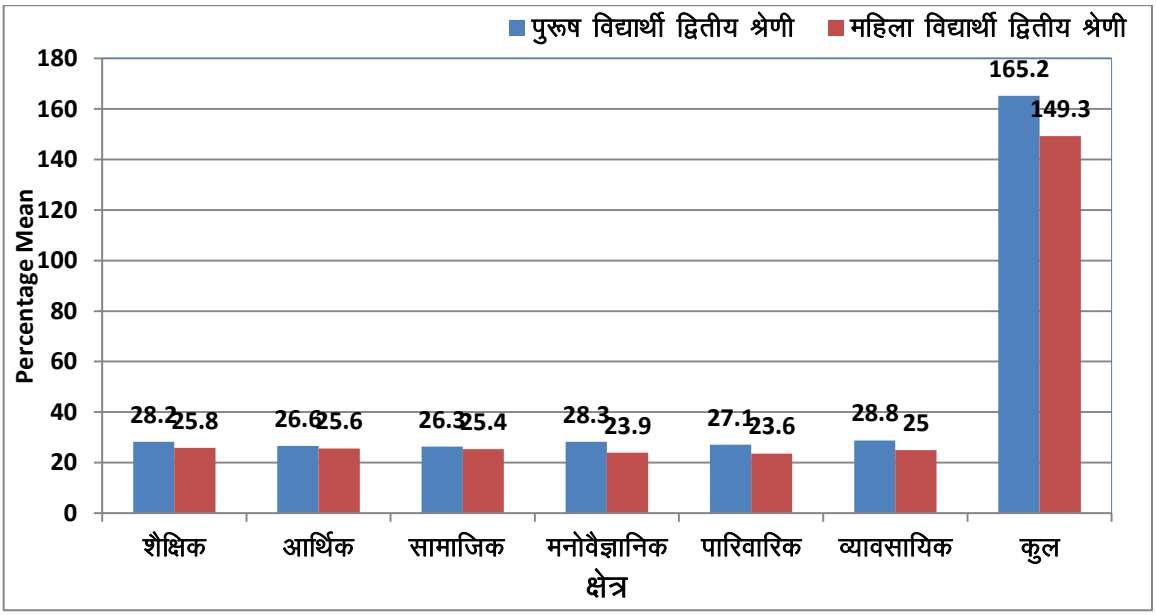

आरेख संख्या 4.8

आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

उपरोक्त सारणी 4.8 से स्पष्ट है कि आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का ''टी'' मान 7.64 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 198 (df-198) के सारणीमान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 से अधिक पाया गया हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आर.पी. एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर में सार्थक अन्तर देखने को मिलता है। आर.पी. एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, व्यावसायिक क्षेत्रों का 'टी' मान क्रमशः 3.69, 1.49, 1.42, 6.22, 6.42, 7.72 पाया गया है। जो ''टी'' मान से बहुत ज्यादा है। आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रों में दबाव स्तर का टी–मान 1.49 व 1.42 सारणीमान 1.98 से कम होने के कारण पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर में अन्तर नहीं पाया जाता है। अतः आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का 'टी' मान 0.05 स्तर से अधिक होने के कारण परिकल्पना 3 को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना : 4 आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या 4.9

आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति

क्षेत्र	N	पुरूष विद्यार्थी तृतीय श्रेणी		महिला विद्यार्थी तृतीय श्रेणी		Sed	t value
		Mean	Sd	Mean	Sd		
शै क्षक	100	31.0	6.4	30.1	6.0	0.9	1.03
आ र्थक	100	31.1	4.7	27.6	6.2	0.8	4.55
सामाजिक	100	28.8	4.2	29.1	5.8	0.7	0.41
मनोवैज्ञानिक	100	31.5	4.4	28.0	6.0	0.7	4.66
पारिवारिक	100	30.6	4.4	25.3	1.3	0.5	11.47
व्यावसायिक	100	30.5	4.6	27.0	3.5	0.6	6.10
कुल	**100**	**183.6**	**14.0**	**167.1**	**17.7**	**2.3**	**7.29**

Table Value at df = 198 0.05 = 1.98 and 0.01 = 2.61

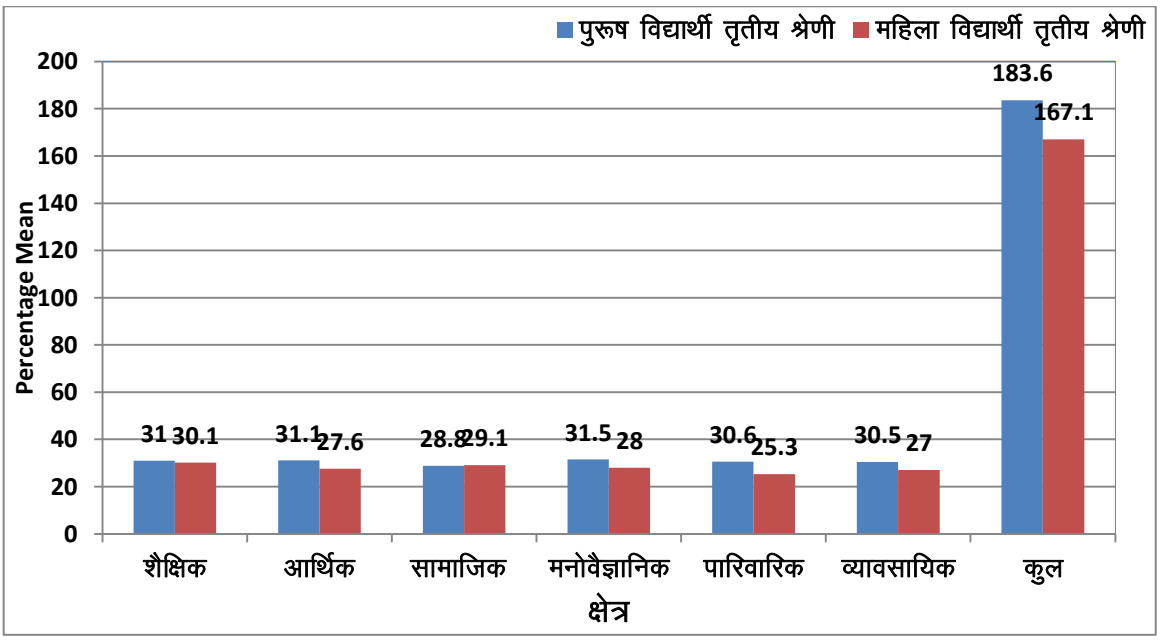

आरेख संख्या 4.9

आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

उपरोक्त सारणी 4.9 से स्पष्ट है कि आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का ''टी'' मान 7.29 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 198 (df-198) के सारणीमान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 से बहुत ज्यादा हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आर.पी.एस. सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। आर.पी.एस. सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, व्यावसायिक क्षेत्रों में 'टी' मान क्रमशः 4.55, 4. 66, 11.47, 6.10 पाया गया है जो ''टी'' मान से ज्यादा है। आर्थिक 1. 03 व सामाजिक 0.41 दबाव स्तर टी–मान से कम होने के कारण पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर में कोई अन्तर नहीं पाया गया है। अतः आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का 'टी' मान 0.05 स्तर से अधिक होने के कारण परिकल्पना 4 को अस्वीकृत किया जाता है।

4.5.3 समायोजन प्रमापनी से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण :–

शोधकर्त्री ने आर.पी.एस.सी. कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तर को मापने के लिए मनोवैज्ञानिकों द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण के रूप में **डॉ. ए.के.पी. सिन्हा** एण्ड **डॉ. आर.पी. सिंह** द्वारा निर्मित **एडजस्टमेन्ट इनवेन्ट्री फॉर कॉलेज**'' का प्रयोग किया। समायोजन स्तर का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन व प्रतिशत मध्यमान के आधार पर क्षेत्रानुसार किया गया है।

शोध उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के आधार पर समायोजन प्रमापनी से प्राप्त दत्तों का विश्लेषण किया है जो निम्नांकित है :–

उद्देश्य : 6 आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में समायोजन का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.10

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के समायोजन का क्षेत्रानुसार मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन	प्रतिशत मध्यमान
घर	10.6	2.6	66.5
स्वास्थ्य	9.6	2.1	63.8
सामाजिक	12.4	2.3	65.4
सांवे गक	21.5	5.6	69.4
शै क्षक	13.7	2.5	65.3
कुल	**67.9**	**9.5**	**66.6**

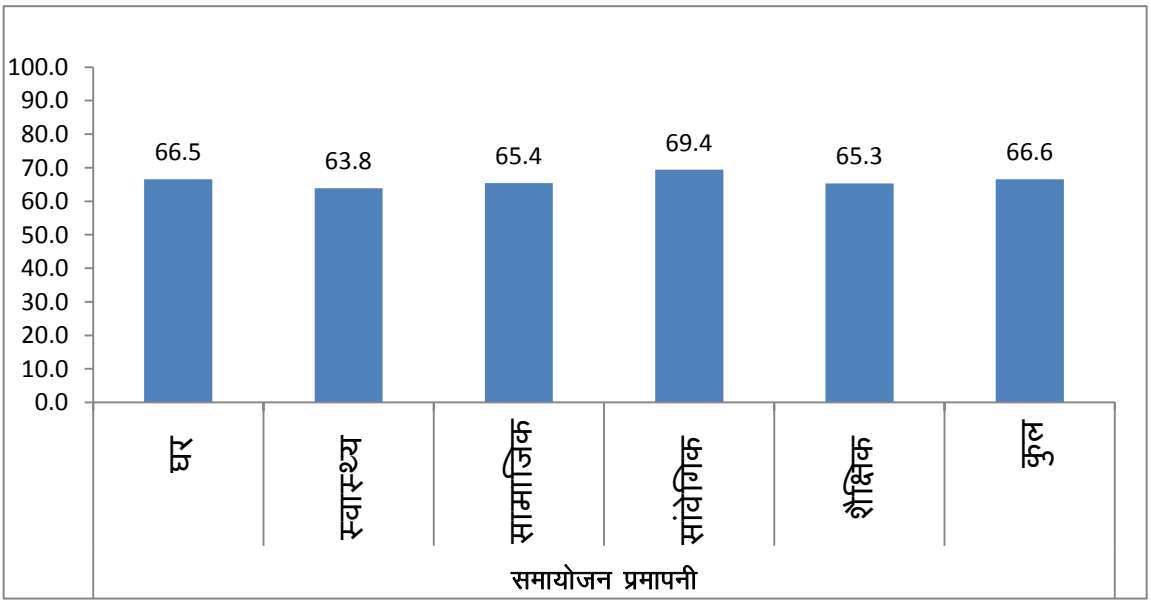

आरेख संख्या 4.10

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के समायोजन का क्षेत्रानुसार मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति

उपरोक्त सारणी 4.10 व आरेख 4.10 को एक साथ देखने पर ज्ञात होता हैं कि समग्र विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 67.9, मानक विचलन 9.5 व प्रतिशत मध्यमान 66.6 प्राप्त हुआ हैं जो औसत स्तर से ज्यादा हैं। क्षेत्रानुसार अध्ययन करने पर घर में 10.6 व स्वास्थ्य में 9.6 प्रतिशत के साथ समायोजन कम प्राप्त हुआ हैं तथा 21.5 प्रतिशत के साथ सांवेगिक क्षेत्र में समायोजन सर्वाधिक पाया गया है, सामाजिक में 12.4 व शैक्षिक में 13.7 प्रतिशत के साथ समायोजन औसत स्तर का प्राप्त हुआ है। इससे पता चलता है कि विद्यार्थी घर व स्वास्थ्य के प्रति ज्यादा लापरवाह रहे हैं तथा सांवेगिक व मानसिक रूप से ज्यादा परेशान रहे हैं।

उद्देश्य : 7 आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.11

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

क्षेत्र	पुरूष विद्यार्थी		महिला विद्यार्थी		प्रतिशत मध्यमान	
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	पुरूष विद्यार्थी	महिला विद्यार्थी
घर	10.3	2.4	11.0	2.8	64.1	68.9
स्वास्थ्य	9.2	2.0	9.9	2.2	61.4	66.2
सामाजिक	12.1	2.4	12.7	2.2	63.9	67.0
सांवे गक	21.6	5.8	21.4	5.5	69.7	69.1
शै क्षक	12.5	2.2	15.0	2.2	59.3	71.3
कुल	**65.7**	**9.4**	**70.1**	**9.1**	**64.4**	**68.7**

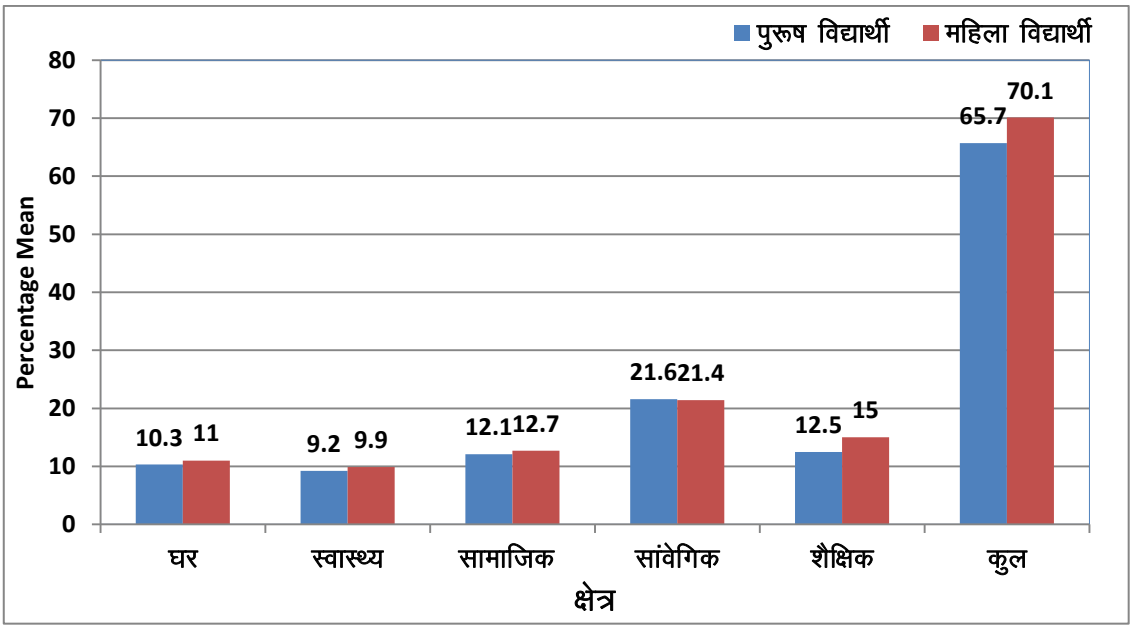

आरेख संख्या 4.11

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

उपरोक्त सारणी 4.11 व आरेख 4.11 को एक साथ देखने पर ज्ञात होता हैं कि आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 64.4 तथा महिला विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 68.7 प्रतिशत प्राप्त हुआ है जो पुरूष विद्यार्थियों में महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा कम समायोजन पाया गया है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी घर में लड़कों में 64.1 के प्रतिशत के साथ महिला विद्यार्थियों में 68.9 प्रतिशत ज्यादा समायोजन पाया गया है। स्वास्थ्य में भी पुरूष विद्यार्थियों के 61.4 प्रतिशत की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में 66.2 प्रतिशत समायोजन ज्यादा पाया है। सामाजिक क्षेत्र में 63.9 व 67. 00 सांवेगिक क्षेत्र में 69.7 व 69.1 तथा शैक्षिक क्षेत्र में 59.3 व 71.3 प्रतिशत के साथ महिला विद्यार्थियों में समायोजन पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा ज्यादा प्राप्त हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि समायोजन स्थापित करने में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थी ज्यादा सक्षम व समर्थशाली है।

उद्देश्य :8 आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.12

आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

क्षेत्र	पुरूष विद्यार्थी प्रथम श्रेणी		महिला विद्यार्थी प्रथम श्रेणी		प्रतिशत मध्यमान	
	Mean	**Sd**	**Mean**	**Sd**	पुरूष विद्यार्थी प्रथम श्रेणी	महिला विद्यार्थी प्रथम श्रेणी
घर	11.9	2.2	13.2	1.7	74.4	82.4
स्वास्थ्य	10.8	2.7	11.7	1.9	71.7	78.0
सामाजिक	13.3	1.6	13.1	1.8	69.9	69.2
सांवे गक	24.2	3.4	25.0	1.2	78.1	80.7
शै क्षक	13.1	1.5	15.7	2.2	62.6	74.5
कुल	**73.3**	**4.9**	**78.7**	**3.6**	**71.9**	**77.1**

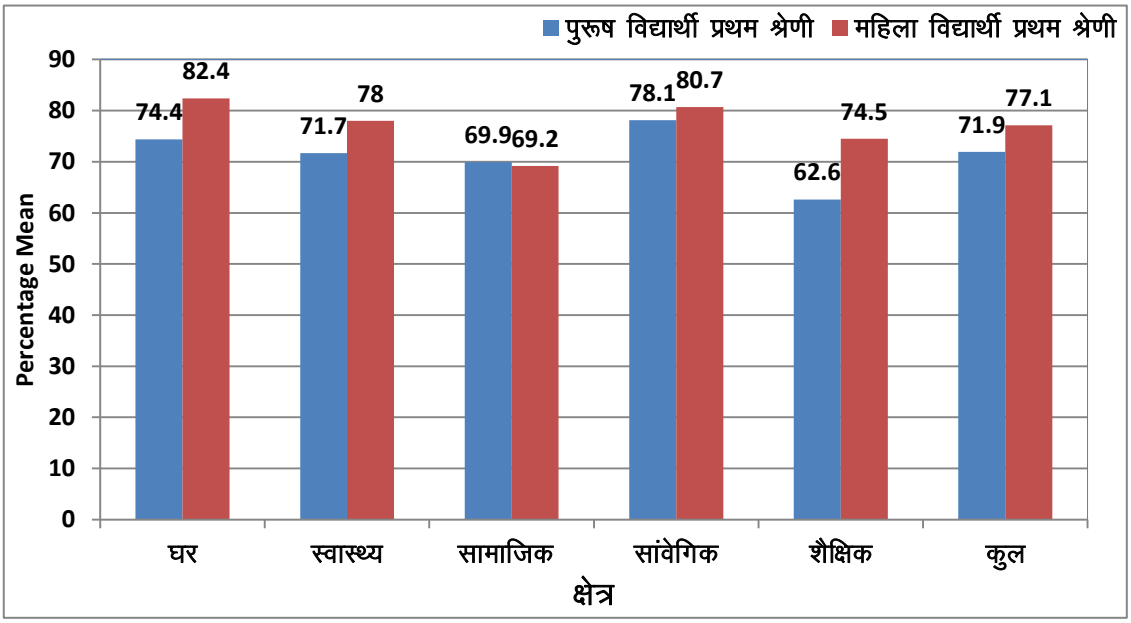

आरेख संख्या 4.12

आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति

उपरोक्त सारणी 4.12 व आरेख 4.12 को समेकित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 71.9 तथा महिला विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 77.1 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में ज्यादा समायोजन करने की क्षमता पायी जाती है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में ज्यादा समायोजन पाया है जो क्रमानुसार घर में 82.4, स्वास्थ्य 78.00, सामाजिक 69.2, सांवेगिक 80.7 तथा शैक्षिक क्षेत्र में 74.5 प्रतिशत रहा है। इसका मुख्य कारण पुरूष विद्यार्थियों का सांवेगिक रूप से ज्यादा क्रोधित होना पाया गया है जिससे उनकी समायोजन क्षमता कमजोर हो जाती है।

उद्देश्य : 9 आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.13

आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

क्षेत्र	पुरूष विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी		महिला विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी		प्रतिशत मध्यमान	
	Mean	**Sd**	**Mean**	**Sd**	पुरूष विद्यार्थी प्रथम श्रेणी	महिला विद्यार्थी प्रथम श्रेणी
घर	9.3	2.1	11.5	2.5	57.9	72.0
स्वास्थ्य	8.8	0.9	9.5	1.8	58.8	63.0
सामाजिक	13.4	1.7	13.5	1.5	70.5	71.0
सांवे गक	22.3	5.6	20.1	5.9	72.0	64.7
शै क्षक	13.4	1.6	14.9	1.9	63.8	70.7
कुल	**67.2**	**6.9**	**69.4**	**7.3**	**65.9**	**68.0**

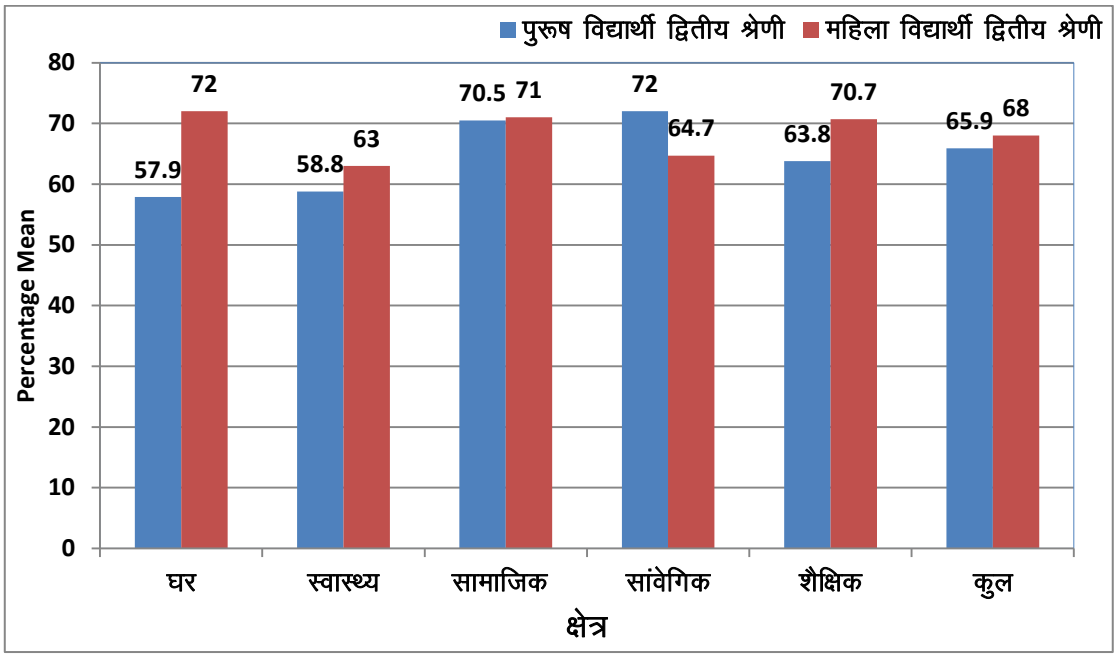

आरेख संख्या 4.13

आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति

उपरोक्त सारणी 4.13 व आरेख 4.13 को समेकित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों का समायोजन मध्यमान 65.9 प्रतिशत प्राप्त हुआ है जो आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों के समायोजन मध्यमान 68.00 प्रतिशत से कम है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों का समायोजन घर में 57.9, सामाजिक में 70.5, स्वास्थ्य में 58.8, सांवेगिक में 72.00, शैक्षिक में 63.8 प्रतिशत पाया गया है जो महिला विद्यार्थियों के समायोजन घर में 72.00, स्वास्थ्य 63.00 सामाजिक 71.00, सांवेगिक 64.7 शैक्षिक क्षेत्र में 70.7 प्रतिशत के साथ ज्यादा समायोजन पाया गया है। इससे तथ्य से स्पष्ट है कि महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में समायोजन कम पाया जाता है।

उद्देश्य :10 आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.14

आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

क्षेत्र	पुरूष विद्यार्थी तृतीय श्रेणी		महिला विद्यार्थी तृतीय श्रेणी		प्रतिशत मध्यमान	
	Mean	**Sd**	**Mean**	**Sd**	पुरूष विद्यार्थी तृतीय श्रेणी	महिला विद्यार्थी तृतीय श्रेणी
घर	9.6	2.1	8.4	1.7	60.1	52.4
स्वास्थ्य	8.1	0.6	8.7	1.5	53.8	57.7
सामाजिक	9.8	2.0	11.6	2.5	51.3	60.8
सांवे गक	18.3	6.3	19.2	5.9	59.1	61.9
शै क्षक	10.8	2.4	14.4	2.2	51.6	68.7
कुल	**56.6**	**6.9**	**62.2**	**6.6**	**55.5**	**61.0**

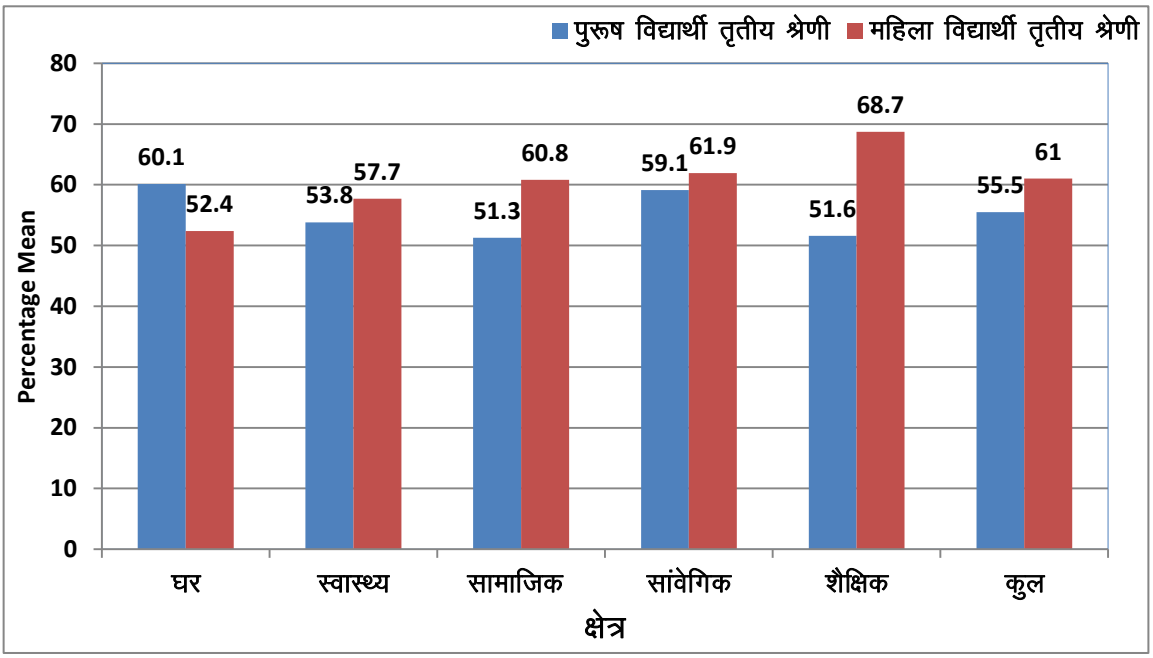

आरेख संख्या 4.14

आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों की तुलनात्मक स्थिति

उपरोक्त सारणी 4.14 व आरेख 4.14 को एक साथ देखने पर ज्ञात होता है कि आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों का समायोजन मध्यमान 55.5 प्रतिशत प्राप्त हुआ जो महिला विद्यार्थियों के समायोजन मध्यमान 61.00 प्रतिशत से बहुत कम है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में समायोजन कम पाया गया है। सर्वाधिक समायोजन शैक्षिक क्षेत्र में 68.7 तथा सबसे कम घर क्षेत्र में 52.4 प्रतिशत प्राप्त हुआ है।

4.5.4 परिकल्पनाओं के आधार पर समायोजन का विश्लेषण :–

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों, प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी तथा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की सार्थकता का पता लगाने हेतु ''टी'' परीक्षण का प्रयोग किया गया है, जिसका उल्लेख निम्नानुसार है:–

परिकल्पना : 5 आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या 4.15

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

क्षेत्र	N	पुरूष विद्यार्थी		महिला विद्यार्थी		Sed	t value
		Mean	Sd	Mean	Sd		
घर	300	10.3	2.4	11.0	2.8	0.2	3.60
स्वास्थ्य	300	9.2	2.0	9.9	2.2	0.2	4.18
सामाजिक	300	12.1	2.4	12.7	2.2	0.2	3.12
सांवे गक	300	21.6	5.8	21.4	5.5	0.5	0.44
शै क्षक	300	12.5	2.2	15.0	2.2	0.2	14.13
कुल	**300**	**65.7**	**9.4**	**70.1**	**9.1**	**0.8**	**5.82**

Table Value at df = 598 0.05 = 1.96 and 0.01 = 2.58

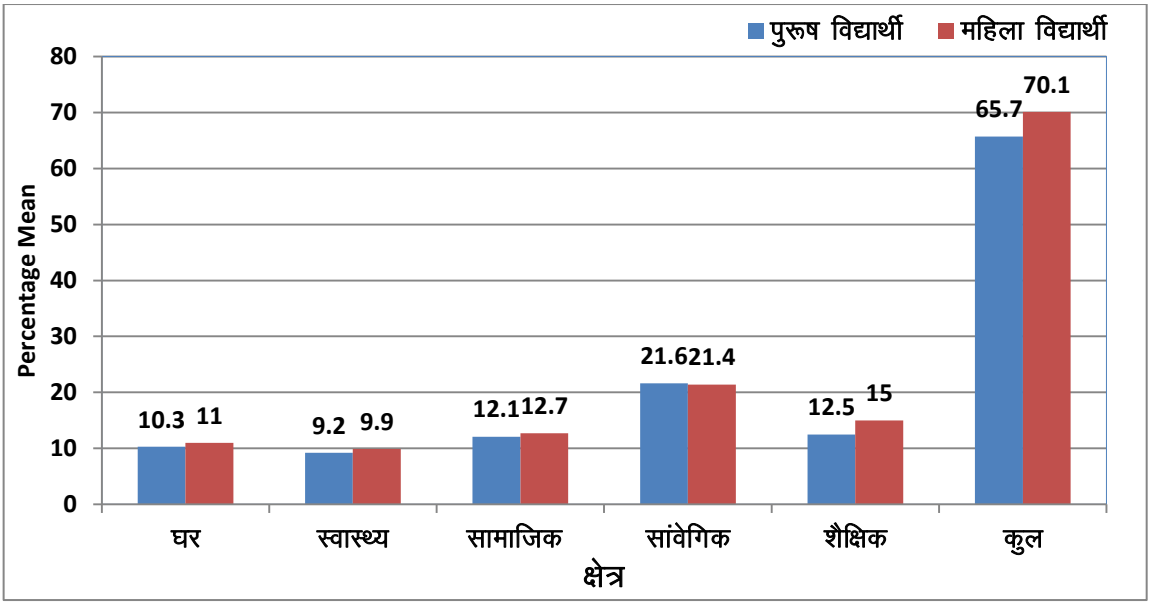

आरेख संख्या 4.15

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

उपरोक्त सारणी 4.15 के आधार पर आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन ''टी'' मान 5.82 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 598 (df-598) के सारणीमान 0.05 स्तर पर 1.96 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 से बहुत ज्यादा पाया गया हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया जाता है। समायोजन का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर घर में 3.60, स्वास्थ्य में 4.18, सामाजिक में 3.12, सांवेगिक में 0.44 तथा शैक्षिक क्षेत्र में 14.13 प्रतिशत 'टी' मान पाया गया है। सांवेगिक क्षेत्र का समायोजन 0.44 सारणी टी–मान से कम होने के कारण पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है। लेकिन शैक्षिक समायोजन की टी–मान 14.13 सारणी टी–मान 2.58 से बहुत ज्यादा होने से पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन को सार्थक अन्तर देखने को मिलता है।

अतः आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना : 6 आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या 4.16

आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति

क्षेत्र	N	पुरूष विद्यार्थी प्रथम श्रेणी		महिला विद्यार्थी प्रथम श्रेणी		Sed	t value
		Mean	Sd	Mean	Sd		
घर	100	11.9	2.2	13.2	1.7	0.3	4.63
स्वास्थ्य	100	10.8	2.7	11.7	1.9	0.3	2.83
सामाजिक	100	13.3	1.6	13.1	1.8	0.2	0.59
सांवे गक	100	24.2	3.4	25.0	1.2	0.4	2.20
शै क्षक	100	13.1	1.5	15.7	2.2	0.3	9.35
कुल	**100**	**73.3**	**4.9**	**78.7**	**3.6**	**0.6**	**8.86**

Table Value at df = 198 0.05 = 1.98 and 0.01 = 2.61

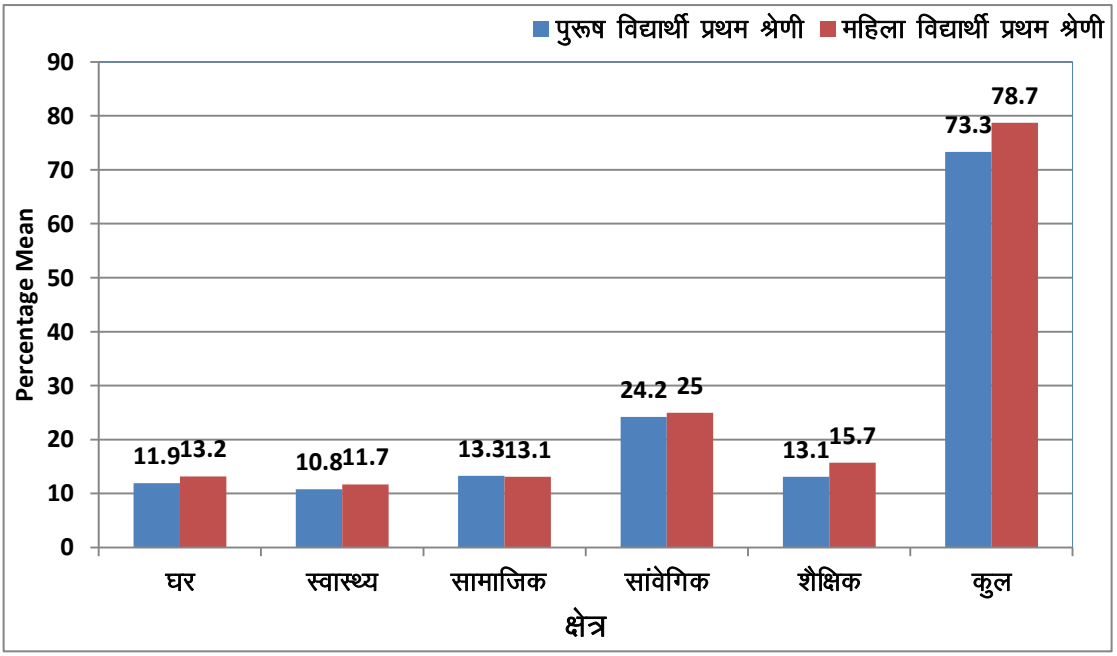

आरेख संख्या 4.16

आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

उपरोक्त सारणी 4.16 से स्पष्ट है कि आर.पी.एस.सी. **प्रथम** श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का ''टी'' मान 8.86 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 198 (df-198) के सारणीमान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 से बहुत ज्यादा हैं। जिससे आर.पी.एस.सी. **प्रथम** श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर ज्यादा पाया गया है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी आर.पी.एस.सी. **प्रथम** श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का टी–मान क्रमशः घर क्षेत्र में 4.63, स्वास्थ्य 2.83 सामाजिक 0.59, सांवेगिक 2.20 तथा शैक्षिक में 9.35 पाया गया। सामाजिक क्षेत्र में टी–मान सारणी मान से कम ोने के कारण पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। लेकिन शैक्षिक क्षेत्र में समायोजन का टी–मान सारणी मान से बहुत ज्यादा होने से सार्थक अन्तर सर्वाधिक देखा गया है। अतः आर.पी.एस.सी. **प्रथम** श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर सर्वाधिक पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना : 7 आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या 4.17

आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति

क्षेत्र		पुरूष विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी		महिला विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी		Sed	t value
	N	Mean	Sd	Mean	Sd		
घर	100	9.3	2.1	11.5	2.5	0.3	6.89
स्वास्थ्य	100	8.8	0.9	9.5	1.8	0.2	3.08
सामाजिक	100	13.4	1.7	13.5	1.5	0.2	0.44
सांवे गक	100	22.3	5.6	20.1	5.9	0.8	2.79
शै क्षक	100	13.4	1.6	14.9	1.9	0.3	5.79
कुल	**100**	**67.2**	**6.9**	**69.4**	**7.3**	**1.0**	**2.15**

Table Value at df = 198 0.05 = 1.98 and 0.01 = 2.61

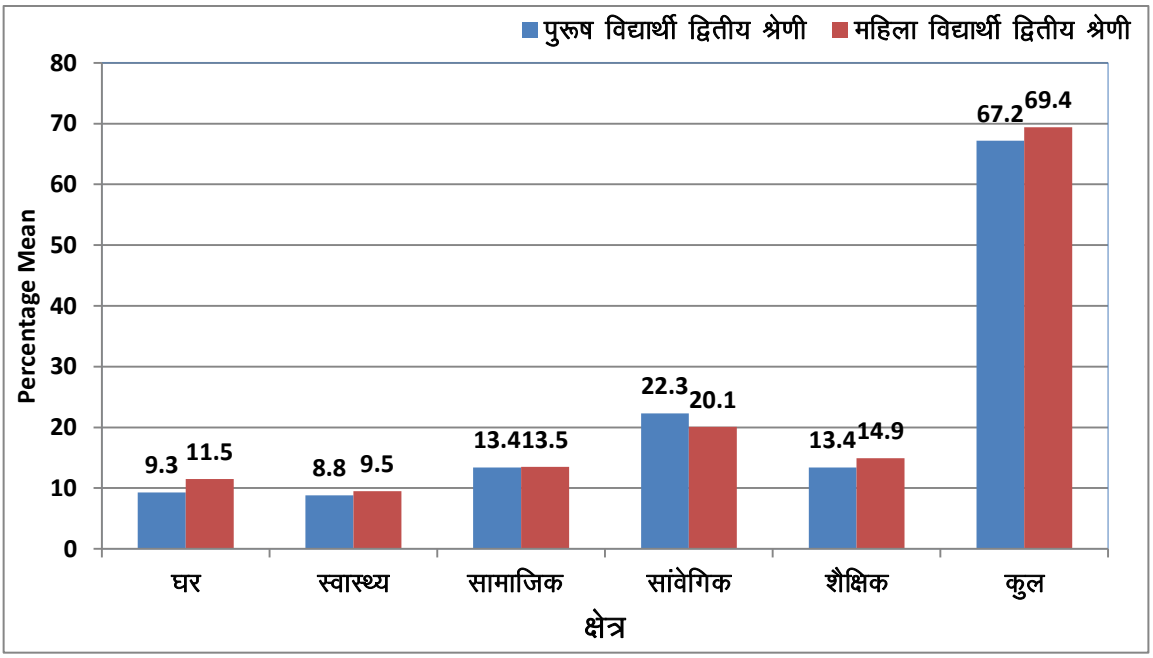

आरेख संख्या 4.17

आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

उपरोक्त सारणी 4.17 से स्पष्ट है कि आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का ''टी'' मान 2.15 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 198 (df-198) के सारणीमान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 से अधिक पाया गया हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर होता है। आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर घर, स्वास्थ्य, सामाजिक, सांवेगिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों में समायोजन का टी–मान क्रमशः 6.89, 3.08, 0.44, 2.79 तथा 5.79 पाया गया है। सामाजिक क्षेत्र में टी–मान 0.44 सारणी मान से कम होने के कारण पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। लेकिन घर क्षेत्र में टी–मान 6.89 सारणीमान से ज्यादा पाये जाने के कारण पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सर्वाधिक सार्थक अन्तर देखा गया है। अतः आर.पी.एस. सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर अधिक पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना : 8 आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या 4.18

आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक स्थिति

क्षेत्र	N	पुरूष विद्यार्थी तृतीय श्रेणी		महिला विद्यार्थी तृतीय श्रेणी		Sed	t value
		Mean	Sd	Mean	Sd		
घर	100	9.6	2.1	8.4	1.7	0.3	4.58
स्वास्थ्य	100	8.1	0.6	8.7	1.5	0.2	3.66
सामाजिक	100	9.8	2.0	11.6	2.5	0.3	5.60
सांवे गक	100	18.3	6.3	19.2	5.9	0.9	1.01
शै क्षक	100	10.8	2.4	14.4	2.2	0.3	11.10
कुल	**100**	**56.6**	**6.9**	**62.2**	**6.6**	**1.0**	**5.84**

Table Value at df = 198 0.05 = 1.98 and 0.01 = 2.61

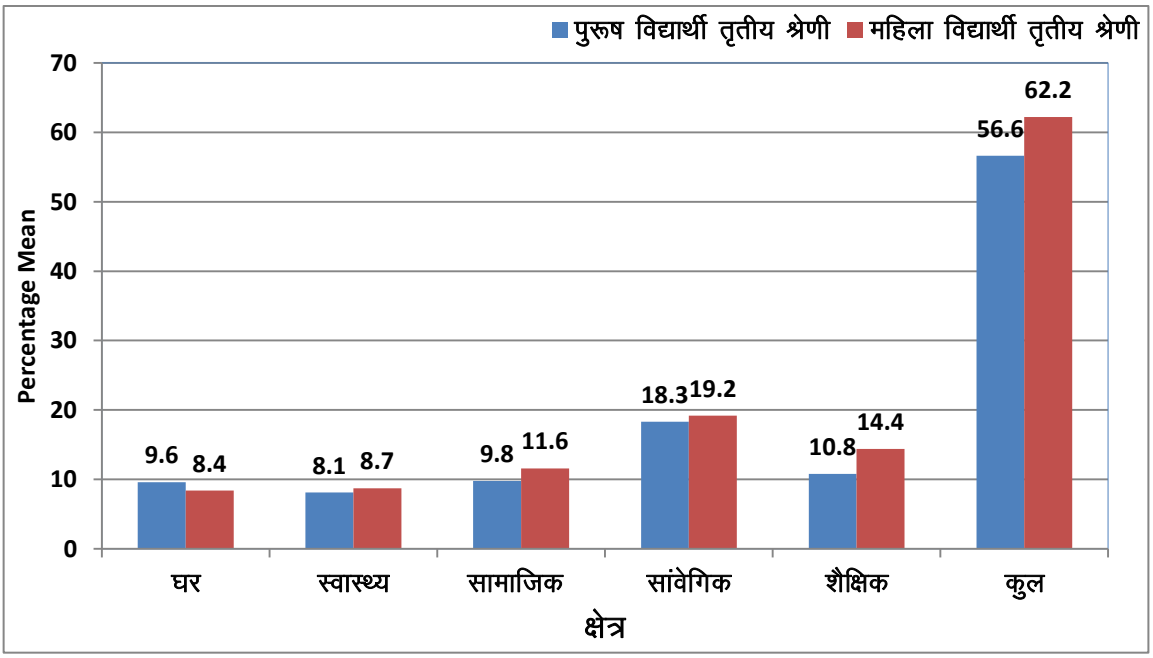

आरेख संख्या 4.18

आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

उपरोक्त सारणी 4.18 से स्पष्ट है कि आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के कुल समायोजन का तुलना करने पर ''टी'' मान 5.84 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 198 (df-198) के सारणीमान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 से ज्यादा पाया गया हैं। इससे स्पष्ट होता है कि पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर होता है। आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर घर क्षेत्र में 4.58, स्वास्थ्य 3.66, सामाजिक 5.60, सांवेगिक 1.01 तथा शैक्षिक 11.10 टी–मान पाया गया है। सांवेगिक क्षेत्र का टी–मान 0.01 सारणीमान से कम होने के कारण आर. पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन को कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। लेकिन शैक्षिक क्षेत्र में टी–मान 11.10 सारणीमान से बहुत ज्यादा होने से सर्वाधिक सार्थक अन्तर देखा गया है। अतः आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायेाजन में सर्वाधिक अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

4.3.6 सहसम्बन्ध गुणांक से प्राप्त विश्लेषण :–

सहसंबंध मूल रूप से दो चरों के मध्य संबंध हैं। जीवन की अनेक घटनायें एक दुसरे से संबंधित होती हैं। जब दो चर साथ–साथ परिवर्तित होते है जो उससे प्रदत्तों को द्विचर कहते हैं। सहसंबंध द्वारा चरों के संबंध की मात्रा का वर्णन प्राप्त होता हैं या उसके दो परिवर्तियों में साहचर्य की मात्रा का मापन किया जाता हैं। सहसंबंध द्वारा मापित साहचर्य की मात्रा जितनी अधिक होगी पूर्व कथन उतना ही अधिक सही होगा। दो चरों में सहसंबंध तब होता है जब किसी एक चर में होने

वाला परिवर्तन दूसरे चर को प्रभावित करेगा जब किसी एक चर पर पडने वाला कोई प्रभाव दूसरे चर को प्रभावित करें तो उसे सहसंबंध कहते हैं। संबंध धनात्मक, ऋणात्मक व शून्य तीन प्रकार का होता हैं।

धनात्मक सहसंबंध :– जब एक चर में होने वाला परिवर्तन दूसरे चर को उसी दिशा में प्रभावित करें तो दोनो चरों में धनात्मक सहसंबंध होता हैं।

ऋणात्मक सहसंबंध :– जब एक चर में होने वाला परिवर्तन दूसरे चर को विपरित दिशा में प्रभावित करें तो दोनो चरों में ऋणात्मक सहसंबंध होता हैं।

शून्य सहसंबंध :– जब एक चर में होने वाला परिवर्तन दूसरे चर को किसी प्रकार से प्रभावित नही करें तो दोनो चरों में शून्य सहसंबंध होता हैं।

फरग्युसन के अनुसार :– "सहसंबंध चरों में संबंधों के अंशों के वर्णन से संबंधित हैं।

गिल्फोर्ड के अनुसार :– ''सहसंबंध गुणांक वह अंक हैं जो यह बताता है कि दो वस्तुएँ किस सीमा तक संबंधित हैं कि एक चर दूसरे चर के साथ किस सीमा तक जाता हैं।''

प्रस्तुत शोध में सहसंबंध का उद्देश्य आरपीएससी कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव व समायोजन के मध्य ज्ञात कर निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया हैं। सहसंबंध की गुणात्मक व्याख्या धनात्मक व ऋणात्मक सहसंबंधों के आधार पर की गयी हैं। केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंधों का विवेचन निम्न प्रकार से हैं।

उद्देश्य : 11 आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.19

आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक

समूह	सहसंबंध गुणांक	
	कुल	सार्थकता स्तर
पुरूष विद्यार्थी	– 0.49	0.01
महिला विद्यार्थी	– 0.54	0.01

उपरोक्त सारणी 4.19 को समेकित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि अरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक –0.49 प्राप्त हुआ हैं तथा महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक – 0.54 प्राप्त हुआ जो नकारात्मक सहसंबंध को दर्शाता हैं। इससे स्पष्ट होता है कि पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव एवं समायोजन की तुलना करने पर दोनो के मध्य सहसंबंध गुणांक नकारात्मक ही प्राप्त हुआ हैं, अतः यह कहा जा सकता है कि पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता ज्यादा पायी जाती हैं।

उद्देश्य :12 आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 4.20

आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक

समूह	सहसंबंध गुणांक	
	कुल	सार्थकता स्तर
आरपीएससी प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी	– 0.173	0.01
आरपीएससी द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी	0.076	0.01
आरपीएससी तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी	0.070	0.01
आरपीएससी प्रथम श्रेणी की महिला विद्यार्थी	0.067	0.01
आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थी	– 0.110	0.01
आरपीएससी तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थी	0.118	0.01

उपरोक्त सारणी 4.20 से ज्ञात होता है कि आरपीएससी की कोचिंग करने वाले प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों के दबाव एवं समायोजन के सहसंबंध का गुणांक –0.173 प्राप्त हुआ, द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों का सहसंबंध गुणांक 0.076 व तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों का सहसंबंध गुणांक 0.070 प्राप्त हुआ। प्रथम श्रेणी की महिला विद्यार्थियों के सहसंबंध का गुणांक 0.067 प्राप्त हुआ, द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों का सहसंबंध गुणांक 0.110 व तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों का सहसंबंध गुणांक 0.118 प्राप्त हुआ। आरपीएससी

की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों का ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया हैं। इससे स्पष्ट होता है कि दबाव स्तर मे कमी होने से समायेजन स्तर में कमी होती जाती हैं। प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों के सहसंबंध गुणांक की अपेक्षा द्वितीय व तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों का सहसबंध गुंणांक 0.076, 0.070 धनात्मक पया गया हैं। प्रथम श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में सहसंबंध गुणांक 0.067 तथा तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में सहसंबंध गुणांक 0.118 की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में –0.110 गुणांक के साथ नकरात्मक सहसंबंध पाया जात हैं। इससे स्पष्ट होता है कि दबाव एवं समायोजन के सहसंबंध में कमी देखी गई हैं। पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों के समायोजन में वृद्धि देखी गई हैं।

समग्र दृष्टि से देखा जाए तो दबाव एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया तथा आरपीएससी प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों व द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में तुलना करने पर ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया हैं।

4.3.6 परिकल्पनाओं के आधार पर दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक :–

परिकल्पना : 9 – आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक नकारात्मक प्राप्त हुआ हैं, अतः उक्त परिकल्पना (आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है) को स्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना : 10 आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि आर.पी.एस.सी. प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक सकारात्मक प्राप्त हुआ हैं, अतः उक्त परिकल्पना (आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है) को अस्वीकृत किया जाता है।

4.4 उपसंहार :–

इस परिच्छेद में आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन को जानने के लिए तीन समूहों – पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थी, प्रथम श्रेणी पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थी, द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थी तथा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में वर्गीकृत किया है। विद्यार्थियों में दबाव स्तर एवं समायोजन का विश्लेषण क्षेत्रानुसार प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं प्रतिशत मध्यमान के आधार पर किया गया है। क्षेत्र, लिंग के आधार पर पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर एवं समायोजन के अन्तर की सार्थकता का भी विवेचन किया गया है। इसके पश्चात् समायोजन एवं केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में सहसम्बन्ध को ज्ञात करने का प्रयास किया गया जिसके परिणाम स्वरूप सकारात्मक एवं नकारात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ है।

पंचम परिच्छेद

शोध निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध हेतु सुझाव

पंचम परिच्छेद

शोध निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध हेतु सुझाव

5.1 प्रस्तावना :–

शिक्षा का उद्देश्य बालक को सभ्य, सुसंस्कृत व नैतिक मूल्यों से युक्त बनना हैं। शिक्षा उसे अच्छे बुरे का अन्तर बताती हैं, तथा उसके अन्दर छिपी हुई प्रतिभा व गुणों को बाहर निकालती हैं। बालक अपनी इच्छा, कार्य व योग्यताओं के अनुसार उन्हें पूरा करने लगता हैं, जिसको पूरा करने में शिक्षा उसकों सहयोग प्रदान करती हैं एवं उसको सन्मार्ग दिखाती हैं। बालकों की कोई न कोई इच्छा होती हैं चाहे वह शिक्षक बनने की हो, या डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, आर्किटैक्चर बनने की हो और वह अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिए बहुत मेहनत से पढाई करते हैं जिससे बालक पर मनोवैज्ञानिक व मानसिक दबाव ज्यादा रहता हैं। कुछ बालक परिस्थितियों व वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेते हैं तो उनमें दबाव कम होता हैं तथा कुछ बालक परिस्थितियों के साथ समायोजन नहीं कर पाते है, तो उनमें दबाव ज्यादा होता हैं। दबाव ज्यादा होने से विद्यार्थियों में मानसिक अनिश्चितता बनी रहती हैं कि मैं पास होंउँगा या फैल। आरपीएससी भर्ती परीक्षा में मेरा चयन होगा कि नहीं क्योंकि सरकारी शिक्षक भर्ती कम पदों के लिए निकलती हैं और विद्यार्थी लाखों में फार्म भरते हैं। इसलिए विद्यार्थियों को चयन के लिए कडी मेहनत करनी पडती हैं। इसीलिए विद्यार्थी एक अच्छे कोचिंग संस्थान की ओर रूख करते हैं जहाँ पर वे लाखों विद्यार्थियों के साथ अपनी योग्यतानुसार एवं क्षमतानुसार अपने भाग्य को आजमाने का प्रयास करते हैं। कोचिंग संस्थान में विद्यार्थियों को 4 से 6 घंटे नियमित रूप से सुव्यवस्थित तरीके से पाठ्यक्रमानुसार व अनुशासनपूर्ण तरीके से पढाई करवाई जाती हैं तथा विद्यार्थियों की साप्ताहिक आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा ली जाती हैं, जिसमें छात्रों की व्यक्तिगत स्थिति मालुम पडती हैं। कुछ बच्चें अपनी निम्नतम रैंक को देखकर घबरा जाते है और वह मानसिक रूप से दबाव महसूस करने लगते हैं। पढाई से ध्यान विचलित

होने लगता हैं। कोचिंग में अच्छी शिक्षा व निर्देशन के माध्यम से बच्चों के अन्दर छीपी हुई प्रतिभा को निखारा जाता हैं। उसको प्रतियोगी परीक्षा मे सफल होने के लिए तैयार किया जाता हैं। लेकिन वर्तमान में कडी प्रतिस्पर्द्धा के कारण विद्यार्थियों में दबाव बढता ही जा रहा हैं, जिसके कारण वह अपने आपकों परिस्थितियों, वातावरण, परिवार, मित्रों, समाज, व कोचिंग सहपाठियों के साथ समायोजित नही ंकर पाते हैं। इसी कारण शहर में आये दिन आत्महत्या जैसी घटनाएँ घटित हो रही हैं।

5.2 शोध समस्या का औचित्य :–

इस समस्या को लेने के पीछे यह मन्तव्य रहा है कि शिक्षा के प्रतिस्पर्धात्मक युग में बी.एड़ करने के उपरान्त भी कोचिंग में आर.पी.एस.सी. की तैयारी करते है और आर.पी.एस.सी. कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में निरन्तर दबाव व असन्तोष बढ़ता जाता हैं। निरन्तर आ रहे बदलाव के कारण बढ़ती प्रतिस्पर्धा तथा अभिभावकों की बच्चों के प्रति अति महत्त्वाकांक्षाओं के कारण विद्यार्थी अध्ययनरत् रहते हुए लगातार दबाव व असमायोजन अनुभव करते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी बी.एड. की ट्रेनिंग पूरी करने के बाद पूरे जोश उत्साह लगन एवं उमंग के साथ शिक्षक भर्ती के प्रतिस्पर्धात्मक युग में प्रवेश करता हैं। लेकिन आर.पी.एस.सी के बढ़ते भ्रष्टाचार एवं शिक्षक भर्ती घोटालों के कारण वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने से वर्जित रह जाते हैं। वह अपनी समस्याओं का सामना करने की बजाय निराश होकर अपने जीवन या केरियर को समाप्त कर लेता हैं।

1. **नवीनता की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** राजस्थान में अभी तक इस ज्वलन्त समसया पर अधिस्नातक स्तर पर कोई विशेष कार्य नहीं हुआ हैं। यह समस्या प्रत्येक क्षण में छात्रों को अपने आगोश में लेकर अपनी इहलीला को समाप्त करती जा रही हैं। इस आधार पर यदि इस सन्दर्भः में गहन विचार विमर्श नहीं किया गया तो सैंकड़ो माता–पिता के आँखो के तारे अन्धकारमय गगन में विलुप्त हो जाऐंगें।

2. **सामाजिक दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** युवावस्था में प्रशिक्षार्थियों पर सबसे ज्यादा प्रभाव समाज का पड़ता हैं। प्रशिक्षणार्थी को समाज के वातावरण के साथ समायोजन करने पर ही अपने जीवन में सफलता मिलती हैं। प्रशिक्षणार्थी असफल होनें पर तथा समाज द्वारा उपेक्षित होनें के डर से दबाव से ग्रसित होकर वे स्वयं को समाप्त कर लेते हैं। उनमें आत्मविश्वास की कमी हो जाती हैं। वे स्वयं को हीन दृष्टि से देखने लग जाते हैं। इस कारण से यह सामाजिक स्तर पर उभर कर आयीं महत्त्वपूर्ण समस्या हैं। यदि इसकी उत्पति के कारणों का सही पता नहीं लगा पाये तो हम भारत की युवा पीढ़ी को काल–कलवित कर देगें।

3. **अभिभावकों की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** वर्तमान समय में व्यक्तियों की आवश्यकताऐं आकांक्षाऐं और इच्छाऐं तीव्र गति से बढ़ती जा रहीं हैं। लेकिन जब वह इनको पूरा नहीं कर पाती है या असफल हो जाते हैं तो वह दबावग्रस्त महसूस करता हैं जिसका सीधा असर उसकी जीवनशैली पर पड़ता हैं। इस दृष्टि से यह समस्या आज की ज्वलन्त समस्या बन गयीं हैं। इसीलिये शोघकर्त्री शोध हेतु उत्साहित हुई हैं।

4. **निदेशकों की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** आवश्यकताओं और अभिलाषाओं के इस प्रतियोगिता व भौतिकता पूर्ण जीवन में वही विद्यार्थी पद प्रतिष्ठा, और पैसा प्राप्त करता है जो दृढ़ संकल्प होकर, आशान्वित होकर परिश्रम करता हैं वरन् सब कुछ दिवास्वप्न बन कर रह जाता हैं। वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षा जगत् प्रतियोगिता पूर्ण है और किसी भी विद्यार्थी के लिए किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में सफल होना सरल नहीं किन्तु असम्भव भी नहीं। प्रतियोगिता के इस दौर में सिर्फ पुस्तकें पढ़ कर ही सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती उसके लिए आवश्यक है सघन तैयारी, अच्छे अध्यापक, नियमित अभ्यास और अच्छे नोट्स की और यह सब कुछ प्रदान करते हैं, कोचिंग संस्थान – काव्य क्लासेज,

साकार क्लासेज, कोटा क्लासेज, सोनी क्लासेज, संकल्प क्लासेज, आस क्लासेज, साइंस क्लासेज तथा रेजोनेन्स केरियर इंस्टीट्यूट। इस दृष्टि से भी यह समस्या महत्त्वपूर्ण हैं।

5. **अध्यापकों की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** आज का युवा ऐसी शक्ति है जिस पर किसी भी देश का भविष्य निर्धारित होता हैं। यह बेहद सकारात्मक पहलु है कि हमारा अधिकांश युवावर्ग दिशाहीन नहीं हैं लेकिन कुछ मुट्ठीभर काली भेड़े पूरे युवावर्ग को बदनाम कर रही है। जरूरत है ऐसे युवावर्ग को सही रास्ते पर लाने की। इस कार्य को सफलतापूर्वक अध्यापक ही कर सकता है। जो अपने अमृतरूपी ज्ञान संयम व मधुर वाणी, कोमल व्यवहार, अनुभव, अच्छा मार्गदर्शन एवं आशीष वचनों से युवाओं या विद्यार्थियों में इतना जोश उत्साह भरता है जिससे प्रेरित होकर विद्यार्थीं सफलता के मार्ग की और अग्रसर होते है। अध्यापकों की दृष्टि से भी इस समस्या का अध्ययन उचित समझा गया हैं।

6. **पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की दृष्टि से भी समस्या का औचित्य :–** आज के पुरूष एवं महिला विद्यार्थी संसार की बढ़ती हुई आधुनिकता, भौतिकता व व्यावसायिक चकाचौंध से प्रभावित होकर कम से कम समय में अधिक से अधिक पाने की चाह, गलाकाट प्रतियोगिता, सहनशीलता की कमी, निरन्तर बढ़ते दबाव, स्टेट्स सिंबल के चलते भग्नाशा शिकार बन रहे हैं। इसी कारण शोधकर्त्री द्वारा इस समस्या के कारणों का पता लगाने हेतु समस्या का चयन किया गया। इस दृष्टि से समस्या औचित्य सार्थक सिद्ध होता हैं।

''जीवन को देखने का ढंग ही जीवन का आधार बन सकता हैं।''

5.3 शोध समस्या कथन :–

''राजस्थान लोक सेवा अयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन''

"A Study of Growing Stress for Career and Adjustment in Students Through RPSC Coaching"

शोधकर्त्री द्वारा आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन देखा जाता हैं। अतः शोधकर्त्री की इस समस्या के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई इसलिये, शोधकर्त्री द्वारा इस समस्या का चयन किया गया।

5.4 शोध उद्देश्य :–

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उद्देश्यों का निर्धारण करना पड़ता है। बिना उद्देश्यों के व्यक्ति अपनी मंजिल तक नही पहुँच पाता हैं।

बी.डी. भाटिया के अनुसार :– ''उद्देश्यहीन व्यक्ति उसी प्रकार भटकता रहता है जैसें लहरों के थपेड़ो के बीच पतवार विहीन नौका।''

इसलिये शोधकर्त्री द्वारा अपने शोध कार्य को पूरा करने के लिये शोध उद्देश्यों का निर्माण किया गया हैं

1. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।
2. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।
3. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।
4. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।
5. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।
6. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
7. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

8. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

9. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

10. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

11. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

12. आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

5.5 शोध परिकल्पना :–

शोधकर्त्री द्वारा शोधकार्य को समुचित ढ़ग से पूर्ण करने के लिए परिकल्पना का निर्माण किया गया है जो इस प्रकार है –

1. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

2. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

3. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

4. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

6. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

8. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

9. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

10. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

11. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं।

12. आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं।

5.6 न्यादर्श :–

शोधकार्य में न्यादर्श का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है बिना न्यादर्श के शोधकार्य को पूर्ण नहीं किया जा सकता है। अतः शोधकर्त्री द्वारा इस शोध को पूरा करने के लिए न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श के तौर पर कोटा जिले या शैक्षिणिक नगरी के शिक्षक भर्ती की कोचिंग कराने वाले शिक्षण संस्थानों के 300 पुरूष विद्यार्थी एवं 300 महिला विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चयन किया गया।

न्यादर्श वितरण

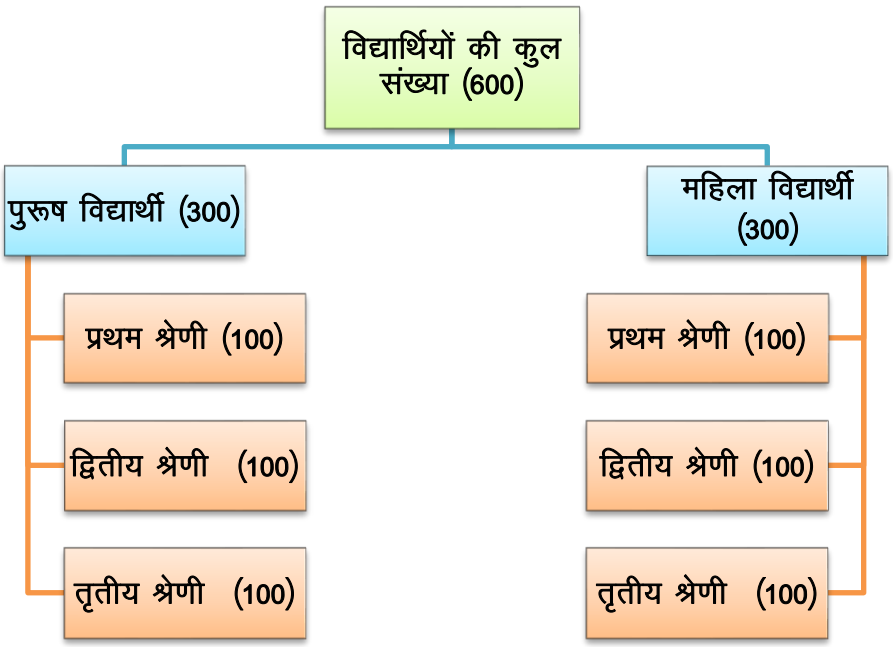

5.7 शोध अध्ययन परिसीमन –

शोध कार्य की समय, शक्ति एवं साधनों की सीमाओं को देखते हुए शोध कार्य कोटा जिले तक ही सीमित रहेगा। जिससे समस्या का परिसीमन अवश्य हो जाता हैं। प्रस्तुत शोध–कार्य में शोधकर्त्री द्वारा अपने अध्ययन की सीमाओं का निर्धारण निम्न प्रकार से किया गया है।

क्र.स.	समस्या का परिसीमान	
1.	क्षेत्रीय स्तर	कोटा जिला
2.	कार्यक्षेत्र	आर.पी.एस.सी. कोचिंग करने वाले विद्यार्थी
3.	कोचिंग संस्थान	प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करवाने वाले
4.	लिंग स्तर	पुरूष/महिलाएँ

इस अध्ययन में शैक्षणिक नगरी कोटा जिले के शिक्षक भर्ती की तैयारी कराने वाले कोचिंग संस्थानों को सम्मिलित किया गया, जिनमें अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के केरियर को लेकर बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन ज्ञात किया गया है।

5.8 शोध विधि :–

शोधकर्त्री द्वारा उपरोक्त शोधकार्य को पूर्ण करनें के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया हैं। यह विधि वर्तमान एवं तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी देने के लिए उपर्युक्त हैं।

सर्वेक्षण विधि के बारे में सुखिया एवं मेहरोत्रा लिखते हैं :– ''सर्वेक्षण विधि ऐसे अध्ययन के लिए प्रयुक्त की जाती है जिसका उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि वर्तमान काल में सामान्य अथवा प्रतिनिधि स्थिति क्या हैं।'' सर्वेक्षण विधि वर्तमान परिस्थितियों तथा वस्तुओं के अध्ययन हेतु प्रयोग में ली जाती है इसलिए शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है।

5.9 शोध उपकरण :–

इस शोधकार्य को पूर्ण करनें के लिए शोधकर्त्री द्वारा दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा–मानकीकृत उपकरण तथा स्वनिर्मित उपकरण। स्वनिर्मित उपकरण का निर्माण शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन क्षेत्रों के आधार पर किया गया हैं।

5.9.1 मानकीकृत उपकरण –

समायोजन स्तर – Dr. A.K.P Sinha and Dr. R.P. Singh द्वारा निर्मित ''एडजेस्ट्मेन्ट इनवेन्ट्री फॉर कॉलेज'' का उपयोग किया गया हैं।

5.9.2 स्वनिर्मित उपकरण –

(*i*) दबाव प्रमापनी :–

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव को ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित ''दबाव प्रमापनी'' का निर्माण किया गया हैं।

(ii) साक्षात्कार अनुसूची

आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियो के केरियर के प्रति बढ़ते दबाव सम्बन्धी समस्याओं के प्रति कोचिंग निदेशकों व अध्यापकों के दृष्टिकोण को ज्ञात करने के लिये शोधकर्त्री द्वारा साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया हैं।

5.10 सांख्यिकीय प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध–कार्य को पूर्ण करने के लिए सांख्यिकीय प्रविधि का भी महत्त्वपूर्ण योगदान हैं। इस प्रविधि से ही शोध के संकलनों व समंको के निष्कर्ष व परिणाम को ज्ञात किया गया। शोध निष्कर्ष को निकालनें के लिए निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया :–

1. **मध्यमान (M) :–** सांख्यिकी में जिसे मध्यमान कहते हैं सामान्य गणित में उसे औसत कहते हैं। संकेत रूप में मध्यमान (M) को चिन्ह से प्रदर्शित करते हैं। मध्यमान वह प्राप्तांक हैं। जिसके दोनों ओर प्राप्तांकों का विचलन समान होता हैं। मध्यमान ज्ञात करने का सबसे सरल तरीका यह हैं कि संख्याओं के जोड़ को उनकी संख्या से भाग कर दिया जाता हैं। इसे निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता हैं।

$$M = \frac{\Sigma x}{N}$$

जहाँ:– M = मध्यमान

Σ = जोड़

x = प्राप्तांक

N = प्राप्तांकों की संख्या

2. **मानक विचलन (S.D.) :–** सांख्यिकी के विचलन मान किसी समूह की सजातीयता या विजातीयता का स्पष्ट संकेत देते हैं। इसके द्वारा हम ठोस रूप में व्यक्त कर सकते हैं। विचलन मान ज्ञात करने के लिए मानक विचलन को व्यापक स्तर पर प्रयुक्त किया जाता हैं। इसे निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता हैं।

$$SD = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

जहाँ:–

SD = मानक विचलन

d = मध्यमान से विचलन

N = प्राप्तांकों की संख्या (आवृत्तियों की संख्या)

3. **टी–परीक्षण (T-test) :–** दो समूहों या दो मध्यमानों में सार्थक अंतर को ज्ञात करने के लिए प्राथमिक रूप से टी–परीक्षण का प्रयोग किया जाता हैं। टी–परीक्षण प्राप्त आँकड़ों की सार्थकता को ज्ञात करने के लिए सीधे ही प्रस्तुत किया जा सकता हैं।

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD_1^2}{N_1} + \frac{SD_2^2}{N_2}}}$$

जहाँ:–

t = टी–मान

M_1 = प्रथम समूह का मध्यमान

M_2 = द्वितीय समूह का मध्यमान

SD_1^2 = प्रथम समूह के प्रामाणिक विचलन का वर्ग

SD_2^2 = द्वितीय समूह के प्रामाणिक विचलन वर्ग

N_1 = प्रथम समूह की संख्या

N_2 = द्वितीय समूह की संख्या

4. **सहसम्बन्ध गुणांक :–** शिक्षा के क्षेत्र में बहुधा प्राप्तांकों की दो श्रेणियों की मात्रा के सम्बन्ध की मात्रा निर्धारित करने की आवश्यकता पड़ती हैं। इस सम्बन्ध को सह सम्बन्ध गुणांक से व्यक्त किया जाता हैं।

$$r = \frac{N\Sigma xy - \Sigma x\Sigma y}{\sqrt{\left[N\Sigma x^2 - (\Sigma x)^2\right]\left[N\Sigma y^2 - (\Sigma y)^2\right]}}$$

जहाँः–

r = सह सम्बन्ध गुणांक

x = प्रथम समूह के प्राप्तांक

y = द्वितीय समूह के प्राप्तांक

N = कुल आवृत्ति (प्रथम समूह व द्वितीय समूह की आवृत्तियों का योग)

5. **प्रतिशत मध्यमान :–** मध्यमान प्रतिशत निकालने के लिए निम्न सूत्र का उपयोग किया गया।

$$\text{मध्यमान प्रतिशत} = \frac{\text{कुल मध्यमान}}{\text{अधिकतम सम्भावित प्राप्तांक}} \times 100$$

5.11 पारिभाषिक शब्दावली :–

1. **केरियर :–** केरियर से तात्त्पर्य जॉब या नौकरी से हैं। वर्तमान में किसी नौकरी या काम के लिए केरियर शब्द का ही ज्यादा प्रचलन हैं।

प्रो. अशोक शर्मा के अनुसार – ''केरियर से तात्पर्य ऐसी शैक्षिक व व्यावसायिक पृष्ठभूमि से है जो व्यक्ति को जीविकोपार्जन के योग्य बनाती है।''

2. **विद्यार्थी :–** एक निश्चित समायावधि में पाठ्यक्रम का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक अध्ययन प्राप्त करने वाला विद्यार्थी कहलाता हैं।

विनोद शास्त्री के अनुसार – ''विद्यार्थी वह दर्पण है जिसमें शिक्षक अपना प्रतिबिम्ब देखता है, विद्यार्थी समाजमितीय दृष्टिकोण में शिक्षक द्वारा स्थापित नवीन पादप है।''

3. **आर.पी.एस.सी.** – आर.पी.एस.सी. से तात्पर्य राजस्थान लोक सेवा आयोग संवैधानिक निकाय से है जो शिक्षक भर्ती, चिकित्सक अधिकारी भर्ती, आर.ए.एस. आदि की भर्ती परीक्षा करवाता हैं।

4. **दबाव** :– जब व्यक्ति एक निश्चित स्तर के अनुसार जीवन जीने के सम्बन्ध में सोचता है अथवा जब व्यक्ति को तीव्र गति से होने वाले परिवर्तनों के साथ अनुकूल करना होता है। जब वह परिवर्तनों के साथ अनुकूलन नहीं कर पाता है तो वब दबाव महसूस करने लगता हैं। दबाव का सामान्य शब्दों में अर्थ है ''व्यक्तियों के द्वारा जीवन भर अनुभव किये जाने वाला मानसिक व शारारिक दबाव हैं।'' दबाव अंग्रेजी शब्द Stress का हिन्दी रूप है। व्यक्ति को दबाव प्रतियोगिता के कारण होता हैं। कभी–कभी अपने आत्म सम्मान की रक्षा के लिए भी व्यक्ति दबाव महसूस करता हैं।

कोलमैन के अनुसार – ''कोई भी परिस्थिति जो व्यक्ति पर दबाव डालती है जिसके कारण व्यक्ति को समायोजन करना पड़ता है वही दबाव है।''

5. **समायोजन** : – यह अंग्रेजी शब्द Adjustment का हिन्दी रूपान्तरण है। समायोजन से तात्पर्य व्यक्ति की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा वातावरण की मांग व बाधाओं के मध्य सन्तुलन या समन्वय है। जीवन को सुखी बनाए रखने के लिए परिवर्तन को सहज रूप में स्वीकार करते रहना ही समायोजन है।

बोरिंग लैंगफैल्ड तथा बोल्ड के अनुसार, ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं तथा उसकी पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखना है।''

6. **कोचिंग** :– Coaching अंग्रेजी शब्द है जो मूल रूप से Coach से बना है। Coach का तात्पर्य होता है विशेष रूप से मार्गदर्शन करने वाला। कोचिंग वह विश्वसनीय संस्थान है जो छात्रों को ज्ञान के साथ कामयाबी की राह भी आसान बनाता है।''

अन्य के अनुसार, ''कोचिंग से तात्पर्य ऐसे संस्थान है जो बच्चों की पढ़ाई के साथ – साथ उनके नैतिक चरित्र, व्यक्तित्व, सामाजिक व पारिवारिक समायोजन तथा व्यावहारिक रूप से सफल होने के लिए प्रेरित करता है।''

5.12 निष्कर्ष :–

5.12.1 दबाव से संबंधित निष्कर्ष :–

1. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का क्षेत्रानुसार विश्लेषण किया गया। सर्वाधिक दबाव व्यावसायिक व शैक्षिक क्षेत्र में पाया गया तथा सबसे कम दबाव सामाजिक व पारिविारिक क्षेत्र में पाया गया। इसके पश्चात् आर्थिक व मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में भी दबाव देखने को मिला है।

2. पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव की तुलना करने पर महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है। व्यावसायिक क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में कम दबाव पाया गया है।

3. आर.पी.एस.सी. प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में क्षेत्रानुसार तुलना करने पर प्रथम श्रेणी की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है तथा प्रथम व द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है। सर्वाधिक दबाव मनोवैज्ञानिक व शैक्षिक क्षेत्र में पाया गया तथा न्यूनतम दबाव पारिवारिक क्षेत्र में पाया गया है।

4. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में दबाव स्तर क्षेत्रानुसार तुलना करने पर प्रथम श्रेणी की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है तथा द्वितीय श्रेणी की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में दबाव सर्वाधिक पाया गया है।

5. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में सर्वाधिक दबाव मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक व आर्थिक क्षेत्रों में पाया गया है।

6. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर प्रथम श्रेणी की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है जबकि प्रथम व द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में दबाव ज्यादा पाया गया है।

7. आर.पी.एस.सी. करने वाली प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में सर्वाधिक दबाव शैक्षिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में पाया गया है तथा न्यूनतम दबाव पारिवारिक क्षेत्र में पाया गया है।

8. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में दबाव कम पाया गया है। सर्वाधिक दबाव व्यावसायिक क्षेत्र में तथा न्यूनतम दबाव शैक्षिक क्षेत्र में पाया गया है।

9. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव देखने को मिला है। सर्वाधिक दबाव व्यावसायिक, मनोवैज्ञानिक व शैक्षिक क्षेत्रों में तथा न्यूनतम दबाव सामाजिक व पारिवारिक क्षेत्रों में पाया गया है।

10. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में दबाव कम पाया गया है। सर्वाधिक दबाव मनोवैज्ञानिक आर्थिक व शैक्षिक क्षेत्रों में पाया गया है तथा न्यूनतम दबाव सामाजिक क्षेत्र में पाया गया है।

11. पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव का मुख्य कारण मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक आर्थिक व व्यावसायिक को माना गया है।

12. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति दबाव स्तर का टी–मान ज्यादा प्राप्त होने से सर्वाधिक अन्तर देखा गया है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

13. क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी व्यावसायिक, पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में टी मान बहुत ज्यादा होने से सर्वाधिक अन्तर देखा गया है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

14. आर.पी.एस.सी. प्रथम व द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का टी–मान ज्यादा होने से सर्वाधिक अन्तर पाया गया इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

15. आर.पी.एस.सी. प्रथम द्वतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव का टी–मान मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, पारिवारिक व आर्थिक क्षेत्रों में ज्यादा होने से सर्वाधिक अन्तर देखने को मिला है। इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

16. आर.पी.एस.सी. द्वितीय व तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर टी–मान बहुत ज्यादा प्राप्त होने से सर्वाधिक अन्तर पाया गया है। इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

17. आर.पी.एस.सी. द्वितीय व तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, व शैक्षिक क्षेत्रों में दबाव टी–मान से ज्यादा होने से परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

18. आर.पी.एस.सी. प्रथम व तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर में सर्वाधिक अन्तर पाया गया है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

19. मनोवैज्ञानिक, सामाजिक व शैक्षिक क्षेत्रों में भी टी–मान ज्यादा होन से प्रथम व तृतीय श्रेणी की पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव में सर्वाधिक अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

20. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–मान बहुत ज्यादा प्राप्त होने से सर्वाधिक अन्तर देखने को मिला है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

21. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का टी–मान बहुत ज्यादा पाये जाने के कारण दबाव स्तर में सर्वाधिक अन्तर पाया गया है। इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

22. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर में सर्वाधिक अन्तर पाया गया है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

23. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर शैक्षिक व सामाजिक क्षेत्र में कम अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

24. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी का कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रों में कम अन्तर पाये जाने से परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

5.12.2 समायोजन से संबंधित निष्कर्ष :–

1. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में समायोजन का विश्लेषण करने के प्रश्चात् पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में ज्यादा समायोजन पाया गया है। पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन करने की क्षमता ज्यादा पायी जाती है।

2. क्षेत्रानुसार समायोजन का विश्लेषण करने से ज्ञात होता हैं कि स्वास्थ्य क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है।

3. आर.पी.एस.सी. कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों के समायोजन की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों को ज्यादा समायोजन पाया गया है।

4. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों के समायोजन की महिला विद्यार्थियों का समायोजन सर्वाधिक पाया गया है।

5. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की अपेक्षा द्वितीय के पुरूष विद्यार्थीा– महिला विद्यार्थियों में समायोजन कम पाया गया है तथा द्वितीय श्रेणी की अपेक्षा तृतीय के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का समायोजन कम पाया गया है।

6. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर भी सांवेगिक क्षेत्र में प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा द्वितीय के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में तथा द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में कम समायोजन पाया गया है।

7. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर घर क्षेत्र में तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में तथा द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में समायोजन सर्वाधिक पाया गया है।

8. आर.पी.एस.सी. प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों में समायोजन प्रथम व द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता कम पायी गयी है।

9. आर.पी.एस.सी. प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाली महिला विद्यार्थियों में समायोजन प्रथम व द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में समायोजन कम पाया गया है।

10. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर सांवेगिक क्षेत्र व घर क्षेत्र में तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रथम व द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है।

11. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर शैक्षिक, घर व सांवेगिक में तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रथम व द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में समायोजन पाया गया है।

12. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी घर क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में ही सर्वाधिक समायोजन पाया गया है।

13. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है तथा क्षेत्रानुसार तुलना पर भी सांवेगिक व सामाजिक क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में ज्यादा समायोजन पाया गया है।

14. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन सर्वाधिक पाया गया है तथा क्षेत्रानुसार तुलना करने पर घर, सांवेगिक व स्वास्थ्य क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है।

15. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में समायोजन में सार्थक अन्तर ज्यादा पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

16. आर.पी.एस.सी प्रथम व द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर अधिक पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

17. आर.पी.एस.सी. द्वितीय व तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन में ज्यादा सार्थक अन्तर पाये जाने से परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

18. आर.पी.एस.सी. प्रथम व तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन में ज्यादा सार्थक अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना की अस्वीकृत किया जाता है।

19. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर ज्यादा होने से परिकल्पनाओं को अस्वीकृत किया जाता है।

20. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सर्वाधिक सार्थक अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

21. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सर्वाधिक सार्थक अन्तर पाये जाने से परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

22. क्षेत्रानुसार तुलना करने पर सांवेगिक व सामाजिक क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर कम पाये जाने के कारण परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

5.12.3 सहसंबंध से प्राप्त निष्कर्ष :–

1. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण करने पर नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
2. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
3. आरपीएससी प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण करने पर प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों में नकारात्मक सहसंबंध पाया गया हैं, तथा तृतीय श्रेणी व द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों में धनात्मक सहसंबंध पाया गया हैं।
4. द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों में नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
5. तृतीय श्रेणी के विद्यार्थियों की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों में ज्यादा सकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
6. आरपीएससी प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
7. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
8. आरपीएससी तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
9. आरपीएससी प्रथम श्रेणी के महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।

10. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य ऋणात्मक/नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।

11. आरपीएससी तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य धनात्मक/सकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।

12. आरपीएससी प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी व द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।

13. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में दबाव एवं समायोजन के मध्य सर्वाधिक धनात्मक सहसंबंध पाया गया हैं।

5.12.4 साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष :–

आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव को जानने हेतु शोधकर्त्री द्वारा कोचिंग संस्था निर्देशकों तथा शिक्षकों से साक्षात्कार प्राप्त कर संबंधित समस्या पर विचार विमर्श के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है, उन्हें निम्न प्रकार से बताया जा रहा हैं–

(1). कोचिंग संस्था निदेशकों के साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष –

1. कोचिंग निदेशकों ने आरपीएससी कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का मुख्य कारण प्रतिस्पर्द्धा व कम पदों पर भर्ती होना तथा चयन की चिंता को माना हैं।

2. कोचिंग निदेशकों का मानना है कि विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्द्धा बढने से नकारात्मक भावना उत्पन्न होने लगती हैं जिससे उनके पढने का मानसिक संतुलन बिगड जाता हैं तथा ध्यान भंग हो जाता हैं।

3. निदेशकों का कहना है कि प्रत्येक शिक्षक भर्ती लम्बे समय तक कोर्ट के अधीन रहती हैं जिससे विद्यार्थियों में मानसिक दबाव व अनिश्चितता बनी रहती हैं। इसीलिए वे समायोजन करने में असक्षम महसूस करने लगते हैं।

4. निदेशकों का अभिमत है कि समाज की बढती तीव्र महत्वाकांक्षा भी विद्यार्थियों में केरियर के प्रति दबाव उत्पन्न करती हैं।

5. निदेशक विद्यार्थियों के दबाव को कम करने के लिए समय समय पर सेमिनार, ग्रुप डिस्कशन च व्यक्तिगत समस्या समाधान की व्यवस्था करते है ताकि बच्चों में दबाव को दूर किया जा सकें।

6. निदेशकों के मतानुसार शिक्षक कक्षा में हर समय पुरूष विद्यार्थियों को अभिप्रेरित कर सकारात्मक रूप से मनोबल को बढाते हैं।

7. निदेशकों के मतानुसार कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के प्रति सजग होना चाहिए, आत्मविश्वास रखना चाहिए और एकाग्रचित होकर पढाई करनी चाहिए।

8. संस्था निदेशकों का मानना है कि विद्यार्थियों में पाठ्यक्रम के पूर्ण होने की चिंता रहती हैं। परिवारिक व आर्थिक समस्या भी दबाव का कारण रहती हैं।

(2) शिक्षकों के साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष :–

शोधकर्त्री ने आरपीएससी की कोचिंग पढाने वाले शिक्षकों के साक्षात्कार से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1. शिक्षकों के मतानुसार केरियर के प्रति दबाव का मुख्य कारण माता पिता की अतिमहत्वाकांक्षा को माना हैं। कम समय में अधिक से अधिक पाने की चाह रखना आदि।

2. अध्यापकों का मानना है कि अधिकांश शिक्षक भर्तियाँ कोर्ट में अटकी रहती हैं। चयनित विद्यार्थियों को भी समय पर नियुक्ति नहीं मिल पाती हैं जिससे पुरूष विद्यार्थियों का मनोबल गिरता है और उनमें दबाव बढने लगता हैं।

3. शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक भर्ती परीक्षा परिणाम में उच्च स्तर पर गड़बड़ी व घोटाला होना। अयोग्य एवं अपात्र विद्यार्थियों का भी नकल के माध्यम से चयन कर लेना जिससे विद्यार्थियों में मानसिक दबाव बढने लगता हैं।

4. शिक्षकों के अनुसार विद्यार्थी अन्तिम समय में आकर पढने लगते है जिससे याद करते है उसे भी भुल जाते है।

5. शिक्षकों का कहना है कि विद्यार्थी भेड़चाल चलते है एक ही कोचिंग में भीड़ भरी रहती है अच्छे नोट्स व पढाई पर कम ध्यान देते हैं, लड़कों की भीड़ पर ज्यादा ध्यान देते हैं।

6. शिक्षकों का मानना है कि कुछ विद्यार्थी परिस्थितियों के साथ समायोजन नहीं कर पाते हैं, तो अपने आप में दबाव महसूस करते हैं।

7. शिक्षकों का मानना है कि आरपीएससी शिक्षक भर्ती का पाठ्यक्रम बहुत ज्यादा हैं, कलिष्ट है जिससे विद्यार्थी 3 से 4 महीनों में पूरा नहीं कर पाते हैं, इसलिए उनमें मानसिक दबाव बना रहता हैं।

8. शिक्षकों ने विद्यार्थियों में दबाव को कम करने के लिए निम्नांकित सुझाव दिए – पहले से ही नियमित अध्ययन करना, एक ही भर्ती पर निर्भर न रहना, स्वयं के नॉट्स तैयार करना आदि।

5.13 शैक्षिक निहितार्थ :–

शिक्षा के प्रतिस्पर्धात्मक युग में बी.एड. करने के उपरान्त भी कोचिंग में शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करते है और शिक्षक भर्ती परीक्षा की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में निरन्तर दबाव व असन्तोष बढ़ता जाता हैं। निरन्तर आ

रहे बदलाव के कारण बढ़ती प्रतिस्पर्धा तथा अभिभावकों की बच्चों के प्रति अतिमहत्त्वकांक्षाओं के कारण विद्यार्थी अध्ययनरत् रहते हुए लगातार दबाव व असमायोजन अनुभव करते हैं। उक्त शोध कार्य के निष्कर्ष एवं सुझावों का प्रयोग कर शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थी अपने केरियर के प्रति बढ़ रहे दबाव, भय, चिन्ता को दूर कर सकेंगे। साथ ही यह शोधकार्य अध्ययन कराने वाले अध्यापकों व निदेशकों के लिए भी उपयोगी साबित होगा, क्योंकि केरियर के प्रति बढ़ते दबाव को देखते हुए विद्यार्थियों को शिक्षक भर्ती परीक्षा की नवीन पद्धति के प्रति जागरूक कर उनको मार्गदर्शन प्रदान कर सकेंगे।

5.14 भावी शोध हेतु सुझाव :–

प्रस्तुत शोध ''आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य करने के बाद भी इस क्षेत्र में अनेक ऐसे प्रश्न अनुत्तरित है जिनका शोध के माध्यम से उत्तर प्राप्त किया जाना चाहिए। भावी शोध हेतु कुछ समस्याएँ प्रश्न रूप में इस प्रकार हो सकती है भावी शोध हेतु सुझाव निम्नांकित हैं –

1. निम्न उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन स्तर का अध्ययन किया जा सकता है।
2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन स्तर का अध्ययन किया जा सकता हैं।
3. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन किया जा सकता हैं।
4. आरपीएससी शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं दबाव स्तर के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया सकता हैं।

5. आरपीएससी शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले दबाव के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता हैं।

6. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के प्रशिणार्थियों की शैक्षिक निष्पति एवं समायोजन में सहसंबंध का अध्ययन किया जा सकता हैं।

7. आरपीएससी की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व का अध्ययन किया जा सकता हैं।

8. आरएएस व शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों में दबाव एवं समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।

9. केन्द्रीय विद्यालय भर्ती परीक्षा व राजस्थान शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियो की शैक्षिक निष्पति एवं बुद्धिलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन किया जा सकता हैं।

10. राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा व राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियो ंकी आकांक्षा, अवसाद एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया जा सकता हैं।

5.15 उपसंहार :–

शोध परिणामों के निष्कर्ष से यह पता चलता है कि आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति दबाव तीव्र गति से बढ रहा हैं। जिसका मुख्य कारण माता पिता की नौकरी के लिए तीव्र इच्छाएँ, चयन की चिंता, भर्ती घोटाले, समय पर भर्ती परीक्षा का आयेाजन न करवाना, शिक्षक भर्ती पर कोर्ट का स्टे लग जाना, अनुचित व गलत प्रश्नोत्तर का निर्माण करना आदि कारणों को माना हैं। मानसिक दबाव के चलते पुरूष विद्यार्थी महिला विद्यार्थी अपनी दैनिक दिनचर्या से समायोजन नहीं कर पाते हैं। इसीलिए उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पडता हैं। जिसके कारण वे शिक्षक भर्ती में चयन होने से वंचित रह जाते हैं। इस शोधकार्य को पूरा करते

समय सम्भवतया कोई त्रुटि रह गई हो, निर्धारित समयावधि में कोई बातें सम्मिलित नहीं हो पायी हो तो इस शोध हेतु आगे शोधकार्यों में भी यह शोधकार्य अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो, इसके लिए भावी शोध हेतु सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं। अन्त में शोधकर्त्री यह आशा करती है कि शोध के मुख्य निष्कर्ष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति दबाव को कम करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध सारांश

शोध सारांश

1. प्रस्तावना :–

शिक्षा का उद्देश्य बालक को सभ्य, सुसंस्कृत व नैतिक मूल्यों से युक्त बनना हैं। शिक्षा उसे अच्छे बुरे का अन्तर बताती हैं, तथा उसके अन्दर छिपी हुई प्रतिभा व गुणों को बाहर निकालती हैं। बालक अपनी इच्छा, कार्य व योग्यताओं के अनुसार उन्हें पूरा करने लगता हैं, जिसको पूरा करने में शिक्षा उसकों सहयोग प्रदान करती हैं एवं उसको सन्मार्ग दिखाती हैं। बालकों की कोई न कोई इच्छा होती हैं चाहे वह शिक्षक बनने की हो, या डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, आर्किटैक्चर बनने की हो और वह अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिए बहुत मेहनत से पढाई करते हैं जिससे बालक पर मनोवैज्ञानिक व मानसिक दबाव ज्यादा रहता हैं। कुछ बालक परिस्थितियों व वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेते हैं तो उनमें दबाव कम होता हैं तथा कुछ बालक परिस्थितियों के साथ समायोजन नहीं कर पाते है, तो उनमें दबाव ज्यादा होता हैं। दबाव ज्यादा होने से विद्यार्थियों में मानसिक अनिश्चितता बनी रहती हैं कि मैं पास होंउँगा या फैल। आरपीएससी भर्ती परीक्षा में मेरा चयन होगा कि नहीं क्योंकि सरकारी शिक्षक भर्ती कम पदों के लिए निकलती हैं और विद्यार्थी लाखों में फार्म भरते हैं। इसलिए विद्यार्थियों को चयन के लिए कडी मेहनत करनी पडती हैं। इसीलिए विद्यार्थी एक अच्छे कोचिंग संस्थान की ओर रूख करते हैं जहाँ पर वे लाखों विद्यार्थियों के साथ अपनी योग्यतानुसार एवं क्षमतानुसार अपने भाग्य को आजमाने का प्रयास करते हैं। कोचिंग संस्थान में विद्यार्थियों को 4 से 6 घंटे नियमित रूप से सुव्यवस्थित तरीके से पाठ्यक्रमानुसार व अनुशासनपूर्ण तरीके से पढाई करवाई जाती हैं तथा विद्यार्थियों की साप्ताहिक आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा ली जाती हैं, जिसमें छात्रों की व्यक्तिगत स्थिति मालुम पडती हैं। कुछ बच्चें अपनी निम्नतम रैंक को देखकर घबरा जाते है और वह मानसिक रूप से दबाव महसूस करने लगते हैं। पढाई से ध्यान विचलित होने लगता हैं। कोचिंग में अच्छी शिक्षा व निर्देशन के माध्यम से बच्चों के अन्दर छीपी हुई प्रतिभा को निखारा जाता हैं। उसको प्रतियोगी परीक्षा मे

सफल होने के लिए तैयार किया जाता हैं। लेकिन वर्तमान में कडी प्रतिस्पर्द्धा के कारण विद्यार्थियों में दबाव बढता ही जा रहा हैं, जिसके कारण वह अपने आपकों परिस्थितियों, वातावरण, परिवार, मित्रों, समाज, व कोचिंग सहपाठियों के साथ समायोजित नही ंकर पाते हैं। इसी कारण शहर में आये दिन आत्महत्या जैसी घटनाएँ घटित हो रही हैं।

2. **शोध समस्या का औचित्य :–**

1. **नवीनता की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** राजस्थान में अभी तक इस ज्वलन्त समसया पर अधिस्नातक स्तर पर कोई विशेष कार्य नहीं हुआ हैं।
2. **सामाजिक दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** युवावस्था में प्रशिक्षार्थियों पर सबसे ज्यादा प्रभाव समाज का पड़ता हैं। प्रशिक्षणार्थी को समाज के वातावरण के साथ समायोजन करने पर ही अपने जीवन में सफलता मिलती हैं।
3. **अभिभावकों की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** वर्तमान समय में व्यक्तियों की आवश्यकताऐं आकांक्षाऐं और इच्छाऐं तीव्र गति से बढ़ती जा रहीं हैं।
4. **निदेशकों की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** आवश्यकताओं और अभिलाषाओं के इस प्रतियोगिता व भौतिकता पूर्ण जीवन में वही विद्यार्थी पद प्रतिष्ठा, और पैसा प्राप्त करता है जो दृढ़ संकल्प होकर, आशान्वित होकर परिश्रम करता हैं वरन् सब कुछ दिवास्वप्न बन कर रह जाता हैं।
5. **अध्यापकों की दृष्टि से समस्या का औचित्य :–** आज का युवा ऐसी शक्ति है जिस पर किसी भी देश का भविष्य निर्धारित होता हैं।
6. **पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की दृष्टि से भी समस्या का औचित्य :–** आज के पुरूष एवं महिला विद्यार्थी संसार की बढ़ती हुई आधुनिकता, भौतिकता व व्यावसायिक चकाचौंध से प्रभावित होकर कम से कम समय में अधिक से अधिक पाने की चाह, गलाकाट प्रतियोगिता, सहनशीलता की कमी, निरन्तर बढ़ते दबाव, स्टेट्स सिंबल के चलते भग्नाशा शिकार बन रहे हैं।

3. **शोध समस्या कथन :–**

''राजस्थान लोक सेवा अयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन''

"A Study of Growing Stress for Career and Adjustment in Students Through RPSC Coaching"

4. **शोध उद्देश्य :–**

1. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।
2. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।
3. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।
4. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।
5. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।
6. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
7. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
8. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
9. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
10. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
11. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
12. आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

5. शोध परिकल्पना :–

1. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।
2. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।
3. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।
4. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।
6. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
8. आरपीएससी प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
9. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
10. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
11. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं।
12. आरपीएससी प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं।

6. **न्यादर्श :–**

न्यादर्श वितरण

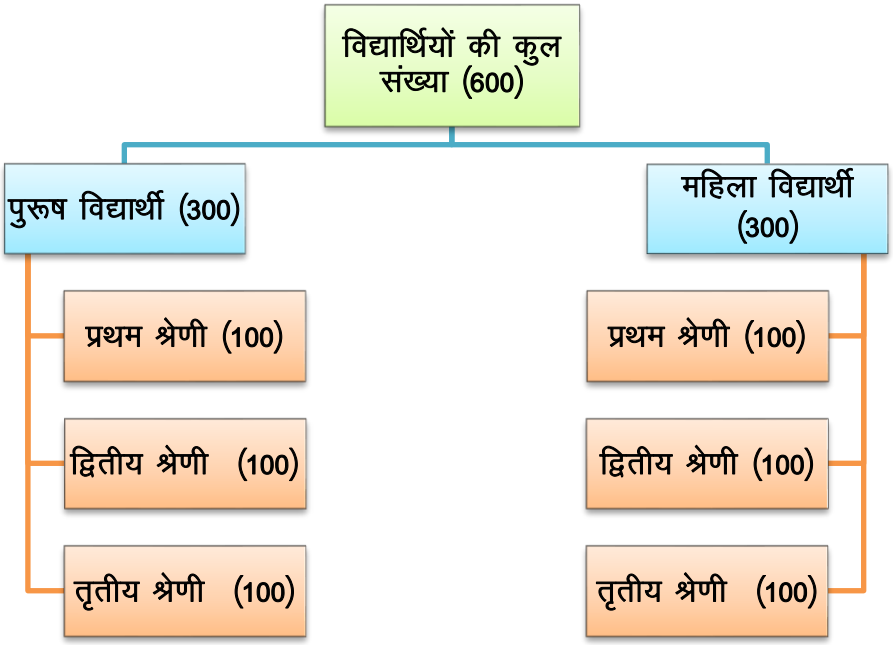

7. **शोध अध्ययन परिसीमन –**

शोध कार्य की समय, शक्ति एवं साधनों की सीमाओं को देखते हुए शोध कार्य कोटा जिले तक ही सीमित किया गया है।

8. **शोध विधि :–**

शोधकर्त्री द्वारा उपरोक्त शोधकार्य को पूर्ण करनें के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया हैं।

9. **शोध उपकरण :–**

इस शोधकार्य को पूर्ण करनें के लिए शोधकर्त्री द्वारा दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया गया है – मानकीकृत उपकरण तथा स्वनिर्मित उपकरण।

मानकीकृत उपकरण – समायोजन स्तर – Dr. A.K.P Sinha and Dr. R.P. Singh द्वारा निर्मित ''एडजेस्ट्मेन्ट इनवेन्ट्री फॉर कॉलेज'' का उपयोग किया गया हैं।

स्वनिर्मित उपकरण – आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव हेतु दबाव प्रमापनी

साक्षात्कार अनुसूची – निदेशकों व अध्यापकों के लिए साक्षात्कार अनुसूची

10. सांख्यिकीय प्रविधि :–

शोध निष्कर्ष निकालनें के लिए निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण
4. सहसम्बन्ध गुणांक
5. प्रतिशत मध्यमान

11. पारिभाषिक शब्दावली :–

1. **केरियर :– प्रो. अशोक शर्मा** के अनुसार – ''केरियर से तात्पर्य ऐसी शैक्षिक व व्यावसायिक पृष्ठभूमि से है जो व्यक्ति को जीविकोपार्जन के योग्य बनाती है।''
2. **विद्यार्थी :– विनोद शास्त्री** के अनुसार – ''विद्यार्थी वह दर्पण है जिसमें शिक्षक अपना प्रतिबिम्ब देखता है, विद्यार्थी समाजमितीय दृष्टिकोण में शिक्षक द्वारा स्थापित नवीन पादप है।''
3. **आर.पी.एस.सी. –** आर.पी.एस.सी. से तात्पर्य राजस्थान लोक सेवा आयोग संवैधानिक निकाय से है जो शिक्षक भर्ती, चिकित्सक अधिकारी भर्ती, आर.ए.एस. आदि की भर्ती परीक्षा करवाता हैं।
4. **दबाव :– कोलमैन के अनुसार –** ''कोई भी परिस्थिति जो व्यक्ति पर दबाव डालती है जिसके कारण व्यक्ति को समायोजन करना पड़ता है वही दबाव है।''
5. **समायोजन :– बोरिंग लैंगफैल्ड तथा बोल्ड के अनुसार,** ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं तथा उसकी पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखना है।''
6. **कोचिंग :– अन्य के अनुसार,** ''कोचिंग से तात्त्पर्य ऐसे संस्थान है जो बच्चों की पढ़ाई के साथ – साथ उनके नैतिक चरित्र, व्यक्तित्व, सामाजिक व पारिवारिक समायोजन तथा व्यावहारिक रूप से सफल होने के लिए प्रेरित करता है।''

12. निष्कर्ष :–

12.1 दबाव से संबंधित निष्कर्ष :–

1. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का क्षेत्रानुसार विश्लेषण किया गया। सर्वाधिक दबाव व्यावसायिक व शैक्षिक क्षेत्र में पाया गया तथा सबसे कम दबाव सामाजिक व पारिविारिक क्षेत्र में पाया गया। इसके पश्चात् आर्थिक व मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में भी दबाव देखने को मिला है।
2. पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव की तुलना करने पर महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है। व्यावसायिक क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में कम दबाव पाया गया है।
3. आर.पी.एस.सी. प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में क्षेत्रानुसार तुलना करने पर प्रथम श्रेणी की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है तथा प्रथम व द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है। सर्वाधिक दबाव मनोवैज्ञानिक व शैक्षिक क्षेत्र में पाया गया तथा न्यूनतम दबाव पारिवारिक क्षेत्र में पाया गया है।
4. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में दबाव स्तर क्षेत्रानुसार तुलना करने पर प्रथम श्रेणी की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है तथा द्वितीय श्रेणी की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में दबाव सर्वाधिक पाया गया है।
5. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में सर्वाधिक दबाव मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक व आर्थिक क्षेत्रों में पाया गया है।
6. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर प्रथम श्रेणी की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है जबकि प्रथम व द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में दबाव ज्यादा पाया गया है।

7. आर.पी.एस.सी. करने वाली प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में सर्वाधिक दबाव शैक्षिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में पाया गया है तथा न्यूनतम दबाव पारिवारिक क्षेत्र में पाया गया है।

8. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में दबाव कम पाया गया है। सर्वाधिक दबाव व्यावसायिक क्षेत्र में तथा न्यूनतम दबाव शैक्षिक क्षेत्र में पाया गया है।

9. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव देखने को मिला है। सर्वाधिक दबाव व्यावसायिक, मनोवैज्ञानिक व शैक्षिक क्षेत्रों में तथा न्यूनतम दबाव सामाजिक व पारिवारिक क्षेत्रों में पाया गया है।

10. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में दबाव कम पाया गया है। सर्वाधिक दबाव मनोवैज्ञानिक आर्थिक व शैक्षिक क्षेत्रों में पाया गया है तथा न्यूनतम दबाव सामाजिक क्षेत्र में पाया गया है।

11. पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव का मुख्य कारण मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक आर्थिक व व्यावसायिक को माना गया है।

12. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति दबाव स्तर का टी–मान ज्यादा प्राप्त होने से सर्वाधिक अन्तर देखा गया है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

13. क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी व्यावसायिक, पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में टी मान बहुत ज्यादा होने से सर्वाधिक अन्तर देखा गया है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

14. आर.पी.एस.सी. प्रथम व द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का टी–मान ज्यादा होने से सर्वाधिक अन्तर पाया गया इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

15. आर.पी.एस.सी. प्रथम द्वतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव का टी–मान मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, पारिवारिक व आर्थिक क्षेत्रों में ज्यादा होने से सर्वाधिक अन्तर देखने को मिला है। इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

16. आर.पी.एस.सी. द्वितीय व तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर टी–मान बहुत ज्यादा प्राप्त होने से सर्वाधिक अन्तर पाया गया है। इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

17. आर.पी.एस.सी. द्वितीय व तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, व शैक्षिक क्षेत्रों में दबाव टी–मान से ज्यादा होने से परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

18. आर.पी.एस.सी. प्रथम व तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर में सर्वाधिक अन्तर पाया गया है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

19. मनोवैज्ञानिक, सामाजिक व शैक्षिक क्षेत्रों में भी टी–मान ज्यादा होन से प्रथम व तृतीय श्रेणी की पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव में सर्वाधिक अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

20. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–मान बहुत ज्यादा प्राप्त होने से सर्वाधिक अन्तर देखने को मिला है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

21. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव स्तर का टी–मान बहुत ज्यादा पाये जाने के कारण दबाव स्तर में सर्वाधिक अन्तर पाया गया है। इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

22. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर में सर्वाधिक अन्तर पाया गया है इसीलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

23. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर शैक्षिक व सामाजिक क्षेत्र में कम अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

24. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी का कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव स्तर का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रों में कम अन्तर पाये जाने से परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

12.2 समायोजन से संबंधित निष्कर्ष :–

1. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में समायोजन का विश्लेषण करने के प्रश्चात् पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में ज्यादा समायोजन पाया गया है। पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन करने की क्षमता ज्यादा पायी जाती है।

2. क्षेत्रानुसार समायोजन का विश्लेषण करने से ज्ञात होता हैं कि स्वास्थ्य क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है।

3. आर.पी.एस.सी. कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों के समायोजन की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों को ज्यादा समायोजन पाया गया है।

4. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों के समायोजन की महिला विद्यार्थियों का समायोजन सर्वाधिक पाया गया है।

5. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन की अपेक्षा द्वितीय के पुरूष विद्यार्थीा– महिला विद्यार्थियों में समायोजन कम पाया गया है तथा द्वितीय श्रेणी की अपेक्षा तृतीय के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों का समायोजन कम पाया गया है।

6. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर भी सांवेगिक क्षेत्र में प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा द्वितीय के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में तथा द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में कम समायोजन पाया गया है।

7. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर घर क्षेत्र में तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में तथा द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में समायोजन सर्वाधिक पाया गया है।

8. आर.पी.एस.सी. प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों में समायोजन प्रथम व द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता कम पायी गयी है।

9. आर.पी.एस.सी. प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाली महिला विद्यार्थियों में समायोजन प्रथम व द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में समायोजन कम पाया गया है।

10. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर सांवेगिक क्षेत्र व घर क्षेत्र में तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रथम व द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है।

11. क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर शैक्षिक, घर व सांवेगिक में तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रथम व द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में समायोजन पाया गया है।

12. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी घर क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में ही सर्वाधिक समायोजन पाया गया है।

13. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है तथा क्षेत्रानुसार तुलना पर भी सांवेगिक व सामाजिक क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में ज्यादा समायोजन पाया गया है।

14. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन सर्वाधिक पाया गया है तथा क्षेत्रानुसार तुलना करने पर घर, सांवेगिक व स्वास्थ्य क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में समायोजन ज्यादा पाया गया है।

15. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में समायोजन में सार्थक अन्तर ज्यादा पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

16. आर.पी.एस.सी प्रथम व द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर अधिक पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

17. आर.पी.एस.सी. द्वितीय व तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन में ज्यादा सार्थक अन्तर पाये जाने से परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

18. आर.पी.एस.सी. प्रथम व तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन में ज्यादा सार्थक अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना की अस्वीकृत किया जाता है।

19. आर.पी.एस.सी. प्रथम श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर ज्यादा होने से परिकल्पनाओं को अस्वीकृत किया जाता है।

20. आर.पी.एस.सी. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सर्वाधिक सार्थक अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

21. आर.पी.एस.सी. तृतीय श्रेणी की कोचिंग करने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सर्वाधिक सार्थक अन्तर पाये जाने से परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

22. क्षेत्रानुसार तुलना करने पर सांवेगिक व सामाजिक क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर कम पाये जाने के कारण परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

12.3 सहसंबंध से प्राप्त निष्कर्ष :–

1. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण करने पर नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
2. आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
3. आरपीएससी प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण करने पर प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों में नकारात्मक सहसंबंध पाया गया हैं, तथा तृतीय श्रेणी व द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों में धनात्मक सहसंबंध पाया गया हैं।
4. द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों में नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
5. तृतीय श्रेणी के विद्यार्थियों की अपेक्षा द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों में ज्यादा सकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
6. आरपीएससी प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
7. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।
8. आरपीएससी तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।

9. आरपीएससी प्रथम श्रेणी के महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।

10. आरपीएससी द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य ऋणात्मक/नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।

11. आरपीएससी तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य धनात्मक/सकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।

12. आरपीएससी प्रथम श्रेणी के पुरूष विद्यार्थी व द्वितीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ हैं।

13. आरपीएससी तृतीय श्रेणी की महिला विद्यार्थियों में दबाव एवं समायोजन के मध्य सर्वाधिक धनात्मक सहसंबंध पाया गया हैं।

12.4 साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष :–

आरपीएससी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव को जानने हेतु शोधकर्त्री द्वारा कोचिंग संस्था निर्देशकों तथा शिक्षकों से साक्षात्कार प्राप्त कर संबंधित समस्या पर विचार विमर्श के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है, उन्हें निम्न प्रकार से बताया जा रहा हैं–

(1). कोचिंग संस्था निदेशकों के साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष –

1. कोचिंग निदेशकों ने आरपीएससी कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का मुख्य कारण प्रतिस्पर्द्धा व कम पदों पर भर्ती होना तथा चयन की चिंता को माना हैं।

2. कोचिंग निदेशकों का मानना है कि विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्द्धा बढने से नकारात्मक भावना उत्पन्न होने लगती हैं जिससे उनके पढने का मानसिक संतुलन बिगड जाता हैं तथा ध्यान भंग हो जाता हैं।

3. निदेशकों का कहना है कि प्रत्येक शिक्षक भर्ती लम्बे समय तक कोर्ट के अधीन रहती हैं जिससे विद्यार्थियों में मानसिक दबाव व अनिश्चितता बनी रहती हैं। इसीलिए वे समायोजन करने में असक्षम महसूस करने लगते हैं।
4. निदेशकों का अभिमत है कि समाज की बढती तीव्र महत्वाकांक्षा भी विद्यार्थियों में केरियर के प्रति दबाव उत्पन्न करती हैं।
5. निदेशक विद्यार्थियों के दबाव को कम करने के लिए समय समय पर सेमिनार, ग्रुप डिस्कशन च व्यक्तिगत समस्या समाधान की व्यवस्था करते है ताकि बच्चों में दबाव को दूर किया जा सकें।
6. निदेशकों के मतानुसार शिक्षक कक्षा में हर समय पुरूष विद्यार्थियों को अभिप्रेरित कर सकारात्मक रूप से मनोबल को बढाते हैं।
7. निदेशकों के मतानुसार कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के प्रति सजग होना चाहिए, आत्मविश्वास रखना चाहिए और एकाग्रचित होकर पढाई करनी चाहिए।
8. संस्था निदेशकों का मानना है कि विद्यार्थियों में पाठ्यक्रम के पूर्ण होने की चिंता रहती हैं। परिवारिक व आर्थिक समस्या भी दबाव का कारण रहती हैं।

(2) शिक्षकों के साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष :–

शोधकर्त्री ने आरपीएससी की कोचिंग पढाने वाले शिक्षकों के साक्षात्कार से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1. शिक्षकों के मतानुसार केरियर के प्रति दबाव का मुख्य कारण माता पिता की अतिमहत्वाकांक्षा को माना हैं। कम समय में अधिक से अधिक पाने की चाह रखना आदि।
2. अध्यापकों का मानना है कि अधिकांश शिक्षक भर्तियाँ कोर्ट में अटकी रहती हैं। चयनित विद्यार्थियों को भी समय पर नियुक्ति नहीं मिल पाती हैं जिससे पुरूष विद्यार्थियों का मनोबल गिरता है और उनमें दबाव बढने लगता हैं।

3. शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक भर्ती परीक्षा परिणाम में उच्च स्तर पर गड़बड़ी व घोटाला होना। अयोग्य एवं अपात्र विद्यार्थियों का भी नकल के माध्यम से चयन कर लेना जिससे विद्यार्थियों में मानसिक दबाव बढने लगता हैं।
4. शिक्षकों के अनुसार विद्यार्थी अन्तिम समय में आकर पढने लगते है जिससे याद करते है उसे भी भुल जाते है।
5. शिक्षकों का कहना है कि विद्यार्थी भेड़चाल चलते है एक ही कोचिंग में भीड़ भरी रहती है अच्छे नोट्स व पढाई पर कम ध्यान देते हैं, लड़कों की भीड़ पर ज्यादा ध्यान देते हैं।
6. शिक्षकों का मानना है कि कुछ विद्यार्थी परिस्थितियों के साथ समायोजन नहीं कर पाते हैं, तो अपने आप में दबाव महसूस करते हैं।
7. शिक्षकों का मानना है कि आरपीएससी शिक्षक भर्ती का पाठ्यक्रम बहुत ज्यादा हैं, कलिष्ट है जिससे विद्यार्थी 3 से 4 महीनों में पूरा नहीं कर पाते हैं, इसलिए उनमें मानसिक दबाव बना रहता हैं।
8. शिक्षकों ने विद्यार्थियों में दबाव को कम करने के लिए निम्नांकित सुझाव दिए – पहले से ही नियमित अध्ययन करना, एक ही भर्ती पर निर्भर न रहना, स्वयं के नॉट्स तैयार करना आदि।

13. शैक्षिक निहितार्थ :–

शिक्षा के प्रतिस्पर्धात्मक युग में बी.एड. करने के उपरान्त भी कोचिंग में शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करते है और शिक्षक भर्ती परीक्षा की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में निरन्तर दबाव व असन्तोष बढ़ता जाता हैं। निरन्तर आ रहे बदलाव के कारण बढ़ती प्रतिस्पर्धा तथा अभिभावकों की बच्चों के प्रति अतिमहत्त्वकांक्षाओं के कारण विद्यार्थी अध्ययनरत् रहते हुए लगातार दबाव व असमायोजन अनुभव करते हैं। उक्त शोध कार्य के निष्कर्ष एवं सुझावों का प्रयोग कर शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थी अपने केरियर के प्रति बढ़ रहे दबाव, भय, चिन्ता को दूर कर सकेंगे। साथ ही यह शोधकार्य अध्ययन कराने वाले अध्यापकों व निदेशकों के लिए भी उपयोगी साबित होगा, क्योंकि केरियर के प्रति बढ़ते दबाव को देखते हुए विद्यार्थियों को शिक्षक भर्ती परीक्षा की नवीन पद्धति के प्रति जागरूक कर उनको मार्गदर्शन प्रदान कर सकेंगे।

14. भावी शोध हेतु सुझाव :–

भावी शोध हेतु कुछ समस्याएँ प्रश्न रूप में इस प्रकार हो सकती है भावी शोध हेतु सुझाव निम्नांकित हैं :–

1. निम्न उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन स्तर का अध्ययन किया जा सकता है।
2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन स्तर का अध्ययन किया जा सकता हैं।
3. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन किया जा सकता हैं।
4. आरपीएससी शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं दबाव स्तर के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया सकता हैं।
5. आरपीएससी शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले दबाव के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता हैं।
6. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के प्रशिणार्थियों की शैक्षिक निष्पति एवं समायेाजन में सहसंबंध का अध्ययन किया जा सकता हैं।
7. आरपीएससी की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व का अध्ययन किया जा सकता हैं।
8. आरएएस व शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों में दबाव एवं समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।
9. केन्द्रीय विद्यालय भर्ती परीक्षा व राजस्थान शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियो की शैक्षिक निष्पति एवं बुद्धिलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन किया जा सकता हैं।
10. राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा व राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियो की आकांक्षा, अवसाद एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया जा सकता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निहोत्री, रवीन्द्र : ''आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्याएं और समाधान'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. अग्रवाल, जे.सी.: ''एलीमेंट्री गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग'', आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
3. अस्थाना, बिपिन : ''मनोविज्ञान व शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. बुच एम.बी. (1983) : ''तृतीय सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन'', सोसायटी ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च एवं डवलपमेन्ट, बड़ौदा।
5. बुच, एम.बी. (1988) : ''पांचवा सर्वे ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्ज'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
6. बुच, एम.बी. (1993) : ''छठा सर्वे ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
7. बोर्ग, डब्ल्यू. आर. (1963) : ''एजुकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोड्क्शन'', लॉगमांस ग्रीन एण्ड लिमिटेड, न्यूयॉर्क।
8. बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (1978) : ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'', प्रेन्टिसहॉल ऑफ इण्डिया प्रा.लि., नई दिल्ली।
9. D.M. Pastorjee (1999) : "Studies in Organization Role Stress and Coping", New Delhi.
10. ढोढियाल फाटक (1959) : ''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
11. डोनियल, माइकल (1999) : ''उत्तरी आयरलैण्ड में किशारों के अवसादग्रस्त मन को प्रभावित करने वाले कारक'', जरनल्स ऑफ एप्लाइड साईकोलॉजी।
12. Goods, Bar and Scates (1947) : "Methodology of Education Research", New York.

13. गुप्ता, एन. एल. व शर्मा डी.डी. : ''भारतीय सामाजिक समस्याएं'', साहित्य भवन, आगरा।

14. गुप्ता, डॉ. एस.पी. एवं अल्का : ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

15. कपिल, डॉ. एच. के. : ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

16. कपिल, एच. के. : ''असामान्य मनोविज्ञान'', एच.पी.भार्गव, बुक हाउस, आगरा।

17. कोल, लोकेश (1998) : ''शैक्षिक अनुसंधान की विधि'', विकास प्रकाशन हाऊस प्रा.लि., नई दिल्ली।

18. कुपुस्वामी : ''बाल व्यवहार और विकास'', कोणार्क पब्लिशर्स प्रा.लि.।

19. करलिंगर, एस. : ''समाज मनोविज्ञान के आधार'', लंदन।

20. माथुर, डॉ. एच.एस. : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

21. मंगल एस. के. (2002) : ''एडवांसड एज्युकेशनल साइकोलॉजी'', प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा.लि., नई दिल्ली।

22. मरवाह, डॉ. सरूपसिंह : ''शारीरिक एवं मानसिक तनाव'', पुस्तक महल खारी बावली, नई दिल्ली।

23. पारीक, रामगोपाल : ''उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा'', शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।

24. पाण्डेय, के. पी. (1987) : ''शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन के आधार'', अभिताश प्रकाशन, नई दिल्ली।

25. सिंह, डॉ. लाल साहब : ''शिक्षा में मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी'', साहित्य प्रकाशन आगरा।

26. सोनी, रामगोपाल : ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'', एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा।

27. सुखिया, एस.पी. एवं मेहरोत्रा : ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

28. सिंह, जोगिन्दर : ''पोजेटिव थिंकिंग सफलता का सूत्र'', फ्यूजन बुक्स, नई दिल्ली।

सम्बन्धित शोध प्रबन्ध :–

1. **प्रसाद एम. (1990)** *''चैन्नई के बाहर निवास करने वाले प्रबंध प्रशिक्षण के महाविद्यालय विद्यार्थियों पर तनाव का अध्ययन।''*

2. **योहन, विनिता (1990)** *''उच्च व निम्न दबाव वाले छात्राध्यापकों के व्यावसायिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।''*

3. **संधु, राजवंत (1996)** *''किशोर पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक दबाव व उनकी शैक्षिक निष्पात्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।''*

4. **मिश्रा रंजीता (2000)** *''महाविद्यालयी विद्यार्थियों मे शैक्षिक दबाव तथा उनकी दुश्चिंता, समय प्रबंधन व समय उपयोग संतुष्टि में संबंध का अध्ययन।''*

5. **गिरिराज खन्ना एवं मरियम्मा वर्घीज (2002)** *"India Woman Today"* **पृष्ठ–188**

6. **जोइंग टी (2003)** *''पंजीकृत नर्सो की संवेगात्मक बुद्धिमता, मेहनतीपन तथा कार्य दबाव के बीच सम्बन्ध पर अध्ययन।''*

7. **प्रोमिला कपूर (2003)** *"Marriage and working women india."*

8. **पद्मा रामचन्द्रन (2003)** *''महिला विद्यार्थियों की आधुनिक शिक्षा एवं भूमिका में दबावों का अध्ययन।''*

9. **भारती, टी. अरूणा (2003)** *"Sources of Job Stress among primary school Teachers."*

10. **नलवाया, रेखा (2004)** *''निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का शैक्षिक तनाव और व्यक्तित्व गुण।''*

11. **हडसन, बेही (2005)** *"A comparative Investigation of stress and opinion among a sample of K-8 Educators."*

12. **नागदा चन्द्रावती (2006)** *''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं में तनाव का अध्ययन।''*

13. **सिंह स्मिता (2006)** *''प्रोजेक्ट प्रबन्धकों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि तथा दबाव के स्त्रोतों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।''*

14. **राठौर रचना (2006)** *"A Study of Stress and Feeling of Insecurity among Adolescnet Students."*

15. **Mathur Madhu (2009)** *''भारतीय महिलाओं की जीवन शैली और उनमें दबाव के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।''*

16. **Singh Vikram & Khokhar C.P. (2009)** *''दबाव के कारकों व निदानात्मक उपचार का अध्ययन।''*

17. **सुनीता राजपूत (2010)** *''विवाहित अध्ययनरत छात्राओं द्वारा अनुभूत दबाव और उनकी दबाव प्रबन्धन शैली का अध्ययन।''*

18. **माइकल मेकिन (2000)** *"Self-related levels of anxiety and Depression among low-students."*

19. **Londis, Dana, Alexis (2002)** *"The role of coping in the relationship between uncontrollable stress and hopelesseness in low incomes when adolescents"*

20. **Villente, Carles (2003)** *"The consistency and stability of children's coping with daily stress."*

21. **Gill R. & Sandhu (2004)** *"Sociological and Environmental factors causing stress among women and fighting techniques used."*

22. **Clark Nekederia (2004)** *"The moderating effect of sprituality of the relationship between stressull life, depression and anxiety among adolescents."*

23. **काडापट्टी एम. एण्ड खादी पी. बी. (2004)** *''पूर्व विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों में दबाव व प्रबन्धन का अध्ययन।''*

24. **मरसीर के लुईस (2005)** *''किशोर एवं अयोग्य विद्यार्थियों की स्व प्रभावकता का मायूसी/दबाव एवं अकादमिक दुश्चिंता पर प्रभाव का अध्ययन।''*

25. **मिलनर कारोलीन (2006)** *''माता–पिता तथा शिक्षकों का छात्रों के भय एवं अकादमिक दुश्चिंताओं के प्रत्यक्षीकरण का तुलनात्मक अध्ययन।''*

26. **वेकर मेरी व विलियम्स (2006)** *''Women's work stress and their impact on health, well being and career.''*

27. **जेनी पेरीमीघम (2007)** *''किशोर विद्यार्थियों में दबाव के कारणों का अध्ययन।''*

28. डी संता मंता **(2007)** *''किशोरों में दबाव एक उबरती समस्या के कारणों का अध्ययन।''*

29. **Gupta, S. (1990)** *''किशोर छात्राओं पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर समायोजन का अध्ययन।''*

30. **Pande, Bhujendra Nath (1992)** *''बनारस के 100 किशोर एवं 100 किशोरियों पर उपलब्धि के आधार पर समायोजन का अध्ययन।''*

31. **Jargar, A.H. & Mohmd. Ikbal (1992)** *''माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियों की समायोजन व सृजनशीलता का अध्ययन।''*

32. **आमेटा, हेमलता (2000)** *''गाइड एवं गैर गाइड छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं स्वधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन।''*

33. **गोस्वामी, देवेन्द्रपुरी (2002)** *''सीनियर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुश्चिंता का उनके व्यक्तित्व तथा समायोजन के साथ संबंध का अध्ययन।''*

34. **शर्मा, देवेन्द्र कुमार (2002)** *"A Study of Adjustment and Classroom Learning Environment of Responsive Teachers."*

35. **Manika Mohan & Kulshrestha, Usha (2004)** *''किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन पैटर्न पर अध्ययन।''*

36. **Kumari, Chandra & Kanwar, Bhanwar (2004)** *''किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन में सहसम्बन्ध पर अध्ययन।''*

37. **Panwar, Meena (2004)** *''एकल एवं संयुक्त परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों के समायोजन व व्यक्तित्व के लक्षणों का अध्ययन।''*

38. **Tomar, Jagat Pal & Tripati, Brijesh Chand (2005)** *''शहरी व ग्रामीण सहशैक्षिक तथा समलिंगिय बालिका विद्यालय की छात्राओं के समायोजन का अध्ययन।''*

39. **Saeed, Nabila & Bharti, K. (2005)** *''दिल्ली के पब्लिक स्कूल में अध्ययनरत तथा शहरी वातावरण के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन तथा अधिगम शैली का अध्ययन।''*

40. **शर्मा, डॉ. इन्दिरा (2006)** *''विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता व समायोजन का अध्ययन।''*

41. **मुर्डिया, सुनीता (2007)** ''अध्यापकों की आध्यात्मिक बुद्धि, व्यक्तिव लक्षणों एवं समायोजन में सह–सम्बन्ध का अध्ययन।''

42. **Dr. P. Usha (2007)** *''संवेगात्मक समायोजन व बालक की पारिवारिक स्वीकारिता का उपलब्धि के साथ सहसंबंध का अध्ययन।''*

43. **Kumar, Fulwariya Rajesh (2008)** *''आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के मध्य समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।''*

44. **Nanda, A.N. (2009)** *''किशोर बालिकाओं की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं एवं समायोजन पर अध्ययन।''*

45. **Deepshika & Bhanot, Suman (2009)** *''पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र की किशोरियों के सामाजिक समायोजन में पारिवारिक वातावरण की भूमिका का अध्ययन।''*

46. **उपाध्याय, संतोष (2009)** *''शिक्षक महाविद्यालय में अध्ययनरत सामान्य व अनुसूचित जाति की छात्राओं के समायोजन एवं दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन।''*

47. **सिंह, महेश कुमार (2009)** *''उच्च व निम्न वैज्ञानिक मनोवृत्ति वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, स्वधारणा एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।''*

48. **रावल, उपेन्द्र (2010) :** *''अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्राध्यापकों के समायोजन, स्वसामर्थ्य तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।''*

49. **चौधरी, कैलाश चन्द्र (2011)** *''अध्यापकों की संगठनात्मक प्रतिबद्धता का उसके व्यक्तित्व गुणों तथा सामंजस्य से सम्बन्ध का अध्ययन।''*

50. **पुरोहित, मिट्ठूलाल (2016)** *''राजस्थान सरकारी सेवा में समायोजित अनुदानित संस्थाओं के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, समायोजन एवं समस्याओं का अध्ययन।''*

51. **ग्रीन्स डी.एन. (1998)** *"Students Failure and Adjustment."*

52. **ये जिपेक्ग (2003)** *''समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।''*

53. **थामस स्मित (2004)** *''शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन।''*

54. **व्यबांक टाटी (2005)** *''व्यक्तिगत समायोजन एवं पारिवारिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन।''*

55. **Thakkar, Kanheyalal (2005)** *''माध्यमिक स्तर के छात्रों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।''*

56. **Petra Hampal & Franz Peterman (2006)** *''किशोरों मे आकस्मिक अन्तः वैक्तिक दबाव, सहनशीलता तथा मनोवैज्ञानिक समायोजन का प्रारम्भिक व मध्यस्थ किशोरो में उनके प्रभाव का अध्ययन।''*

57. **जिडेना रूजेलोवा (2007)** *"Adjustment Problem Diamension in Slovak Adolescents."*

पत्र पत्रिकाऐं :–

1. उद्यमिता विकास मार्गदर्शिका, मनोवैज्ञानिक आधार, विभाग–3 SCERT, उदयपुर पृ.स.11

2. Edu-Tracks, 2005, 2009, 2010, Neel Kamal Publications.

3. Encyclopedia Dictionary of Education – Vol.1

4. Internation Dessertation Abstracts - 2000 to 2011

5. Research on Adjustment in Adolescence Sept. 2011.

6. Indian Journal of Social Science Researches oct. 2009.

7. Journal of Adolescent Health of Adjustment 2006. Vol.38.

8. High or Education Commission Pakisthan – 1993.

9. Stress, Anxiety, Tension :- Psychiatrist North Delhi.

10. UMI International & National Research Abstracts

11. www.stress.com

प्रकाशित शोध पत्र

ISSN 0975-4636

लोकमान्य शिक्षक
Lokmanya Shikshak

A JOURNAL OF EDUCATION

Issue - 50
Year - Dec., 2017

Research Special
शोध विशेषांक

JANARDAN RAI NAGAR RAJASTHAN VIDYAPEETH
(DEEMED TO-BE-UNIVERSITY), UDAIPUR RAJASTHAN
(NAAC Accredited 'A' Grade Univrersity)
(Established Under Section 3 of the UGC Act, 1956 vide Notification No. F.9-5/84-U-3, January 12, 1987/of the Government of India)
Lokmanya Tilak Teachers Training College (CTE)
Dabok-313022, Udaipur (Raj.)

अनुक्रमणिका

क्र. स.	विषय-वस्तु	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	LANGUAGE PEDAGOGY :CONCERNS , ISSUES AND CHALLENGES	Dr. Anil Paliwal	01
2	महाकवि कालिदास के शैक्षिक विचार	डॉ. रा. चन्द्रशेखार	11
3	STRATEGIES AND AGENCIES OF THE TEACHER EMPOWERMENT	Prof. Shashi Chittora	15
4	उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण में परम्परागत विधि एवं कम्प्यूटर सहाय विधि का तुलनात्मक अध्ययन	जयन्त कुमार जोशी डॉ. बी.एम. दाधीच	22
5	ETHNOGRAPHIC RESEARCH STUDIES : ITS IMPORTANCE IN OUR CULTURAL CONSERVATION	Dr Zehra Banu	27
6	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 पर आधारित माध्यमिक स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का गुणात्मक विश्लेषण : एक शोध अध्ययन	डॉ. दया दवे सुचिका भटनागर	30
7	विचारों की शक्ति	मीनाक्षी शर्मा	38
8	मेडिकल व इंजिनियरिंग प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले किशोर विद्यार्थियों में अवसाद का विश्लेषण	डॉ. मूलचन्द मीण डॉ. सरोज गर्ग	41
9	THE ROLE OF INTEGRATED COURSE IN EDUCATIONAL SYSTEM	Dr. Gopal Choudhary Dr.Veera Raykar	47
10	ICT AND ITS IMPACT ON EDUCATION	Chirag Dhupia	52
11	स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के आध्यात्मिक विकास में योगदान	अल्पना शर्मा डॉ. कंचन शर्मा	57
12	उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी अध्यापकों की कक्षा शिक्षण में आने वाली समस्याओं का अध्ययन	डॉ. हरीश चन्द्र चौबीसा डॉ. हरीश मेनारिया	63
13	राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति समायोजन का विश्लेषण	डॉ. सपना जोशी प्रियंका शर्मा	69
14	श्रीरामचरितमानस के अनुरूप शिक्षा	वन्दना चौधरी	75
15	EDUCATION FOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT	Dr.Vibha Devpura	79
16	विद्यालय : सज़ा या मज़ा	डॉ. अमित कुमार दवे	84

राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति समायोजन का विश्लेषण

* डॉ. सपना जोशी
** प्रियंका शर्मा

प्रस्तुत शोध आलेख में डॉ. जोशी एवं शर्मा ने राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति समायोजन का अध्ययन किया है। सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए 600 विद्यार्थियों के न्यादर्श से मानकीकृत उपकरण के माध्यम से दत्तों का संकलन कर विश्लेषण किया। विश्लेषण कर शोधार्थियों के पाया कि कोचिंग लेने वाले विद्यार्थी परीक्षा में असफलताओं के भय, जोब की अनिश्चितता, आर्थिक तंगी, पारिवारिक दबाव, सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव, मानसिक अस्थिरता व असन्तुलन आदि कारणों से मानसिक रूप से असंतुलित महसूस करते हैं। समायोजन करने की क्षमता छात्राओं से छात्रों में कम पाई गई।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में सबसे ज्यादा बेरोजगारी बी.एड.डिग्रीधारी विद्यार्थियों कि बढ़ रही है। एक ओर जहाँ हर वर्ष 1 से 1.5 लाख बच्चे बी.एड.का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर सरकार कि तरफ से शिक्षक भर्ती परीक्षा के नाम पर मात्र दस हजार वेकेंसी ही निकाली जाती है। वह भी साल दो साल में एक बार, तब तक विद्यार्थी कोचिंग में लाखो रूपये खर्च कर देते हैं ऐसी स्थिति में दस हजार भर्ती मात्र उनके लिए ऊँट के मुँह में जीरा के बराबर होती है जिससे विद्यार्थियों में केरियर को लेकर हमेशा असमंजस कि स्थिति बनी रहती है। जिससे उनका मानसिक व शारीरिक संतुलन भी सही नहीं रहता है। वे घोर निराशावादी व हताश होकर असमायोजित हो जाते हैं और वे घर की ओर वापिस लौट जाते हैं। केरियर को लेकर बढ़ते दबाव से विद्यार्थी समाज व परिवार में भी अपने आप को असहज व असमायोजित महसूस करता है। वह शादी, उत्सव, पिकनिक आदि समारोह में भी जाने से कतराने लगता है इसीलिए वे विद्यार्थी समाज,परिवार व कोचिंग में दूसरों के साथ समायोजित नहीं कर पाते हैं। कोटा शैक्षणिक नगरी के नाम से विख्यात होने से ग्रामीण क्षेत्र के लाखों विद्यार्थी कोटा शहर में कोचिंग करने आते हैं और यहाँ की विद्यालयी शिक्षा, कोचिंग, शिक्षण कार्य, भोजन, आवासीय सम्बन्धी समस्या से झुजते हैं तथा अपने आपको असमायोजित महसूस करते हैं।

बालक का विकास एवं अभिवृद्धि उसकी परिस्थितियों एवं वातावरण पर निर्भर करती है। उसका व्यवहार व अनुक्रिया भी इसी से प्रभावित होती हैं। बालक अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वातावरण व परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करने का प्रयास करता है। इस अनुकूलन को समायोजन कहते हैं। बालक अपनी बुद्धि एवं सामर्थ्य की सहायता से नई समस्याओं, आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित कर लेता है तो सामंजस्य की इस प्रक्रिया को ही समायोजन कहते

* रीडर, जवाहरलाल नेहरू टी टी पीजी कॉलेज, सकतपुरा कोटा
** पीएच.डी. स्कोलर, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

हैं। समायोजन से तात्पर्य व्यक्ति कि आवश्यकताओ आकांक्षाओं तथा वातावरण की माँग व बाधाओं के मध्य संतुलन या समन्वयन से है। जीवन को सुखी बनाए रखने के लिए परिवर्तन सहज रूप में स्वीकार करते रहना ही समायोजन है।

गेट्स के अनुसार " समायोजन एक सतत प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व वातावरण के मध्य संतुलित सम्बन्ध बनाए रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।"

बोरिंग व लैंगफिल्ड के अनुसार " समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओ की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के साथ संतुलन बनाए रखता है।"

अतः कहा जा सकता है कि समायोजन व्यक्ति की आंतरिक और बाह्य आवश्यकताओकि पूर्ति एवं उनमे सामंजस्य स्थापित करने का संतोषजनक माध्यम है। जीवन में सफलता व असफलता मुख्य रूप से विद्यार्थियों के समायोजन पर ही निर्भर करती है। इसी दृष्टि से शोधार्थी ने इस विषय का चयन किया। राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों का केरियर के प्रति समायोजन का विश्लेषण मध्यमान प्रतिशत व मानक विचलन के आधार पर किया गया।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्न है–

(1) राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति समायोजन का अध्ययन।

(2) राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले छात्र एवं छात्राओं में केरियर के प्रति समायोजन का तुलनात्मक विश्लेषण ।

न्यादर्श

न्यादर्श के रुप में शैक्षणिक नगरी कोटा में राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले 600 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया।

शोध विधि

शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया क्योंकि वर्तमान व तात्कालिक परिस्थितियों को ज्ञात करने के लिए सर्वेक्षण विधि ही सर्वोतम मानी गई है । इसलिए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

उपकरण

राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियोंके समायोजन स्तर को जानने के लिए शोधार्थी ने मानकीकृत उपकरण के रूप में **Dr. A.K. Singh & Dr. A. Sen. Gupta** द्वारा निर्मित **Adjustment Inventry For College** का प्रयोग किया।

सारणी 1

राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों मे केरियर के प्रति समायोजन का विश्लेषण

क्षेत्र	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन
घर	9.75	4.24
स्वास्थ्य	9.57	4.08
सामाजिक	11.72	4.94
सांवेगिक	18.37	5.87
शैक्षिक	14.53	5.16
कुल	63.96	18.56

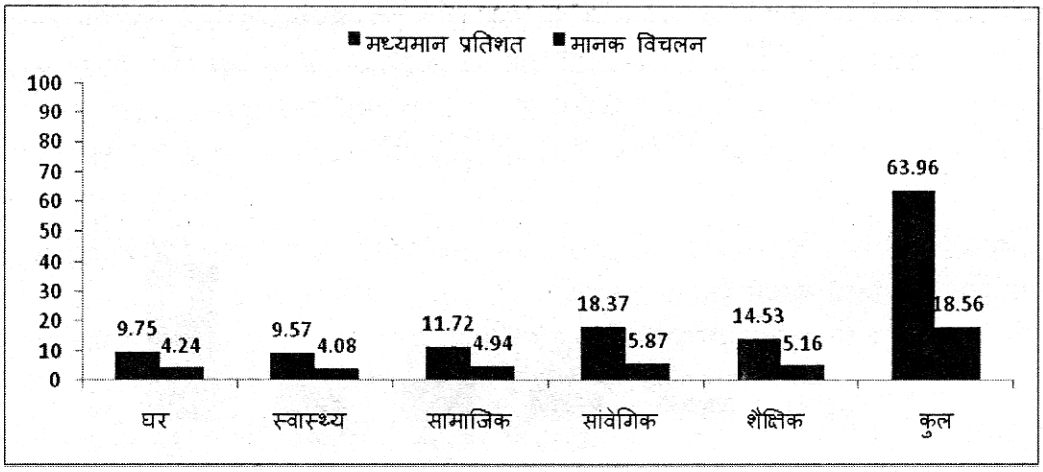

आरेख सं. 1

विश्लेषण

सारणी 1 से ज्ञात होता है कि राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति समायोजन का कुल मध्यमान प्रतिशत 63.96 प्रतिशत तथा मानक विचलन 18.56 प्राप्त हुआ है, जो औसत स्तर का है । क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक समायोजन सांवेगिक क्षेत्र में 18.37 प्रतिशत प्राप्त हुआ तथा सबसे कम समायोजन9.57 प्रतिशत स्वास्थ्य क्षेत्र में प्राप्त हुआ है । अन्य क्षेत्रों में घर क्षेत्र 9.75, सामाजिक क्षेत्र 11.72, तथा शैक्षिक क्षेत्र में 14.53 प्रतिशत समायोजन प्राप्त हुआ है जो औसत स्तर का समायोजन है। इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि ट्च्ै की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में समायोजन का मुख्य कारण सांवेगिक माना है । प्रतियोगी परीक्षा में असफलता, जोब की अनिश्चितता , आर्थिक तंगी, पारिवारिक दबाव, सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव, मानसिक अस्थिरता व असंतुलन आदि कारणों से विद्यार्थी मानसिक रूप से असंतुलित महसूस करते हैं ।

सारणी 2

राजस्थान लोकसेवा आयोग की कोचिंगकरने वाले छात्र एवं छात्राओं में केरियर के प्रति समायोजन का तुलनात्मक विश्लेषण

क्षेत्र	छात्र (N=298)		छात्रा (N=298)	
	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन
घर	9.41	4.10	10.08	4.24
स्वास्थ्य	9.04	4.01	10.11	4.25
सामाजिक	11.14	4.27	12.30	.47
सांवेगिक	19.10	5.01	17.65	4.97
शैक्षिक	14.10	4.30	14.82	4.76
कुल	62.94	19.54	64.98	8.26

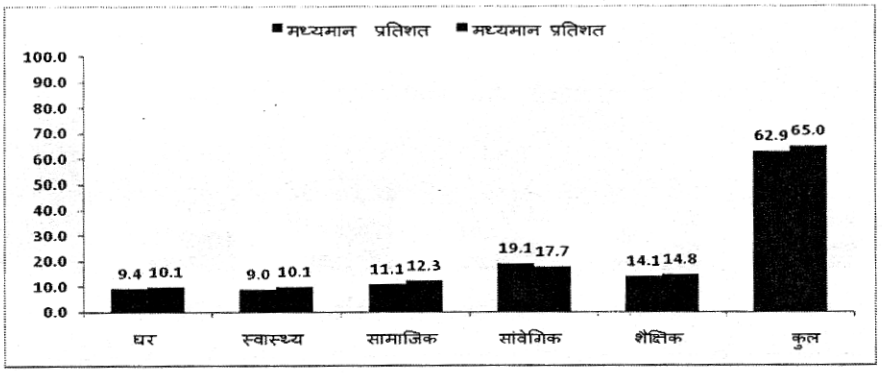

आरेख सं. – 2

विश्लेषण

सारणी 2 से ज्ञात होता है कि राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले छात्रों में केरियर के प्रति समायोजन का मध्यमान प्रतिशत 62.94 तथा मानक विचलन 19.54 प्रतिशत प्राप्त हुआ जो छात्राओं के समायोजन के मध्यमान प्रतिशत 64.98 तथा मानक विचलन 18.26 प्रतिशत की अपेक्षा कम प्राप्त हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि छात्राओ की अपेक्षा छात्रों में ज्यादा असमायोजन पाया जाता है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी छात्राओ की अपेक्षा छात्रों मेंअसमायोजन ज्यादा पाया जाता है। इसका सबसे मुख्य कारण सांवेगिक कारण को माना जिसका समायोजन छात्रों में 19.10 तथा छात्राओ में 17.65 प्रतिशत पाया गया। घर क्षेत्र में न्यूनतम 9.41 प्रतिशत छात्रों में तथा 10.08 प्रतिशत छात्राओं में पाया गया। शेष अन्य क्षेत्रों में भी छात्रों में स्वास्थ्य क्षेत्र 9.04, सामाजिक क्षेत्र 11.14 तथा शैक्षिक क्षेत्र में 14.10 प्रतिशत

के साथ औसत स्तर का रहा। जबकि शेष अन्य क्षेत्रों में छात्राओं में घर क्षेत्र 10.08, स्वास्थ्य क्षेत्र में 10.11, सामाजिक क्षेत्र में 12.30 तथा शैक्षिक क्षेत्र में 14.82 प्रतिशत के साथ समायोजन औसत स्तर का रहा। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में ज्यादा समायोजन पाया गया क्योंकि छात्रों को जोब की चिंता ज्यादा रहती तथा परिवार व समाज का दबाव छात्राओं की अपेक्षा छात्रों पर ज्यादा होता है क्योंकि छात्रों पर परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी भी होती है इसीलिए उनका समायोजन असंतुलित हो जाता है। इससे पता चलता है कि छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा समायोजन करने की क्षमता कम होती है छात्र छात्राओं की अपेक्षा कम सहनशील ,ज्यादा उत्तेजित एवं क्रोधित होते हैं।

निष्कर्ष

शोधार्थी ने राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति समायोजन का विश्लेषण मध्यमान प्रतिशत व मानक विचलन के आधार पर किया गया। विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं:–

1. आर पी एस सी की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों मे केरियर के प्रति समायोजन का विश्लेषण क्षेत्रानुसार करने पर सर्वाधिक समायोजन सांवेगिक क्षेत्र में 18.37 प्रतिशत पाया तथा न्यूनतम स्वास्थ्य क्षेत्र में 9.57 प्रतिशत पाया गया। इसके पश्चात् ये विद्यार्थी क्रमानुसार सामाजिक क्षेत्र में 11. 72 प्रतिशत, शैक्षिक क्षेत्र में 14.53 प्रतिशत , घर क्षेत्र में 9.75 प्रतिशत के साथ समायोजन औसत स्तर का पाया गया।
2. राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले छात्र– छात्राओं का केरियर के प्रति समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में ज्यादा सांवेगिक समायोजन पाया गया तथा सबसे कम घर क्षेत्र में 9.41 प्रतिशत समायोजन पाया गया। सांवेगिक क्षेत्र के साथ अन्य क्षेत्रों में भी छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में समायोजन ज्यादा पाया गया ।
3. क्षेत्रानुसार तुलनात्मक अध्ययन करने पर भी छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में शैक्षिक क्षेत्र में 14.82 ,सामाजिक क्षेत्र में 12.30 प्रतिशत के साथ समायोजन क्षमता ज्यादा पाई जाती है। सांवेगिक रूप से छात्र 19.10 प्रतिशत के साथ छात्राओं की अपेक्षा ज्यादा परिपक्व पाए गए।

उपसंहार

राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों मे केरियर के प्रति समायोजन का क्षेत्रानुसार विश्लेषण **Dr. A. K. Singh & Dr. A. Sen. Gupta** द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण " **Adjustment Inventry For College** से प्राप्त मध्यमान प्रतिशत व मानक विचलन के आधार पर किया गया। लिंग विषय, क्षेत्र व शैक्षिक स्तर के आधार पर छात्र– छात्राओं में केरियर के प्रति समायोजन का तुलनात्मक विश्लेषण का विवेचन किया गया जिसमें छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में कम समायोजन पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गुप्ता डॉ. एस. पी. अल्का, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद ।

2. कपिल डॉ. एच. के., असामान्य मनोविज्ञान, एच पी भार्गव पुस्तक भवन आगरा ।
3. सुखिया, एच पी. एण्ड मेहरोत्रा, शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा ।
4. सिंह ए. के., शिक्षा मनोविज्ञान भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स द्य
5. Journal of Education and Psychology vol-63 Nov 2006
6. www.Adjustment.com.

ISSN 0974-0732

EDUCATIONAL HERALD

(A QUARTERLY JOURNAL OF EDUCATIONAL RESEARCH)

April - June 2018 Vol. 47 No. 2

One Who Dares To Teach Must Never Cease To Learn

SHAH GOVERDHANLAL KABRA TEACHERS' COLLEGE (C.T.E.), JODHPUR

Contents

1. Editorial 3

2. Language Pedagogy : Concerns, Issues and Challenges 5
– Dr. Anil Paliwal

3. A Study of the Status of Classroom Activities, Practical Work and Outdoor Activities in Science Teaching at Secondary Level. 16
– Dr. Vibha Devpura

4. Motives of Student—Teachers to Join Pre-Service Secondary Teacher Education Programme 25
– Sushma Bala

5. Rubrics as an Assessment Tool for Quality Education 35
– Dr. Priya Khimnani

6. Environmental Education : New Approach to Environmental Awareness 39
– Dr. Usha Rao

7. नजफगढ़ क्षेत्र के उतरबाल्यावस्था के विद्यार्थियों के भाषायी विकास में कार्टून नेटवर्क की भूमिका का अध्ययन 45
– विरेन्द्र ढाका
– डॉ. रीटा अरोडा

8. विज्ञान संकाय में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं एड्स जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन 56
– श्रीमती मधु चौहान

9. उच्च माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में आर्थिक मानवाधिकार विषयवस्तु का विश्लेषण 61
– सुमन अग्रवाल
– डॉ. कुसुमलता

10. उच्च माध्यमिक स्तर के आरक्षित व अनारक्षित श्रेणी के विद्यार्थियों की प्रजनन स्वास्थ्य एवं एड्स के प्रति जागरूकता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन..... 70
– श्याम मनोहर गौतम
– प्रो. डॉ. लीलेश गुप्ता

11. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिमता का अध्ययन..... 79
– डॉ.ऊषा गोयल

12. मुरादाबाद जनपद में कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना द्वारा संचालित विद्यालयों का भौतिक सुविधाओं तथा शैक्षिणिक गतिविधियों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन..... 88
– डॉ. रश्मि मेहरोत्रा
– शैफाली जैन

13. राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन..... 103
– प्रियंका शर्मा
– डॉ. सपना जोशी

❋ ❋ ❋

राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन

❑ प्रियंका शर्मा [1]
❑ डॉ. सपना जोशी [2]

प्रस्तावना

वैश्विकरण व आधुनिक युग में बढती प्रतिस्पर्धा के कारण विद्यार्थियों के सामने अपने केरियर को बनाने का दबाव बढता जाता है। जिसके कारण विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाते है और अन्ततः उनको असफलता ही हाथ लगती है। इस असफलता के कारण ही विद्यार्थी कोचिंग की तरफ रुख करते है द्य कोचिग में भी विद्यार्थियों को विषयवस्तु अनुसार ही तैयारी करवायी जाती है लेकिन पैसो के लालच में कोचिंग वाले इतने छात्रों का प्रवेश ले लेते है कि छात्रो को बैठने तक की जगह नही मिलती है कक्षा में जो पढाया जाता है उसे ध्यानपूर्वक सुन भी नही पाते है न ही समझ पाते है। इसी कारण विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षा में असफल होते है असफलता से ही विद्यार्थियों में दबाव बढ जाता है। दबाव के कारण उनका मानसिक सन्तुलन बिगड जाता है ,वे चिडचिडे स्वभाव के हो जाते हैं, एकाकीपन महसूस करने लगते हैं, उनकी मानसिक बुद्धि एवं स्मृति कमजोर होने लगती है। यही कारण है कि विद्यार्थी बहुत ज्यादा दबाव महसूस करने लगता है।

वर्तमान समय में बढती तकनीकि के कारण सरकारी वैकेन्सी कम निकलती है द्य विद्यार्थियों की संख्या प्रतिवर्ष 1 से 1.5 लाख तक बढ जाती है इस बढती हुई भीड से भी विद्यार्थियों में दबाव बढने लगता हैद्य माता-पिता की बढती आकांक्षा से भी

---

[1] शोधार्थी, पीएच.डी. (शिक्षा), कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
[2] रीडर, जवाहरलाल नेहरू पीजी टी टी कॉलेज सकतपुरा, कोटा

विद्यार्थियों में दबाव बढता है। जिनमें अधिकांश बच्चे तो उधार पैसे लेकर अपनी कोचिंग की फीस जमा कराते है ऐसे बच्चो को जब सफलता नही मिलती है तो वे ज्यादा दबाव में होते हैं। इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने इस विषय का चयन किया हैं। जब व्यक्ति एक निश्चित स्तर के अनुसार जीवन जीने के सम्बंध में सोचता है अथवा जब व्यक्ति को तीव्र गति से होने वाले परिवर्तनों के साथ अनुकूल करना होता है जब वह इन परिवर्तनों से अनुकूल नही कर पाता है तो उसमें दबाव बढ जाता है।

दबाव का सामान्य शब्दों में अर्थ है – "व्यक्तियों के द्वारा जीवन भर अनुभव किये जाने वाला मानसिक व शारीरिक दबाव है।" दबाव अंग्रेजी शब्द जतमे का हिन्दी अर्थ है। व्यक्ति को दबाव प्रतियोगिता के कारण होता है। कभी–कभी अपने आत्म सम्मान की रक्षा के लिए भी व्यक्ति दबाव महसूस करता है।

कॉलमेल के अनुसार – "कोई भी परिस्थिति जो व्यक्ति पर दबाव डालती है जिसके कारण व्यक्ति को समायोजन करना पडता है वही दबाव है।"

मनोवैज्ञानिक के अनुसार – "दबाव जीवन की सामान्य संतुलन प्रणाली के असफल हो जाने की अवस्था है तथा इस बिगडी हुई अवस्था से पुनः सामान्य अवस्था में न आ पाने के कारण दबाव उत्पन्न होता है।"

असाधारण अनुक्रिया जो समायोजन में बाधा उत्पन्न करती है। दूसरे शब्दों में ऐसे भौतिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय कारक जो व्यक्ति को असाधारण अनुक्रिया करने के लिए बाध्य करते है वह दबाव कहलाता है।

मेरियम वेबस्टर– "व्यक्ति के जीवन में कार्य करते समय समस्याओं से उत्पन्न कारणों, चिन्ताओं और मानसिक तनाव की स्थिति व दशा को ही दबाव कहते हैं।"

मानव जीवन में दबाव के मुख्य कारण निम्नलिखित है –

(1) जीवन में निराशा व असफलता

(2) समस्याओं से घबराना

(3) जीवन में संघर्ष व तनाव

(4) मानसिक व शारीरिक असन्तुलन

(5) कार्य का दबाव

(6) अच्छे परिणाम का दबाव

(7) तीव्र हृदयाघात

(8) मानसिक व शारीरिक कमजोरी।

व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति के दौरान अनेक बाधाओं का सामना करना पडता है। कई बार समय कम होने, अनेक विकल्पो में से एक को चुनने तथा लक्ष्य प्राप्ति के बाद कई बाधाऐं उत्पन्न होती है। जिसके कारण व्यक्ति दबाव महसूस करने लगता है। इस प्रकार विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का विश्लेषण करने हेतु शोधार्थी ने इस विषय का चयन किया है। दबाव का विश्लेषण को ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित दबाव प्रमापनी का निर्माण किया गया है।

उद्देश्य

(1) राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करना।

(2) राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले छात्र एवं छात्राओं में केरियर के प्रति बढते दबाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श

न्यादर्श के रुप में शैक्षणिक नगरी कोटा में राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले 600 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया है।

शोध विधि

शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि वर्तमान व तात्कालिक परिस्थितियों को ज्ञात करने के लिए सर्वेक्षण विधि ही सर्वोतम मानी गई है। इसलिए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

उपकरण

राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का अध्ययन करने के लिए स्वनिर्मित "दबाव प्रमापनी" का प्रयोग किया है।

विश्लेषण एंव व्याख्या

सारणी 1–राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का मध्यमान एवं मानकविचलन

क्षेत्र	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन
शैक्षिक	43.01	9.01
आर्थिक	46.17	9.03
सामाजिक	48.25	8.98
मनोवैज्ञानिक	57.79	9.15
पारिवारिक	52.01	9.79
व्यावसायिक	55.10	9.83
कुल	49.88	41.91

क्षेत्रानुसार अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक दबाव मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में 57.79 प्रतिशत प्राप्त हुआ तथा सबसे कम दबाव 43.01 प्रतिशत शैक्षिक क्षेत्र में प्राप्त हुआ है। अन्य क्षेत्रों में आर्थिक क्षेत्र 46.17, सामाजिक क्षेत्र 48.25, पारिवारिक क्षेत्र 52.01 तथा व्यवसायिक क्षेत्र में 55.10 प्रतिशत दबाव प्राप्त हुआ है जो औसत स्तर का दबाव है। इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि RPSC की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में दबाव का मुख्य कारण मनोवैज्ञानिक माना है। प्रतियोगी परीक्षा में असफलता, जॉब की अनिश्चितता, आर्थिक तंगी, पारिवारिक दबाव, सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव, मानसिक अस्थिरता व असंतुलन आदि कारणों से विद्यार्थी दबाव महसूस करते हैं।

सारणी 2–राजस्थान लोकसेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले छात्र एवं छात्राओं में केरियर के प्रति बढते दबाव का तुलनात्मक

क्षेत्र	छात्र (N=298)		छात्रा (N=298)	
	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन
शैक्षिक	29.30	7.30	50.37	7.92
आर्थिक	27.63	5.10	57.98	7.46
सामाजिक	32.08	6.69	59.90	7.35
मनोवैज्ञानिक	38.27	6.89	62.91	7.65

क्षेत्र	छात्र (N=298)		छात्रा (N=298)	
	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन
पारिवारिक	32.10	7.96	58.94	7.10
व्यवसायिक	33.19	7.01	60.10	6.92
कुल	56.40	26.57	57.26	25.16

क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी छात्राओ की अपेक्षा छात्रों में दबाव ज्यादा पाया जाता है। इसका सबसे मुख्य कारण मनोवैज्ञानिक कारण को माना है जिसका दबाव छात्रों में 38.27 तथा छात्राओ में 62.91 प्रतिशत पाया गया है। शैक्षिक क्षेत्र में न्यूनतम 29.30 प्रतिशत छात्रों में तथा 50.37 प्रतिशत छात्राओं में पाया गया हैद्य शेष अन्य क्षेत्रों में भी छात्रों में आर्थिक क्षेत्र 27.63, सामाजिक क्षेत्र 32.08, पारिवारिक क्षेत्र 32.10 तथा व्यावसायिक क्षेत्र 33.19 में दबाव औसत स्तर का रहा है। जबकि शेष अन्य क्षेत्रों में छात्राओं में शैक्षिक क्षेत्र 50.37, आर्थिक 57.98, सामाजिक 59.90 पारिवारिक 58. 94 व्यावसायिक 60.10 प्रतिशत दबाव औसत स्तर का रहा है। छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में ज्यादा दबाव पाया गया क्योकि छात्रों को जॉब की चिंता ज्यादा रहती है। पारिवारिक व सामाजिक दबाव भी छात्राओं की अपेक्षा छात्रों पर ज्यादा होता है क्योंकि छात्रों पर परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी भी होती है।

निष्कर्ष

शोधार्थी ने राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का विश्लेषण मध्यमान प्रतिशत व मानक विचलन के आधार पर किया गया है। विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1. आर.पी.एस.सी. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का विश्लेषण क्षेत्रानुसार किया गया है सर्वाधिक दबाव मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में 57.97 प्रतिशत पाया गया है तथा न्यूनतम शैक्षिक क्षेत्र में 43.01 प्रतिशत पाया गया है। इसके पश्चात ये विद्यार्थी क्रमानुसार व्यावसायिक 55.10 प्रतिशत, पारिवारिक 52.01 प्रतिशत, सामाजिक 48.25 प्रतिशत, आर्थिक क्षेत्र में 46.17 प्रतिशत के साथ दबाव पाया गया है।
2. राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले छात्र-छात्राओं का केरियर के प्रति बढते दबाव का तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में ज्यादा मनोवैज्ञानिक दबाव पाया गया है तथा

सबसे कम शैक्षिक क्षेत्र में दबाव पाया गया है। मनोवैज्ञानिक क्षेत्र के साथ अन्य क्षेत्रों में भी छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में दबाव कम पाया गया है।

3. छात्र–छात्राओं में दबाव का मुख्य कारण मनोवैज्ञानिक माना है क्योकि छात्रों में परीक्षा की चिन्ता, सफलता की चिन्ता, चयन का डर, असफलता को लेकर चिंतित रहते हैं जिससे मानसिक संतुलन बिगड जाता है और वह दबाव महसूस करने लगता है।

उपसंहार

राजस्थान लोक सेवा आयोग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव का क्षेत्रानुसार विश्लेषण दबाव प्रमापनी से प्राप्त मध्यमान प्रतिशत व मानक विचलन के आधार पर किया गया है। लिंग विषय, क्षेत्र व शैक्षिक स्तर के आधार पर छात्र– छात्राओं में केरियर के प्रति बढते दबाव का तुलनात्मक विश्लेषण का विवेचन किया गया है जिसमें छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में ज्यादा दबाव पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. **गुप्ता डॉ. एस.पी. अल्का :** उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
2. **कपिल डॉ. एच.के. :** असामान्य मनोविज्ञान, एच.पी. भार्गव पुस्तक भवन आगरा।
3. **सुखिया, एच.पी. एण्ड मेहरोत्रा :** शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
4. **सिंह ए.के. :** शिक्षा मनोविज्ञान भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
5. Journal of Education and Psychology, Vol. 63 Nov. 2006.

❋ ❋ ❋

परिशिष्ट

दबाव प्रमापनी

1) सामाजिक क्षेत्र :–

1. सामाजिक प्रतिष्ठा बढाने हेतु मै सामाजिक कार्यों में भाग लेता हूँ।
2. सामाजिक रिति–रिवाजों के निर्वहन हेतु मुझ पर दबाव बनाया जाता है।
3. सामाजिक पिछड़ेपन के कारण मैं हीनभावना से ग्रसित हो जाता हूँ।
4. सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने में मैं संकोच करता हूँ।
5. उचित व्यवसाय का चयन उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा का द्योतक है।
6. शादी–विवाह इत्यादि सामाजिक उत्सवों में जाना अच्छा लगता है।
7. सामाजिक रूप से पिछडेपन के कारण मुझे हीनता/घृणा की दृष्टि से देखते है।
8. सामाजिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा आलोचना करने पर स्वयं को तनाव में पाता हूँ।
9. समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ मेलजोल रखना पसंद करता हूँ।
10. सामाजिक प्रतिष्ठा पाने हेतु स्वयं पर उच्च शिक्षा प्राप्ति का दबाव महसूस करता हूँ।
11. मैं अपने समस्त रिश्तेदारों एवं मित्रों से कोई आशा नहीं रखता हूँ।
12. मैं अपने मित्रों व रिश्तेदारों से दूर भागता हूँ।

2) आर्थिक क्षेत्र :–

1. आर्थिक स्थिति कमजोर होने से मैं उच्च शैक्षणिक शुल्क नहीं दे पाता हूँ।
2. आर्थिक स्थिति कमजोर होने से मैं कोचिंग में अध्ययन नहीं कर पाता हूँ।
3. धनाभाव में प्रतिभा दब कर रह जाती है।
4. कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण माता –पिता मेंरे स्वप्नों को साकार नहीं कर पातें है।
5. उच्च शिक्षा प्राप्ति के बाद भी नौकरी नहीं मिलने से स्वयं को कुण्ठित महसूस करता हँ।
6. पारिवारिक आर्थिक स्थिति कमजोर होने से छात्र शिक्षा के प्रति उदासीन हो जाते है।
7. भौतिक सुख–सुविधाओं की पूर्ति के अभाव में स्वयं तनावग्रस्त महसूस करता हूँ।
8. दिनोंदिन बढती बेरोजगारी से छात्रों मे कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है।
9. अधिक धन प्राप्ति की लालसा छात्रों में कुण्ठा की भावना उत्पन्न करती है।
10. आर्थिक कठिनाइयों के कारण मेरे अध्ययन में रूकावट आती है।
11. आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण मुझे मेरा भविष्य अन्धकारमय लगता है।
12. धनाभाव के कारण मैं आत्मविश्वास मे कमी महसूस करता हूँ।

3) व्यावसायिक क्षेत्र :–

1. इच्छित व्यवसाय में चयन नहीं होने से मैं दुविधा में रहता हूँ।
2. कुशल मार्गदर्शन के अभाव में सही व्यवसाय चयन में असफल हो जाता हूँ।
3. उचित मार्गदर्शन नही मिलने से मै स्वयं तनाव में रहता हूँ।
4. छात्रों में व्यवसाय के प्रति पारिवारिक दबाव के कारण तनाव रहता है।
5. अरूचिकर व्यवसाय में चयन होने के कारण मैं स्वयं को तनाव ग्रस्त महसूस करता हूँ।
6. रूचिपूर्ण व्यवसाय घर से अत्यधिक दूर होने के कारण भी मैं तनाव में रहता हूँ।
7. उचित व्यवसाय के प्रति अच्छे परामर्शकर्ताओं के अभाव में छात्र कुंठाग्रस्त हो जातें है।
8. प्रतिस्पर्द्धा के युग में इच्छित व्यवसाय मिलना मुश्किल है।
9. विशेषज्ञों की कमी से उचित व्यावसायिक प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है।
10. उच्च एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों में व्यवसाय के प्रति तनाव होता है।
11. इच्छित व्यवसाय न मिलने से मेरा अन्तर्मन व्यथित हो जाता है।
12. स्व–व्यवसाय के प्रति मैं मानसिक व सांवेगिक अस्थिरता महसूस करता हूँ।

4) पारिवारिक क्षेत्र :–

1. घर के एकाकीपन से मेंरा व्यवहार चिड़चिड़ा हो जाता है।
2. लोगों के बीच होते हुए भी मैं स्वयं को अकेला महसूस करता हूँ।
3. मता–पिता की व्यस्तता के कारण मुझमें सामाजिकता का अभाव पाया जाता है।
4. माता –पिता की व्यस्तम दिनचर्या के कारण मै स्वयं को उपेक्षित महसूस करता हूँ।
5. माता –पिता के प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार के अभाव में मैं क्रोधी हो जाता हूँ।
6. माता–पिता की सहनशीलता के अभाव में मै स्वयं को भावनात्मक रूप से कमजोर हो जाता हूँ।
7. पारिवारिक कलह के कारण मै स्वयं चिंताग्रस्त हो जाता हूँ।
8. माता–पिता के रोजमर्रा झगड़ों की वजह से मेरी पढ़ाई बाधित होती है।
9. माता–पिता की उच्च महत्वकांक्षा होने से मैं सदा तनाव मे रहता हूँ।
10. अशिक्षित माता–पिता होने से मैं स्वयं को दूसरो के सामने हीन महसूस करता हूँ।
11. मैं सोचता हूँ कि मै परिवार के लिए बोझ हूँ।
12. मुझे दुःख होता है जब छोटे–भाई बहिन मुझसे दुर्व्यवहार करते है।

5) मनोवैज्ञानिक क्षेत्र :–

1. कोचिंग संस्थान के परीक्षणों में उच्च उपलब्धि न मिलने से मैं नकारात्मक हो जाता हूँ।
2. कक्षा–कक्ष में छात्रों द्वारा रेंगिंग लेने से नकारात्मक प्रवृति उत्पन्न होती है।
3. शिक्षण कार्य की अधिकता के कारण मैं दबाव व थकान महसूस करता हूँ।
4. अध्ययन की चिंता से मुझे रात को नींद नहीं आती है।
5. कभी–कभी भावात्मक रूप से दूसरों के बहकावें मे आकर मैं अश्लील कार्यो में लीन हो जाता हूँ।
6. मेरे दोस्त अक्सर मुझे अश्लील संदेश करते है।
7. पूर्ण तैयारी होने पर भी कम अंक प्राप्त होने से मैं चिंतित हो जाता हूँ।
8. स्व–निर्णय लेने मे मुझे कठिनाई का अनुभव होता है।
9. कभी–कभी मित्रगणों के व्यवहार से काफी परेशान रहता हूँ।
10. मैं स्वयं को दूसरे छात्रों के साथ समायोजित नहीं कर पाता हूँ।
11. सहपाठियों की उच्च उपलब्धि को देखकर मैं हताश हो उठता हूँ।
12. लडकियों द्वारा सलाह मांगने पर भी मै सलाह देने में कतराता हूँ।

6) शैक्षिक क्षेत्र :–

1. कोचिंग संस्थानों में प्रतिस्पर्द्धा के कारण मुझ पर अध्ययन का दबाव होता है।
2. पाठ्यक्रम पूरा न होने पर स्वयं को कमजोर महसूस करता हूँ।
3. केरियर की प्रतिस्पर्द्धा के कारण छात्र एक दूसरे से ईर्ष्या करते है।
4. कोचिंग संस्थान में विषयवस्तु के अनुरूप पढाई नहीं होने से मैं असफल हो जाता हूँ।
5. निरन्तर असफलता से मुझे अपनी क्षमता पर अविश्वास होने लगता है।
6. भीड़ भरी कक्षा में मैं जटिल समस्याओं को पूछने मे हिचकिचाता हूँ।
7. शिक्षक– शिक्षार्थी की उचित अन्तः क्रिया के अभाव में पढ़ाई में बाधा उत्पन्न होती है।
8. शिक्षक –शिक्षार्थी की कठोर व दण्डात्मक अन्तःक्रिया से छात्रों में भय व उत्तेजना बढ जाती है।
9. प्रतिभाशाली बालको से मित्रता करने में संकोच करता हूँ।
10. साप्ताहिक विषय परीक्षणों से मुझपर मानसिक दबाव होता है।
11. जब मै अपने प्रयासों मे विफल होता हूँ तब मुझे स्वयं से घृणा होती है।
12. असफल हो जाने पर मै स्वयं को मार डालने की सोचता हूँ।

– द्वितीय प्रारूप

सेवामें,

श्रीमान् .....

.....

विषयः– शोधकार्य हेतु ''**दबाव प्रमापनी**'' के निर्माण के लिए प्रश्नों का निर्धारण हेतु।

मान्यवर/महोदय,

उपरोक्त विषय में आपसे निवेदन है कि मैं अपने शोधकार्य के लिए एक ''**दबाव प्रमापनी**'' का निर्माण करना चाहती हूँ। दबाव प्रमापनी निर्माण हेतु क्षेत्रों का चयन विशेषज्ञों के उचित सुझाव द्वारा किया जा चुका है। विशेषज्ञों के सुझावानुसार मैने दबाव प्रमापनी हेतु निम्न प्रश्नो का निर्माण किया है। आप इस विषय में निष्णात है। अतः आपसे निवेदन है कि मेरे द्वारा चयनित सम्भावित प्रश्नों से दबाव का मापन हो सकेगा या नही इसके निर्णय में सहयोग प्रदान करे। आप चाहे तो इन निर्मित प्रश्नों में सुधार कर सकते है, कुछ प्रश्नों को हटा सकते है और कुछ नए प्रश्नों को भी समाविष्ट कर सकते है। आप द्वारा दिए गए सुझावों से मेरा शोधकार्य अधिक प्रमाणित हो सकेगा ऐसी आशा है।

दबाव प्रमापनी को मापने के लिए निर्धारित क्षेत्र निम्नानुसार है–

1. सामाजिक क्षेत्र
2. आर्थिक क्षेत्र
3. व्यावसायिक क्षेत्र
4. पारिवारिक क्षेत्र,
5. मनोवैज्ञानिक क्षेत्र
6. शैक्षिक क्षेत्र

शोध विषय :– ***''आर.पी.एस.सी की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढते दबाव व समायोजन का अध्ययन''***

आशा है कि आप मुझे पूर्ण सहयोग कर अनुग्रहित करेंगे। असुविधा के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

सधन्यवाद!

पर्यवेक्षिका
डॉ. सपना जोशी
(रीडर)
जवाहरलाल नेहरू स्नाकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय सकतपुरा, उदयपुर

भवदीया
प्रियंका शर्मा
शोधकर्त्री
M.A. M.Ed.,

दबाव प्रमापनी

7) सामाजिक क्षेत्र :–

13. सामाजिक रिति–रिवाजों के निर्वहन हेतु मुझ पर दबाव बनाया जाता है।
14. सामाजिक पिछडेपन के कारण मैं हीनभावना से ग्रसित हो जाता हूँ।
15. उचित व्यवसाय का चयन उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा का द्योतक है।
16. शादी–विवाह इत्यादि सामाजिक उत्सवों में जाना अच्छा लगता है।
17. सामाजिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा आलोचना करने पर स्वयं को तनाव में पाता हूँ।
18. समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ मेलजोल रखना पसंद करता हूँ।
19. सामाजिक प्रतिष्ठा पाने हेतु स्वयं पर उच्च शिक्षा प्राप्ति का दबाव महसूस करता हूँ।
20. मैं अपने मित्रों व रिश्तेदारों से दूर भागता हूँ।

8) आर्थिक क्षेत्र :–

13. आर्थिक स्थिति कमजोर होने से मैं उच्च शैक्षणिक शुल्क नहीं दे पाता हूँ।
14. धनाभाव में प्रतिभा दब कर रह जाती है।
15. कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण माता –पिता मेंरे स्वप्नों को साकार नहीं कर पातें है।
16. उच्च शिक्षा प्राप्ति के बाद भी नौकरी नहीं मिलने से स्वयं को कुण्ठित महसूस करता हँ।
17. भौतिक सुख–सुविधाओं की पूर्ति के अभाव में स्वयं तनावग्रस्त महसूस करता हूँ।
18. दिनोंदिन बढ़ती बेरोजगारी से छात्रों मे कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है।
19. आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण मुझे मेरा भविष्य अन्धकारमय लगता है।
20. धनाभाव के कारण मैं आत्मविश्वास मे कमी महसूस करता हूँ।

9) व्यावसायिक क्षेत्र :–

13. इच्छित व्यवसाय में चयन नहीं होने से मैं दुविधा में रहता हूँ।
14. कुशल मार्गदर्शन के अभाव में सही व्यवसाय चयन में असफल हो जाता हूँ।
15. उचित मार्गदर्शन नही मिलने से मै स्वयं तनाव में रहता हूँ।
16. छात्रों में व्यवसाय के प्रति पारिवारिक दबाव के कारण तनाव रहता है।
17. अरूचिकर व्यवसाय में चयन होने के कारण मैं स्वयं को तनाव ग्रस्त महसूस करता हूँ।
18. रूचिपूर्ण व्यवसाय घर से अत्यधिक दूर होने के कारण भी मैं तनाव में रहता हूँ।
19. उचित व्यवसाय के प्रति अच्छे परामर्शकर्ताओं के अभाव में छात्र कुंठाग्रस्त हो जातें है।
20. इच्छित व्यवसाय न मिलने से मेरा अन्तर्मन व्यथित हो जाता है।

10) पारिवारिक क्षेत्र :–

13. घर के एकाकीपन से मेंरा व्यवहार चिड़चिड़ा हो जाता है।
14. लोगों के बीच होते हुए भी मैं स्वयं को अकेला महसूस करता हूँ।
15. माता–पिता की व्यस्तम दिनचर्या के कारण मै स्वयं को उपेक्षित महसूस करता हूँ।
16. माता–पिता के प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार के अभाव में मैं क्रोधी हो जाता हूँ।
17. पारिवारिक कलह के कारण मै स्वयं चिंताग्रस्त हो जाता हूँ।
18. माता–पिता की उच्च महत्वकांक्षा होने से मैं सदा तनाव मे रहता हूँ।
19. अशिक्षित माता–पिता होने से मैं स्वयं को दूसरो के सामने हीन महसूस करता हूँ।
20. मुझे दुःख होता है जब छोटे–भाई बहिन मुझसे दुर्व्यवहार करते है।

11) मनोवैज्ञानिक क्षेत्र :–

13. कोचिंग संस्थान के परीक्षणों में उच्च उपलब्धि न मिलने से मैं नकारात्मक हो जाता हूँ।
14. शिक्षण कार्य की अधिकता के कारण मैं दबाव व थकान महसूस करता हूँ।
15. अध्ययन की चिंता से मुझे रात को नींद नहीं आती है।
16. मेरे दोस्त अक्सर मुझे अश्लील संदेश करते है।
17. पूर्ण तैयारी होने पर भी कम अंक प्राप्त होने से मैं चिंतित हो जाता हूँ।
18. स्व–निर्णय लेने मे मुझे कठिनाई का अनुभव होता है।
19. सहपाठियों की उच्च उपलब्धि को देखकर मैं हताश हो उठता हूँ।
20. लडकियों द्वारा सलाह मांगने पर भी मै सलाह देने में कतराता हूँ।

12) शैक्षिक क्षेत्र :–

1. कोचिंग संस्थानों में प्रतिस्पर्द्धा के कारण मुझ पर अध्ययन का दबाव होता है।
2. पाठ्यक्रम पूरा न होने पर स्वयं को कमजोर महसूस करता हूँ।
3. केरियर की प्रतिस्पर्द्धा के कारण छात्र एक दूसरे से ईर्ष्या करते है।
4. निरन्तर असफलता से मुझे अपनी क्षमता पर अविश्वास होने लगता है।
5. भीड़ भरी कक्षा में मैं जटिल समस्याओं को पूछने मे हिचकिचाता हूँ।
6. प्रतिभाशाली बालकों से मित्रता करने में संकोच करता हूँ।
7. साप्ताहिक विषय परीक्षणों से मुझपर मानसिक दबाव होता है।
8. असफल हो जाने पर मै स्वय को मार डालने की सोचता हूँ।

– अंतिम प्रारूप

दबाव प्रमापनी

नाम.....	**आयु**.....
कक्षा.....	**ग्रामीण /शहरी**.....
जाति.....	**व्यावसायिक पाठ्यक्रम**.....
अध्यापक प्रतियोगी परीक्षा – I / II / III	**पिता का नाम**.....
व्यवसाय.....	**राज्य**.....

शोधकर्त्री ने इस प्रश्नावली का प्रयोग केवल आर.पी.एस.सी. की परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव को ज्ञात करने के लिए किया है।

इसीलिए आप इस प्रश्नावली का जवाब निःसंकोच होकर देवें।

निर्देश – इस प्रपत्र में आपसे कुछ प्रश्न पुछे गए है, प्रत्येक प्रश्न के साथ कुछ उत्तर भी दिये है। इनमें से किसी एक पर सही का निशान लगाना है।

1. सभी प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़िये तथा दिए गए उत्तरों में से आपको सबसे अधिक पसंद आए उसके सामने सही का निशान लगाए।
2. सभी प्रश्नों को करना अनिवार्य है तथा इसमें कोई नकारात्मक अंकन नहीं है।
3 निम्नलिखित उत्तरों में से किसी एक पर सही का निशान लगाऐ –

(अ) सहमत (ब) पूर्णतया सहमत (स) अनिश्चित (द) असहमत (य) पूर्णतया असहमत

पर्यवेक्षिका
डॉ. सपना जोशी
(रीडर)
जवाहरलाल नेहरू स्नाकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय सकतपुरा, उदयपुर

भवदीया
प्रियंका शर्मा
शोधकर्त्री
M.A. M.Ed.,

दबाव प्रमापनी

क्र.सं.	कथन	अ	ब	स	द	य
1.	सामाजिक रिति–रिवाजों के निर्वहन हेतु मुझ पर समाज द्वारा दबाव बनाया जाता है					
2.	सामाजिक पिछड़ेपन के कारण मैं हीनभावना से ग्रसित हो जाता हूँ।					
3.	मैं उचित व्यवसाय के अभाव में समाज में असमायोजित महसूस करता हूँ।					
4.	शादी–विवाह इत्यादि सामाजिक उत्सवों में जाना अच्छा लगता है।					
5.	समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा आलोचना करने पर स्वयं को तनाव में पाता हूँ।					
6.	समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ मेलजोल रखना पसंद करता हूँ।					
7.	सामाजिक प्रतिष्ठा पाने हेतु स्वयं पर उच्च शिक्षा प्राप्ति का दबाव महसूस करता हूँ।					
8.	बार–बार असफलता के कारण मैं अपने मित्रों व रिश्तेदारों से दूर भागता हूँ।					
9.	आर्थिक स्थिति कमजोर होने से मैं उच्च शैक्षणिक शुल्क नहीं दे पाता हूँ।					
10.	मेरे जीवन में धनाभाव में प्रतिभा दब कर रह जाती है।					
11.	कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण माता –पिता मेंरे स्वप्नों को साकार नहीं कर पातें है।					
12.	उच्च शिक्षा प्राप्ति के बाद भी नौकरी नहीं मिलने से स्वयं को कुण्ठित महसूस करता हँ।					

क्र.सं.	कथन	अ	ब	स	द	य
13.	आवश्यक संसाधनों के अभाव में स्वयं को तनावग्रस्त महसूस करता हूँ।					
14.	दिनोंदिन बढती बेरोजगारी से मैं कुण्ठाग्रस्त हो जाता हूँ।					
15.	आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण मुझे मेरा भविष्य अन्धकारमय लगता है।					
16.	धनाभाव के कारण मैं अपने जीवन में आत्मविश्वास की कमी महसूस करता हूँ।					
17.	इच्छित व्यवसाय में चयन नहीं होने से मैं दुविधा में रहता हूँ।					
18.	कुशल मार्गदर्शन के अभाव में सही व्यवसाय चयन में असफल हो जाता हूँ।					
19.	उचित मार्गदर्शन नही मिलने से मैं स्वयं तनाव में रहता हूँ।					
20.	मैं व्यवसाय के प्रति पारिवारिक दबाव के कारण तनाव रहता हूँ।					
21.	अरूचिकर व्यवसाय में चयन होने के कारण मैं स्वयं को तनाव ग्रस्त महसूस करता हूँ।					
22.	रूचिपूर्ण व्यवसाय घर से अत्यधिक दूर होने के कारण भी मैं तनाव में रहता हूँ।					
23.	उचित व्यवसाय के प्रति अच्छे परामर्शकर्ताओं के अभाव में विद्यार्थी कुंठाग्रस्त हो जातें है।					
24.	इच्छित व्यवसाय न मिलने से मेरा अन्तर्मन व्यथित हो जाता है।					
25.	घर के अकेलेपन से मेंरा व्यवहार चिड़चिड़ा हो जाता है।					

क्र.सं.	कथन	अ	ब	स	द	य
26.	व्यक्तियों के बीच होते हुए भी मैं स्वयं को अकेला महसूस करता हूँ।					
27.	माता–पिता की व्यस्ततम दिनचर्या के कारण मै स्वयं को उपेक्षित महसूस करता हूँ।					
28.	माता–पिता के प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार के अभाव में मैं क्रोधी हो जाता हूँ।					
29.	पारिवारिक कलह के कारण मैं स्वयं चिंताग्रस्त हो जाता हूँ।					
30.	माता–पिता की उच्च महत्वकांक्षा होने से मैं सदा तनाव/दबाव में रहता हूँ।					
31.	अशिक्षित माता–पिता होने से मैं स्वयं को दूसरो के सामने हीन महसूस करता हूँ।					
32.	मुझे दुख होता है जब छोटे– भाई बहिन मुझसे दुर्व्यवहार करते है।					
33.	कोचिंग संस्थान के परीक्षणों में उच्च उपलब्धि न मिलने पर मैं नकारात्मक हो जाता हूँ।					
34.	शिक्षण कार्य की अधिकता के कारण मैं दबाव व थकान महसूस करता हूँ।					
35.	अध्ययन की चिंता से मुझे रात को नींद नहीं आती है।					
36.	मेरे दोस्त अक्सर मुझे अश्लील संदेश भेजकर मुझे भावनात्मक रूप से विचलित करते है।					
37.	पूर्ण तैयारी होने पर भी कम अंक प्राप्त होने से मैं चिंतित हो जाता हूँ।					
38.	स्वनिर्णय लेने मे मुझे कठिनाई का अनुभव होता है।					

क्र.सं.	कथन	अ	ब	स	द	य
39.	सहपाठियों की उच्च उपलब्धि को देखकर मैं हताश हो उठता हूँ।					
40.	मेरे पिछड़ने के भय से मैं अपने मित्रों द्वारा सलाह मांगने पर भी मै सलाह देने में कतराता हूँ।					
41.	कोचिंग संस्थानों में नकारात्मक प्रतिस्पर्द्धा के कारण मुझ पर अध्ययन का दबाव होता है।					
42.	.पाठ्यक्रम पूरा न होने पर स्वयं को कमजोर महसूस करता हूँ।					
43.	केरियर की प्रतिस्पर्द्धा के कारण मेरे मित्र मुझसे ईर्ष्या करते है।					
44.	निरन्तर असफलता से मुझे अपनी क्षमता पर अविश्वास होने लगता है।					
45.	भीड़ भरी कक्षा में मैं जटिल समस्याओं को पूछने मे हिचकिचाता हूँ।					
46.	प्रतिभाशाली बालको से मित्रता करने में संकोच करता हूँ।					
47.	साप्ताहिक विषय परीक्षणों से मुझ पर मानसिक दबाव होता है।					
48.	असफल हो जाने पर मै स्वय को मार डालने की सोचता हूँ।					

साक्षात्कार अनुसूची

(शिक्षकों हेतु)

नाम.....व्यवसाय..... पता.....

1. कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में दबाव तीव्रगति से बढ़ रहा है। इसके मुख्य कारण क्या है?

उत्तर– .....

कोटा में ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थियों में दबाव ज्यादा पाये जाने के क्या कारण है?

उत्तर– .....

2. क्या विद्यार्थियों में अति महत्वाकांक्षा के कारण दबाव उत्पन्न हो रहा है?

उत्तर– .....

3. दबाव विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करता है?

उत्तर– .....

4. दबाव विद्यार्थियों के समायोजन को किस प्रकार प्रभावित करता है।

उत्तर– .....

5. आर.पी.एस.सी की कोचिंग लेने वाले छात्रों व छात्राओं में से दबाव किसमें ज्यादा पाया जाता है?

उत्तर– .....

6. आर.पी.एस.सी की कोचिंग लेने वाले छात्रों व छात्राओं में से समायोजन स्तर किसमें ज्यादा पाया जाता है?

उत्तर– .....

7. कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में दबाव की समस्या समाधान हेतु आपके क्या सुझाव है?

उत्तर– .....

साक्षात्कार अनुसूची

(निदेशकों हेतु)

नाम.....व्यवसाय..... पता.....

प्र.1. आपकी संस्था मे कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों में दबाव ज्यादा बढ़ रहा है। इसके क्या कारण है?

उत्तर– .....

प्र.2. क्या दबाव विद्यार्थियों की शैक्षणिक परीक्षा परिणाम को प्रभावित करता है?

उत्तर– .....

प्र.3. क्या दबाव विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करता है?

उत्तर– .....

प्र.4 क्या दबाव का कोचिंग विद्यार्थियों की महत्वाकांक्षा पर प्रभाव पड़ता है?

उत्तर– .....

प्र.5 क्या अध्यापक विद्यार्थियों के दबाव व समायोजन सम्बन्धी समस्याओं को आपके साथ शेयर करते है?

उत्तर– .....

प्र.6 क्या आप दबाव ग्रस्त छात्रों की समस्याओं का समाधान करते है? और कैसे?

उत्तर– .....

प्र.7 कोचिंग करने वाले वाले दबावग्रस्त विद्यार्थियों हेतु आपके क्या सुझाव है?

उत्तर– .....

प्र.8 क्या आप अपने संस्था के विद्यार्थियों की पढ़ाई को लेकर तनाव में रहते है?

उत्तर– .....

निर्देश

- जब तक आपसे कहा न जाये, तब तक कोई पृष्ठ न पलटें।
- इस पुस्तिका पर कुछ न लिखें तथा इसका उपयोग सावधानी से करें। जिससे इसका पुनः उपयोग किया जा सके।
- इस पुस्तिका में कुछ कथन आपके व्यक्तित्व से सम्बन्धित हैं तथा आपको अपने उत्तरों को अलग उत्तर-सूची पर अंकित करना है।
- उत्तर-सूची में आपको प्रत्येक कथन की संख्या के सामने दो खाने हैं, आपकी ओर से बायीं तरफ वाला खाना हाँ प्रत्युत्तर का तथा दायीं तरफ वाला खाना नहीं प्रत्युत्तर का संकेत-सूचक है। इन दोनों खानों में से आपको किसी एक, जो कि आपके लिए उपयुक्त होता हो, पर एक गोला खींचना है। यह ध्यान रखें कि कोई भी प्रश्न गलत या सही नहीं है। जो आपके सम्बन्ध में सही है केवल उसी पर गोल घेरा खींचना है। यदि आपका उत्तर हाँ है तो बायीं ओर वाले खाने में (O) तथा यदि आपका उत्तर नहीं है तो दायीं ओर वाले खाने में (O) गोल घेरा खींचिए।
- आपके प्रत्युत्तरों को पूर्ण रूप से गुप्त रखा जायेगा इसलिए बिना संकोच के उत्तर दीजिए।
- यद्यपि **समय की कोई सीमा** नहीं है, फिर भी आप कोशिश करें जितना शीघ्र हो सके काम समाप्त करें।

Scanned by CamScanner

क्र.सं.		कथन
1	क	क्या कभी आपको घर जाने की प्रबल इच्छा हुई है?
2	घ	क्या आप प्रायः दिवा-स्वप्न देखते हैं ?
3	च	क्या आपको ऐसा लगता है कि आपके बहुत से दोस्तों का बहुत से विषयों में आपसे कहीं अधिक अच्छा शिक्षा का आधार है।
4	ख	बाधा पहुँचाने लायक कोई हल्ला नहीं होते हुए भी क्या आपको कभी-कभी नींद आने में कठिनाई होती है?
5	ग	किसी सार्वजनिक स्थान पर क्या आप अपने दोस्तों से मिलने से भागते हैं?
6	क	क्या आपको ऐसा लगता है कि आपके घर में सच्चे प्रेम और स्नेह की कमी है?
7	ख	दिन के अन्त में क्या आपको बहुत थकावट मालूम होती है?
8	घ	क्या आप प्रायः कठिनाई का अनुभव करते हैं?
9	च	क्या आप अपनी कमजोर स्मृति के कारण चिन्तित रहते हैं?
10	क	क्या रुपयों की कमी के कारण आपका घर आपके लिए दुःखमय हो गया है?
11	घ	क्या आप आसानी से हतोत्साहित हो जाते हैं?
12	ग	क्या आप लजालु प्रकृति के हैं?
13	घ	क्या आप वाद-विवाद में उत्तेजित हो जाते हैं?
14	च	क्या आपकी दिलचस्पी विद्वानों से अधिक सिनेमा अभिनेताओं में है?
15	क	क्या आपके माता-पिता ने, जिन साथियों के साथ आप घूमते रहते हैं, उनके साथ रहने के लिए विरोध किया है?
16	ख	क्या आप कभी बड़े चीड़-फाड़ (ऑपरेशन) से गुजरे हैं?
17	क	क्या आपके माता या पिता बहुत जल्दी चिड़चिड़ा जाते हैं?
18	ग	क्या आप किसी सभा में वक्ता से सामान्यतः प्रश्न पूछते हैं?
19	घ	क्या आप अपने को अधीर (nervous) व्यक्ति मानते हैं?
20	क	क्या आप अपने भाईयों या बहनों से प्रायः झगड़ते हैं?
21	ख	क्या आपको प्रायः चक्कर आता है?

Scanned by CamScanner

क्र.सं.		कथन
22	घ	क्या आपको अपने विरुद्ध कही गई मामूली सी बात भी खलती है?
23	च	पढ़ी हुई चीज क्या आप आसानी से भूल जाते हैं?
24	ख	क्या कभी-कभी देखने में आपकी आँखों पर जोर पड़ता है?
25	ग	क्या आपने अपने आप किसी सामाजिक जलसे (कार्यक्रम) का आयोजन किया है?
26	घ	क्या अपने मस्तिक में उठते हुए उलटे-पुलटे विचारों के कारण आप सो नहीं सकते हैं?
27	क	क्या आपको ऐसा लगता है कि आपके माता-पिता आपके प्रति जरूरत से ज्यादा कठोर हैं?
28	ख	सुबह उठने पर क्या आप थके हुए महसूस करते हैं?
29	घ	अपमानजनक अनुभव से क्या आप देर तक चिन्तित रहते हैं?
30	च	भविष्य में आपका क्या पेशा होगा, इसके लिए क्या आप बहुत चिन्तित रहते हैं?
31	घ	क्या आपको अपनी कठिनाइयों को अपने शिक्षक के सामने रखने में भय होता है?
32	ग	क्या आपको जनता के बीच बोलने में कठिनाई होती है?
33	घ	क्या आप मामूली सी बात पर रो पड़ते हैं?
34	क	क्या आपके मन में अपने परिवार के सदस्यों के प्रति प्रेम और घृणा के विरोधाभासी भाव पैदा होते हैं?
35	ख	क्या आपको प्रायः गले (throat) में तकलीफ होती है?
36	ख	क्या आपको प्रायः मतली या उल्टी (कै) की शिकायत होती है?
37	च	क्या आपको ऐसा लगता है कि आपके शिक्षक अन्य विद्यार्थियों का पक्ष लेते हैं?
38	क	क्या आपके परिवार के किसी वरिष्ठ व्यक्ति ने आपके चेहरे की आलोचना कर आपको दुःखी किया है?
39	ग	क्या आप लोगों के बीच रहते हुए भी अकेलेपन का अनुभव करते हैं?
40	घ	परीक्षाओं के कम अंक पाने के कारण क्या आप खिन्न रहते हैं?
41	च	क्या आपको ऐसा लगता है कि आपके दोस्तों का परीक्षाफल इसलिये अच्छा होता है क्योंकि उन्हें अच्छी सुविधाएँ प्राप्त हैं?
42	ख	क्या आप बचपन में काफी बीमार रहे थे?

Scanned by CamScanner

क्र.सं.		कथन
43	घ	जिस खुशी से दूसरे खुश हों उससे कभी आप ईर्ष्या करते हैं?
44	च	क्या आप परीक्षा देने से डरते हैं ?
45	क	क्या आप अपने घर के वर्तमान वातावरण से खुश और सन्तुष्ट हैं ?
46	ख	क्या आपको कभी-कभी तीव्र सिर दर्द होता है ?
47	घ	किसी ऊँची जगह पर चढ़ जाने पर क्या आपको कभी ऐसी आशंका होती है कि कहीं कूद न जायें ?
48	च	कक्षा में पढ़ाए गए विषयों को ग्रहण करने में क्या आपको कठिनाई होती है?
49	क	क्या आपको घर से बहुत कम सहायता मिलती है ?
50	ख	बीमारी के कारण क्या आप प्रायः कॉलेज से अनुपस्थित रहते हैं ?
51	ग	कक्षा में बोलने के डर से क्या आप कभी कक्षा में प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सके हैं?
52	घ	क्या आप आसानी से क्रोधित हो जाते हैं?
53	च	क्या पढ़ाई में मन लगाने में आपको कठिनाई होती है?
54	क	क्या आप में ऐसी हीन भावना होती है कि आपके दोस्तों के घर के वातावरण आपसे अधिक सुखद हैं?
55	ग	क्या आप सड़क इसलिए पार कर जाते हैं कि किसी अमुक व्यक्ति से आपकी मुलाकात न हो जाये?
56	घ	हीन भावना के कारण क्या आप दु:खी रहते हैं?
57	च	कक्षा में टिप्पणी लिखने में क्या आपको कठिनाई होती है?
58	क	क्या आप समझते हैं कि आपके माता-पिता पुराने विचारों के हैं?
59	ख	क्या कभी-कभी आप चर्म रोग से पीड़ित रहते हैं?
60	घ	आने वाली सम्भावित मुसीबतों से क्या आप चिन्तित रहते हैं?
61	च	क्या आप परीक्षा की तैयारी करना जानते हैं?
62	ख	क्या आप शारीरिक अस्वस्थता के कारण हमेशा चिन्तित रहते हैं?
63	ग	क्या आप आसानी से दोस्त बना लेते हैं?

Scanned by CamScanner

क्र.सं.		कथन
64	घ	क्या आप इस बात से परेशान रहते हैं कि सड़क पर लोग आप ही को देख रहे हैं?
65	च	क्या रात में काफी सो लेने के बावजूद आपको कक्षा में नींद आती है?
66	क	क्या आपको ऐसा लगता है कि आप अपने माँ बाप के लिए बोझ हैं?
67	ख	क्या आपका स्वास्थ्य हमेशा आपको परेशान करता है?
68	घ	क्या आप आलोचना से बहुत अधिक विचलित हो जाते हैं?
69	च	क्या आप कभी-कभी कॉलेज छोड़ देने की सोचते हैं?
70	क	क्या आप अपने भाइयों और बहनों के व्यवहार से सन्तुष्ट हैं?
71	ख	छूत-रोग लग जाने का डर क्या आपको प्रायः बना रहता है?
72	ग	जब कोई शिक्षक आपके यहाँ अचानक आ जाते हैं तो क्या आप घबड़ा जाते हैं?
73	च	जो कुछ आप पढ़ते हैं उसकी उपयोगिता में क्या आपको सन्देह रहता है?
74	ग	किसी अपरिचित से बात शुरू करने में क्या आपको कठिनाई होती है?
75	घ	क्या आप आसानी से घबड़ा जाते हैं?
76	ग	क्या आप त्यौहार अथवा अन्य मनोरंजक आयोजनों में सम्मिलित होना चाहते हैं?
77	ग	जब किसी कमरे में कुछ लोग बैठे बातें कर रहे हों, तो आपको क्या उस कमरे में जाने में संकोच होता है?
78	घ	बिना किसी प्रकट कारण के क्या आपसी मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है?
79	च	क्या आपको अपने विचारों को लिखकर व्यक्त करने में कठिनाई होती है?
80	ग	क्या आप प्रायः अकेलापन महसूस करते हैं?
81	घ	जब आप अकेले रहते हैं तो क्या अंधेरे में डर जाते हैं?
82	च	क्या आप ऐसा सोचते हैं कि आपको अपने शिक्षक से प्रोत्साहन मिलता है?
83	ग	दूसरे की भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली बात कहने में क्या आप सावधान रहते हैं?
84	घ	क्या आप कार्य उपलब्धि की अपेक्षा प्रशंसा से अधिक प्रसन्न होते हैं?
85	ग	अपने किसी महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति के लिए क्या आप दूसरों की भावनाओं की अवहेलना करते हैं?

Scanned by CamScanner

क्र.सं.		कथन
86	च	क्या आप ऐसा सोचते हैं कि आपके शिक्षकों को आपसे दिलचस्पी नहीं है?
87	घ	क्या कभी-कभी लोग आपसे लाभ उठा लेते हैं?
88	च	क्या आप इसलिए चिन्तित रहते हैं कि आपके शिक्षक आपमें विद्यमान योग्यताओं एवं क्षमताओं का कम अनुमान लगाते हैं?
89	ग	क्या आप किसी निर्जीव समूह में अगुआ बनकर उसमें जागृति ला देना चाहते हैं?
90	घ	क्या आपका दिमाग कभी-कभी इतना भ्रमित हो जाता है कि आप कर रहे काम का सिलसिला भूल जाते हैं?
91	ग	क्या आप समूह के साथ काम करना पसन्द करते हैं?
92	घ	बिना किसी कारण के क्या आपको कभी सुख और कभी दु:ख के भाव आते रहते हैं?
93	च	क्या आप ऐसा सोचते हैं कि आपने ऐसे पाठ्यक्रम का चुनाव किया है जो आपके लिए सबसे अधिक उपयोगी होगा?
94	च	कक्षा में जो प्रगति होती है उसके अनुकूल कार्य करने में क्या आपको कठिनाई होती है?
95	घ	क्या आप ऐसा विचार करते हैं कि पढ़ाई समाप्त करने के बाद आपको अपनी रुचि के अनुसार कोई काम नहीं मिलेगा?
96	घ	क्या आपको ऐसा लगता है कि आपका इस संसार में आना बेकार है?
97	ग	क्या कॉलेज में आपके ऐसे बहुत से मित्र हैं जिन पर आपको विश्वास हो?
98	घ	क्या आप कभी अनजाने में कुछ कार्य कर डालते हैं?
99	घ	क्या आप अपने सहपाठियों के साथ छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करते हैं?
100	क	घर में शान्ति रखने के लिए क्या आपको घर से बाहर रहना पड़ता है?
101	घ	जब कोई शिक्षक किसी दूसरे छात्र की प्रशंसा करते हैं तो क्या आप दु:खी नहीं होते हैं?
102	घ	क्या आप विचारों में इतना अधिक खोए रहते हैं कि आप यह नहीं देखते कि आसपास

© 2012. All rights reserved, Reproduction in any form is a violation of Copyright Act.
Reusable Booklet of Adjustment Inventory for College Students (AICS) Hindi Version.

Scanned by CamScanner

T. M. Regd. No. 564838
Copyright Regd. No. © A-73256/2005 Dt. 13.5.05

A. K. P. Sinha *(Raipur)*
R. P. Singh *(Patna)*

ANSWER SHEET of AICS-SS

(Eng./Hindi Version)

Please fill up the following informations : Date
कृपया निम्न सूचनायें भरिए– *दिनांक* ☐☐☐☐☐☐☐☐

Name (नाम) _____

Father Name (पिता का नाम) _____

Age (आयु) _____ **Sex (लिंग) : Male (पुरुष)** ☐ **Female (स्त्री)** ☐

Father Occupation (पिता का व्यवसाय) _____

Education (शिक्षा) _____

Monthly Income (मासिक आय) _____

SCORING TABLE
(फलांकन तालिका)

Adjustment Area समायोजन क्षेत्र	a क	b ख	c ग	d घ	e च	Total योग	Interpretation विवेचना
Score प्राप्तांक							

Estd. 1971 www.npcindia.com ☎:(0562) 2464926
NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION
4/230, KACHERI GHAT, AGRA-282 004 (INDIA)

Scanned by CamScanner

Check •

Q.No. प्र. सं.	Yes हाँ	No. नहीं	Q.No. प्र. सं.	Yes हाँ	No. नहीं	Q.No. प्र. सं.	Yes हाँ	No. नहीं	Q.No. प्र. सं.	Yes हाँ	No. नहीं
1	☐	☐	26	☐	☐	51	☐	☐	77	☐	☐
2	☐	☐	27	☐	☐	52	☐	☐	78	☐	☐
3	☐	☐	28	☐	☐	53	☐	☐	79	☐	☐
4	☐	☐	29	☐	☐	54	☐	☐	80	☐	☐
5	☐	☐	30	☐	☐	55	☐	☐	81	☐	☐
6	☐	☐	31	☐	☐	56	☐	☐	82	☐	☐
7	☐	☐	32	☐	☐	57	☐	☐	83	☐	☐
8	☐	☐	33	☐	☐	58	☐	☐	84	☐	☐
9	☐	☐	34	☐	☐	59	☐	☐	85	☐	☐
10	☐	☐	35	☐	☐	60	☐	☐	86	☐	☐
11	☐	☐	36	☐	☐	61	☐	☐	87	☐	☐
12	☐	☐	37	☐	☐	62	☐	☐	88	☐	☐
13	☐	☐	38	☐	☐	63	☐	☐	89	☐	☐
14	☐	☐	39	☐	☐	64	☐	☐	90	☐	☐
15	☐	☐	40	☐	☐	65	☐	☐	91	☐	☐
16	☐	☐	41	☐	☐	66	☐	☐	92	☐	☐
17	☐	☐	42	☐	☐	67	☐	☐	93	☐	☐
18	☐	☐	43	☐	☐	68	☐	☐	94	☐	☐
19	☐	☐	44	☐	☐	69	☐	☐	95	☐	☐
20	☐	☐	45	☐	☐	70	☐	☐	96	☐	☐
21	☐	☐	46	☐	☐	71	☐	☐	97	☐	☐
22	☐	☐	47	☐	☐	72	☐	☐	98	☐	☐
23	☐	☐	48	☐	☐	73	☐	☐	99	☐	☐
24	☐	☐	49	☐	☐	74	☐	☐	100	☐	☐
25	☐	☐	50	☐	☐	75	☐	☐	101	☐	☐
						76	☐	☐	102	☐	☐

Check •

© All rights reserved. Reproduction in any form is a violation of Copyright Act. Answer Sheet of Adjustment Inventory for College Students (AICS–SS) (Eng./Hindi) NPC RP15

Scanned by CamScanner

विशेषज्ञों की

सूची

विशेषज्ञों की सूची

1. प्रो. आर.पी. सनाढ्य, प्राचार्य, अरिहन्त महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर।
2. प्रो. शशि चितौडा, प्राचार्या एवं डीन, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक, उदयपुर।
3. प्रो. विजयलक्ष्मी चौहान, पूर्व विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
4. प्रो एम.पी. शर्मा, पूर्व प्राचार्य, विद्याभवन जी.एस. शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय, उदयपुर।
5. प्रो. एम. पारीक, पूर्व विभागाध्यक्ष, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
6. प्रो. अनिल कुमार जैन, विभागाध्यक्ष, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा।
7. डॉ. ए.के. पालीवाल, सहायक आचार्य, राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, खैरवाडा, उदयपुर।
8. डॉ. सुषमा सिंह, प्राचार्या, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा।
9. डॉ. श्रीकान्त भारतीय, एसोसिएट प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा।
10. डॉ. मूलचन्द मीणा, सहायक आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक, उदयपुर।
11. डॉ. महावीर प्रसाद गुप्ता, पूर्व प्राचार्य, प्रशान्ति महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा।
12. डॉ. ज्योति सिडाना, सहायक आचार्य, मनोविज्ञान विभाग, जे.डी.बी.कन्या महाविद्यालय, कोटा।
13. डॉ. बी.एस. गौतम सहायक आचार्य, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा।